छन्द रत्नावली

लेखक—

प्रो० राजाराम शास्त्री

तथा

रामसरूप शास्त्री, बी० ए०, प्रभाकर

(प्रोफ़ेसर, डी० ए० वी० कालिज, लाहौर)

प्रथम संस्करण — सितम्बर १९३७ — मूल्य— १।।) अजिल्द, १।।।) सजिल्द

प्रकाशक-
पं० राजाराम
मालिक-बाम्बे मैशीन प्रेस
लाहौर ।

मुद्रक-
श्रीकृष्ण दीक्षित
बाम्बे मशीन प्रेस,
मोहनलाल रोड, लाहौर

विषय-सूची

छन्द-रत्नावली

भूमिका

छन्द-शास्त्र

जिस वाक्यरचना में अक्षरों वा मात्राओं की संख्या और गति-यति का नियम हो, उसे छन्द कहते हैं, और जिस ग्रन्थ में छन्दों की शिक्षा दी हो, उसे छन्दशास्त्र वा छन्दःशास्त्र *कहते हैं।

गद्य और पद्य

बिना छन्द की वाक्यरचना को गद्य और छन्दोबद्ध वाक्य-रचना को पद्य कहते हैं।

गद्य और पद्य में ये भेद हैं। (१) गद्य में इच्छा के अनुसार शब्द न्यूनाधिक लिखे जाते हैं, पर पद्य में उस छन्द के नियत अक्षरों वा मात्राओं के अन्दर ही अपना वक्तव्य पूरा

---

*संस्कृत छन्दः शब्द हिन्दी में छन्द बोला जाता है। सो हिन्दी छन्दशास्त्र अपने शुद्ध संस्कृत रूप में छन्दःशास्त्र वा छन्दश्शास्त्र बोला जाता है। छन्दोबद्ध छन्दोज्ञान, छन्दो-भङ्ग इत्यादि शब्द भी शुद्ध संस्कृत हैं।

करना होता है। (२) गद्य में कर्ता आदि अपने नियत क्रम में रक्खे जाते हैं; पद्य में यह नियम नहीं होता। (३) गद्य में प्रचलित शब्द अपने अविकृत रूप में बोले जाते हैं; पद्य में कभी कभी विकृत रूप में भी बोले जाते हैं, जैसे दुःख को दूख।

छन्द की विशेषताएँ

बिना छन्द की रचना से छन्दोबद्ध रचना में ये विशेषताएँ होती हैं। (१) छन्द का हर एक चरण अपने तोल में पूरा उतरता है। इससे छन्द पढ़ने में सुहावने प्रतीत होते हैं और सुस्वर गाए जाते हैं, अतएव बड़े प्यारे लगते हैं और जब राग रागनियों में गाए जाते हैं तब तो चित्त को मोह ही लेते हैं। (२) वाणी के तीन रूप हैं— गद्य, पद्य, और गीति। वाणी का जो प्रभाव गद्य में है, पद्य में उससे कई गुना अधिक होता है और गीति में तो उससे भी कई गुना अधिक हो जाता है। सो गीति वाणी के प्रभाव की पराकाष्ठा है। इस गीति का आधार भी छन्द ही होते हैं; अतएव छन्द ही वाणी में ऊँचे से ऊँचा प्रभाव ले आते हैं। (३) छन्द रुचिकर होते हैं, उनमें जी लगता है, अतएव जल्दी कण्ठस्थ होते हैं, उचित अवसर पर उन्हीं अक्षरों में दुहराए जाते हैं और कण्ठस्थ बने रहते हैं।

छन्दों की सर्वप्रियता

छन्दों में ऐसी मोहनी शक्ति है कि हर एक व्यक्ति उनसे प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार करता है। छन्द कविजनों के बहुत प्यारे हैं, यह तो जगत्प्रसिद्ध है। पर क्या कोई ऐसा

व्यक्ति भी है, जिसको ये प्यारे न लगते हों ?

देखो, एक ओर वह ब्रह्मज्ञानी अपने ब्रह्मानुभव को छन्दों में गाता हुआ मस्त हो होकर झूम रहा है। दूसरी ओर वह भक्त प्रभु-भक्ति के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी ओर एक धर्म शास्त्री धर्म की व्यवस्थाओं को और नीतिशास्त्री नीति के नियमों को प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचना कर रहा है।

शास्त्रियों की बात भी रहने दो। वह देखो, गड़रिये अपनी भेड़-बकरियों के पीछे और ग्वाले अपनी गौओं के पीछे मीठे मीठे छन्द (सद्द) रचते और गाते फिरते हैं। मेलों में अपढ़ गँवार भी अपने प्यारे छन्द रच लाते और अपने ग्रामीण बाजों के साथ पूरे जोश से गाते फिरते हैं। खेलों में लड़के-लड़कियाँ उस उस खेल के नियत छन्द बोलते हैं। स्त्रियाँ चरखा कातती हुई छन्द गाती हैं। चक्की पीसती हुई छन्द गाती हैं। विवाह में सुहाग और घोड़ियाँ छन्दों में गाती हैं। वर के लिए सेहरे छन्दों में रचे जाते हैं और वर से छन्दनियों पर छन्द बुलवाए जाते हैं। कहाँ तक कहें, विरह की पीड़ा छन्दों में, मिलन का हर्ष छन्दों में, मृत्यु का शोक छन्दों में, विलाप छन्दों में और वैन छन्दों में गाए जाते हैं। छन्द उत्सवों में हर्ष के बढ़ाने वाले और शोक में अन्दर का उबाल निकाल कर दुःख के घटाने और मिटाने वाले होते हैं। इसी लिए सारी अवस्थाओं में सब को प्रिय लगते हैं।

छन्दों का इतिहास

हमारे जातीय साहित्य का आदिग्रन्थ ऋग्वेद सारा छन्दों में है। छन्दों के लिए छन्दः (छन्द) नाम भी सब से पहले ऋग्वेद में आया है, जो पीछे संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी के सारे साहित्यमें समादृत हुआ है, और लोक में भी प्रसिद्ध है। वेदों में छन्दों के विशेष नाम (गायत्री आदि) भी आए हैं। वेदानुक्रमणियों में वैदिक छन्दों के भेद दिखलाए हैं और छन्दोज्ञान के बिना वेदपाठ में दोष दिखलाया है। अतएव छन्दःशास्त्र वेद के छः अङ्गों में एक अङ्ग है। पीछे, संस्कृत के कवियों ने वैदिक छन्दों में और उनसे अतिरिक्त नए नए छन्दों में भी अपनी रचनाएँ कीं। उन सब की शिक्षा के लिए क्रमबद्ध छन्दःशास्त्र रचे गए। संस्कृत में छन्दोरचना की शिक्षा का सब से पुराना ग्रन्थ, जो इस समय मिलता है, पिंगलाचार्य का रचा पिंगल छन्दःशास्त्र है। इसमें वैदिक और लौकिक छन्दों के लक्षण और भेद बतलाए हैं। इस ग्रन्थ को रच कर पिंगलाचार्य ने इतना नाम पाया है कि पिंगल शब्द छन्दशास्त्र का पर्याय बन गया है। पिंगल कहो, छन्दशास्त्र कहो, एक ही बात समझी जाती है। संस्कृत में छन्दों की शिक्षा के लिए केदार भट्ट का वृत्तरत्नाकर भी इस विषय का एक पूर्ण ग्रन्थ है। इस में सभी प्रचलित छन्दों के लक्षण और लक्ष्य दिखलाए हैं, और छन्दों के प्रस्तार भी बतलाए हैं। इसमें एक और विशेषता यह रक्खी है कि जिस छन्द का जो लक्षण किया है, वही उसका लक्ष्य भी है। संस्कृत में

इस विषय के और दो ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं, गङ्गादास की छंदोमञ्जरी और कालिदास का श्रुतबोध।

हिन्दी में भी छन्दोग्रन्थ बहुत से रचे गए हैं; जैसे महाकवि मतिराम का छन्दसार पिंगल, कविराज सुखदेव मिश्र का वृत्तविचार, बलवीर का पिंगल मनहरण, कुँवर गोपाल सिंह का पिंगल प्रकाश, रसपुञ्जदास का वृत्तविनोद, भिखारीदास का छन्दार्णव और छन्दप्रकाश, गोपालभट्ट का पिंगलप्रकरण, व्रजलाल भट्ट का छन्दरत्नाकर, पद्माकर भट्ट की छन्दमञ्जरी इत्यादि, पर इन का अब प्रचार नहीं रहा। आज कल श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' के छन्द प्रभाकर, श्री अवध उपाध्याय के नवीन पिंगल, श्री पुत्तनलाल के सरल पिंगल, और पं० रामनरेश त्रिपाठीकी हिन्दी पद्यरचना का प्रचार है। नए ढंग पर लिखे हुए ये सब ग्रन्थ परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

ये प्रयत्न अभी जारी हैं और योग्य विद्वानों के नए प्रयत्न उपयोगिता तथा सरलता की दृष्टि से उत्तरोत्तर अधिक सफल हो रहे हैं।

छन्दों की इयत्ता

छन्द इतने ही हैं, इससे अधिक नहीं, यह इयत्ता न कभी हुई, न होगी। वेदों में जितने छन्द हैं, उन सबसे निराले बहुत से नये छन्द संस्कृत काव्यनाटकों में पाए जाते हैं। वेदों में अक्षरछन्द वा वर्णवृत्त ही हैं, मात्रा-छन्द कोई नहीं। लौकिक संस्कृत में मात्रा-छन्द भी हैं। हिन्दी में कई छन्द उसके अपने हैं, कई संस्कृत से।

आए हैं, कई उर्दू से। अब नए छन्द न बनें, ऐसी कोई रोक नहीं। अक्षरों वा मात्राओं का जो भी तोल बोलने-गाने में शोभा पाएगा, वही एक छन्द बन जायगा। हाँ, संस्कृत और हिन्दी में छन्दों के जो प्रस्तार दिये हैं उनसे एक एक छन्द के इतने भेद बन जाते हैं, कि दूसरी भाषाओं के तथा सर्वथा नये छन्द भी उसके किसी एक प्रकार में आ ही जाते हैं। जैसाकि ग़ालिब का यह उर्दू पद्य—

रहिए अब ऐसी जगह, चलकर जहाँ कोई न हो।
हमसुख़न कोई न हो, और हम ज़बाँ कोई न हो।
बे दरोदीवार सा, इक घर बनाना चाहिए।
कोई हमसाया न हो, औ पासवाँ कोई न हो।
पड़िए गर बीमार तो, कोई न हो तीमारदार।
और गर मर जाइए, तो नोहख़ाँ कोई न हो।

यह २६ मात्राओंका छन्द है। १२,१४ पर यति है। पहली पंक्ति में 'रहिए' और पाँचवीं में 'पड़िए' का ए ह्रस्व बोला जाता है। सो यह २६ मात्राओं के गीतिका छन्द का एक भेद बन जाता है। पर सत्य बात तो यह है, कि एक ही गिनती के अक्षरों में गुरु लघु के स्थान-भेद और गति-यति-भेद से भिन्न भिन्न छन्द बन जाते हैं। जैसे १७ अक्षरों के छन्द की ६, ११ पर यति हो और गुरु लघु का नियम* 'य म न स

* (पा० टि०) म न भ य ज र स त, ग ल—ये अक्षर गणों और गुरु लघु के वाचक हैं। देखो प्रथम अध्याय का गण-विचार प्रकरण।

भ ल ग' के रूप में हो तो शिखरिणी होता है। जैसे—

अनूठी आभा से, सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, बहु गुणमयी भू विपिन की॥
निराले फूलों की, विविध दलवाली अनुपमा।
जड़ी बूटी नाना, बहु फलवती थीं विलसती॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

और १७ ही अक्षरों के छन्द की ४, ६ और ७ पर यति हो और गुरुलघु का नियम म भ न त त ग ग के रूप में हो तो मन्दाक्रान्ता होता है। जैसे--

तारे डूबे, तम टल गया, लालिमा व्योम छाई।
पंछी बोले, नभचर जगे, ज्योति फैली दिशा में॥
शाखा डोली, सकल तरु की, वारि अम्भोज फूले।
धीरे धीरे, दिनकर कढ़े, तामसी रात बीती॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

इसलिए समानाक्षर छन्दों में भी जब गति-यति एक दूसरे से विलक्षण हों तो उस विलक्षणता का भेद दिखलाने के लिए नामभेद होना उचित है और गति-यति मिलती जुलती हों तो वहाँ समानाक्षर छन्दों में एक छन्द के अनेक भेद मानने चाहियें।

छन्दशास्त्र के इस ग्रन्थ का नाम छन्दरत्नावली है। इसमें

छन्दरत्नावली छन्दज्ञान में काम आने वाली संज्ञा-परिभाषा सरल सुबोध भाषा में पहले लिखदी है। पीछे, छन्दों के वर्णन में पहले मात्रिकछन्द, फिर अक्षर-छन्द वा वर्णवृत्त दिए हैं। मात्रिक-छन्दों में यह क्रम रक्खा है—पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम, पीछे मात्रिकदण्डक दिये हैं। इसी प्रकार वर्णवृत्तों में भी पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम औरतदनन्तर वर्णदण्डक दिये हैं।

इस क्रम से मात्रिकछन्दों और वर्णवृत्तों का पूरा वर्णन करके पीछे उभयछन्द दिये हैं। इनमें मात्राएँ तो अपनी गिनती में और वर्ण अपनी गिनती में पूरे उतरते हैं। तदनन्तर मुक्त वा स्वच्छन्द छन्द दिये हैं। इनमें मात्राओं वा अक्षरों का कोई बन्धन नहीं, तथापि लय में पूरे उतरने से ये वैसे ही सुहावने होते हैं। इस क्रम में छात्र-छात्राओं को कहीं झमेला नहीं पड़ता। सारा विषय सरलता से समझ में आजाता है। लक्षण सरल गद्य में दिये हैं, जो अपने आप समझ में आजाते हैं। उदाहरण भी ढूँढ़ ढूँढ़ कर सरल सुबोध और सरस दिये हैं, जो झट समझ में आजाएँ, प्यारे लगें और कण्ठस्थ हो जाएँ। छन्दों में यह चुनाव किया गया है, कि प्रसिद्ध छन्द सभी आ जायँ। साथ ही अभ्यास भी दे दिये हैं, जिससे कि छात्र-छात्राएं इन छन्दों की पहचान में पूरे व्युत्पन्न हो जाएँ। विद्यार्थियों के लिए जो कुछ भी उपयोगी है, वह सब कुछ

दे देने का यत्न किया है। अप्रचलित वा अल्पप्रचलित छन्द छोड़ दिये हैं ताकि विद्यार्थी अनावश्यक झमेले में न पड़ें। हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थ को सम्यक् समझ कर विद्यार्थी छन्द विषय के न केवल गूढ़ ग्रन्थों को ही, वरन् नए छन्दों को भी भली भाँति जान जायँगे !

छन्द-रत्नावली

प्रथम अध्याय

छन्द-रचना

(१) सामान्य-ज्ञान—छन्दों के पहचानने, सुस्वर बोलने, गाने और रचने के लिए पहले इन सामान्य विषयों का जानना आवश्यक है—अक्षर वा वर्ण, गुरु-लघु, गण, मात्रा, गति, यति, चरण, और तुक ।

अक्षर

(२) ध्वनियाँ (Sounds)—भाषाएँ ध्वनियों से बनती हैं। ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक जो अकेली बोली जा सकती हैं, उन को स्वर कहते हैं। जैसे 'आ, ओ' दो ध्वनियाँ हैं। दोनों किसी दूसरी ध्वनि का सहारा लिये बिना अकेली अकेली बोली गईं—आ, ओ। दूसरी वे ध्वनियाँ होती हैं जो स्वरों के साथ बोली जाती हैं, अकेली नहीं, उनको व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे ‘जागो’ ये चार ध्वनियाँ हैं—‘ज् आ ग् ओ’ इन में से ज् आ के साथ और ग् ओ के साथ बोला गया है। यदि आ ओ को छोड़ कर बोलें, तो उच्चारण होगा ज ग। ये फिर चार ध्वनियाँ हो गईं—ज् अ ग् अ। अ बलात् अन्त में बोला गया। क्योंकि व्यञ्जन का अपना निज रूप इतना छोटा होता है कि वह एक पूरा उच्चारण नहीं बनाता। पर हर एक स्वर एक पूरा उच्चारण होता है।

३—अक्षर एक पूरा उच्चारण होता है। स्वर अकेला भी और अपने साथ बोले जाने वाले व्यञ्जन वा व्यञ्जनों समेत भी एक अक्षर होता है। आओ, जाओ, जागो, त्यागो, चारों पद दो दो बार के उच्चारण हैं—आ ओ, जा ओ, जा गो, त्या गो। सो चारों पद दो दो अक्षर के हैं। पर ध्वनियाँ क्रमशः पहले में दो आ ओ, दूसरे में तीन—ज् आ ओ, तीसरे में चार ज् आ ग् ओ, चौथे में पाँच—त् य् आ ग् ओ। सारांश यह कि हिन्दी में स्वर ११ हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ। ये ११ अक्षर हैं। जैसे अब, आज, इस, ईश, उस, ऊन, ऋषि, एक, ऐसा, ओस, और, इन सब में आदि स्वर एक अलग अक्षर है और स्वर से पूर्व एक वा अनेक व्यञ्जन हों तो भी उन समेत वे एक एक ही अक्षर होते हैं। जैसे ‘क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को कौ’ ये भी एक एक अक्षर हैं। ‘मुक्त, मुक्ति, लक्ष्मी’ इन में क्त, क्ति, क्ष्मी भी एक एक अक्षर है। अन्त में यदि व्यञ्जन हो तो वह अलग नहीं गिना जाता अपितु पूर्व

स्वर का अङ्ग ही हो जाता है। सो 'ओम्' एक अक्षर है।

(२) गुरु लघु

४—गुरु बड़ा वा भारी, लघु छोटा वा हलका। (क) ह्रस्व (छोटे) अक्षर लघु होते हैं। सो अब, इस, उस, ऋषि में आदि के अ, इ, उ, ऋ और कब, किस, कुल, कृति में आदि के क, कि, कु, कृ तथा क्रम, क्रिमि, श्रुति, स्मृति में आदि के क्र, क्रि, श्रु, स्मृ लघु हैं। (ख) दीर्घ अक्षर सब गुरु होते हैं। सो 'आज, ईश, ऊन, एक, ऐश्वर्य, ओस, और' में आदि के आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; तथा काम, कीर, कूल, केश, कैसा, कोस, कौरव में आदि के का, की, कू, के, कै, को, कौ और ग्लास, श्रीश, क्रूर, क्लेश, श्लोक, में आदि के ग्ला, श्री, क्रू, क्ले, श्लो गुरु हैं।

५—अपवाद (क) ह्रस्व लघु कहा है, पर जिस ह्रस्व के परे संयोग, अनुस्वार * वा विसर्ग हो वह गुरु होता है। जैसे 'कुत्ता, कंस दुःख' में 'कु, कं, दुः' गुरु हैं। क्योंकि संयोग से पूर्व ह्रस्व पर ज़ोर पड़ता है इसलिए वह गुरु हो जाता है और कं कः तो बोलने में स्पष्ट गुरु प्रतीत होते ही हैं। (ख) पाद के अन्त का लघु भी, आवश्यकता हो तो, गुरु पढ़ा और गिना जाता है। जैसे—लीला तुम्हारी अति हि विचित्र।

(भानु कवि)

---

* अनुस्वार वाले लघु गुरु माने जाते हैं, पर चन्द्रबिन्दु वाले नहीं। जैसे—

यह इन्द्रवज्रा वृत्त का एक चरण है। इसके अन्त में दो गुरु होने चाहियें। यहाँ अन्तिम दो अक्षरों में चि से परे त्र संयोग है, इस लिए चि गुरु है पर त्र लघु है। इस पादान्त लघु को गुरु माना और पढ़ा जायगा क्योंकि यहाँ गुरु वर्ण आवश्यक है।

(ग) संयोग से पूर्व के ह्रस्व पर यदि ज़ोर न पड़े तो वह लघु ही माना जाता है। जैसे—

'लीला तुम्हारी अति ही विचित्र'।

यहाँ तुम्हारी को तु संयोग से पूर्व होने पर भी लघु माना गया, क्योंकि यहाँ तुम्हारी 'तुमारी' सा पढ़ा जाता है, और तु पर जोर नहीं पड़ता। स्मरण रहे कि न्ह, म्ह से पूर्व लघु प्रायः हल्का पढ़ा जाता है।

सादर कहहिँ सुनहिँ बुध ताहीं।

यह चौपाई का एक चरण है। इसकी मात्राएँ १६ होनी चाहियें। अब यदि हिं, हिं को गुरु मानें, तो मात्राएँ १८ हो जाती हैं। अनुस्वार एक अलग ध्वनि है जो स्वर के उच्चारण के पीछे नासिका में उत्पन्न होती है, पर चन्द्र बिन्दु कोई ध्वनि (वर्ण) नहीं। किन्तु स्वर दो प्रकार से बोले जाते हैं एक अकेले मुख से, दूसरे नासिका की सहायता से। इन दूसरों को अनुनासिक कहते हैं और चन्द्रबिन्दु इस बात का चिह्न होता है कि यह स्वर अनुनासिक (नाक की सहायता से) बोला गया है।

गुरु-लघु-चिह्न

६—गुरु का चिह्न लहरदार रेखा 'ऽ' और लघु का चिह्न खड़ी डंडी '।' होता है। जैसे ऽ। का अर्थ है पहला गुरु, दूसरा लघु। इस के उदाहरण होंगे--राम, विष्णु, कंस, दुःख इत्यादि। लक्षणों में गुरु के लिए 'ग' और लघु के लिए 'ल' बोला जाता है।

(५) मात्रा

७—छन्दों में लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्राएँ मानी जाती हैं। उदाहरण—'हर' दो लघु=दो मात्राएँ। 'हीर' पहला गुरु दूसरा लघु=तीन मात्राएँ। 'हीरा' दोनों गुरु=चार मात्राएँ। 'हीरादेवी' चार गुरु=आठ मात्राएँ। मात्रिक छन्दों में इसी प्रकार गुरु की दो और लघु की एक मात्रा गिन कर मात्राओं की गिनती पूरी की जाती है। जैसे—

।। ।।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ।
'तुम अमल अनन्त अनादि देव' में १६ मात्राएँ हुईं।

(3) गण

८—अक्षर-छन्दों में गुरु लघु के स्थान नियत होते हैं। अब यदि एक एक अक्षर करके गुरु लघु के स्थान बतलाएँ, तो लक्षण कण्ठस्थ नहीं रह सकेंगे। झट भूल जाया करेंगे। इस का उपाय छन्दशास्त्रियों ने यह सोचा है कि तीन तीन अक्षरों का एक एक गण मान लिया है। अब ये तीनों अक्षर तीन

गुरु भी हो सकते हैं, तीन लघु भी हो सकते है, एक गुरु दो लघु भी हो सकते हैं, इत्यादि भेद से उनके ये आठ भेद हो सकते हैं। १. सर्व गुरु ऽऽऽ २. सर्वलघु ।।। ३. आदि गुरु ऽ।। ४. आदि लघु ।ऽऽ ५. मध्य गुरु ।ऽ। ६. मध्यलघु ऽ।ऽ ७. अन्त गुरु ।।ऽ ८. अन्तलघु ऽऽ।। अब और कोई भेद नहीं हो सकता। ये गिनती में आठ गण और तुलना में चार जोड़े बने हैं। सर्व गुरु और सर्वलघु का पहला जोड़ा, आदि गुरु और आदि लघु का दूसरा, मध्य गुरु और मध्य लघु का तीसरा, और अन्त गुरु और अन्त लघु का चौथा। इसी क्रम से इन आठ गणों के एक एक अक्षर के आठ नाम और दो दो मिलाकर चार जौड़े नाम रक्खे हैं—

म	न	भ	य	ज	र	स	त
ऽऽऽ,	।।।,	ऽ।।,	।ऽऽ,	।ऽ।,	ऽ।ऽ,	।।ऽ,	ऽऽ।
मन		भय		जर		सत	

हर एक अक्षर के आगे 'गण' लगाने से मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण, तगण ये आठ गण बनें।

चार जोड़े (मन भय जर सत) और यह क्रम याद रखना चाहिए।

पहला जोड़ा	मन	सर्वगुरु	सर्वलघु
		ऽऽऽ	।।।
दूसरा जोड़ा	भय	आदिगुरु	आदिलघु
		ऽ।।	।ऽऽ

तीसरा जोड़ा	जर	मध्यगुरु ।ऽ।	मध्यलघु ऽ।ऽ
चौथा जोड़ा	सत	अन्तगुरु ।।ऽ	अन्तलघु ऽऽ।

अथवा यह दोहा * याद कर लेना चाहिए—

आदि मध्य अवसान में, य र त सदा लघु मान।
क्रम से होते भ ज स गुरु, म न गुरु लघु त्रय जान॥

अथवा इस सूत्र को याद रखना चाहिये—

यमाताराजभानसलगं

इस में पहले आठ अक्षर गणों के हैं। अन्तिम दो (ल गं) लघु गुरु के हैं। सब के लक्षण भी इसी में घट जाएं, इस के लिए मा ता रा भा दीर्घ और गं सानुस्वार पढ़ा है। जिस गण का रूप जानना हो, उस के प्रतिनिधि अक्षर के आगे अगले दो अक्षर मिला देने से उस का रूप बन जाता है। जैसे यगण की पहचान के लिए य से अगले दो अक्षर मिलाये तो 'यमाता' हुआ। इस में आदि लघु और अन्त में दो गुरु हैं। यही यगण का रूप ।ऽऽ है। मगण की पहचान के लिए 'मातारा' लिया। ये तीनों गुरु हैं। यही मगण का लक्षण है। इस सूत्र के क्रम में आठवें सगण के लिए सलगं पढ़ा, तो आदि में दो लघु, अन्त में गुरु हुआ, यही सगण का लक्षण ।।ऽ है। अन्तिम दो अक्षरों में ल लघु, का गं

---

* यह दोहा इस श्लोक का अनुवाद है।

आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

गुरु का वाचक है।

सो छन्दों के लक्षणों में जिस छन्द के अक्षर तीन पर पूरे विभक्त हो जाते हैं—जैसे ३, ६, ९, १२ इत्यादि, उनके लिए उसके रूप के अनुसार गण-अक्षर बोले जाते हैं। यदि तीन पर विभक्त होकर एक अक्षर बचे, तो उसके रूपानुसार 'ग' वा 'ल' बोला जाता है। ग=गुरु, ल=लघु। यदि दो बचें, तो उनके रूपानुसार ग ग = ऽऽ, ल ल=।।, ग ल=ऽ।, ल ग=।ऽ बोले जाते हैं। सो लक्षणों में, 'मन भय जर सत गल,' ये दस अक्षर बर्ते जाते हैं। जैसा कि इस दोहे में कहा है—

मयरस तजभन गल सहित, दश अक्षर इन सोहिँ।
सर्वशास्त्र व्यापित लखौ, विश्व विष्णु सों ज्योंहिँ॥
(भानु कवि)

साम्प्रदायिक मर्यादाएं

९—छन्दःशास्त्रियों ने गणों के अलग अलग फल माने हैं। जिनके फल शुभ हैं वे गण शुभ और जिनके फल अशुभ हैं वे अशुभ माने जाते हैं। अशुभों को छन्द के आदि में नहीं रखते॥

नीचे दो प्रमाण दिये जाते हैं। दो दोहे और एक गीतिका। दोनों में पहले गण का नाम, फिर उसका देवता, पीछे फल बतलाया है। दोहे वा गीतिका में से कोई एक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

(१) मगण भूमि लक्ष्मी य जल, पावे आयु विशेष।
र पावक ताफल जलन, सगण वायु परदेश॥

तगण व्योम है शून्य फल, जगण भानु रुज होय।
नगण स्वर्ग सुखप्रद, भ शशि, देत यशहिं है सोय॥

(२) मगण पृथ्वी तासफल श्री, यगण जल आयुप्रदं।
रगण पावक दाह ताफल, सगण वायु विदेशदं॥
तगण व्योम तु शून्य फल युत, जगण आदित रुजफलं।
नगण स्वर्ग सदा सुखप्रद, भ शशि देवे यश फलं॥

गणों के देवता, फल और शुभा-शुभ का स्पष्टीकरण निम्न सारिणी से जानो।

गण	रूप	उदाहरण	देवता	फल	शुभ-अशुभ
१ मगण	ऽऽऽ	कौशल्या	पृथ्वी	लक्ष्मी	शुभ
२ नगण	।।।	भरत	स्वर्ग	सुख	"
३ भगण	ऽ।।	लक्ष्मण	चन्द्र	यश	"
४ यगण	।ऽऽ	सुमित्रा	जल	आयु	"
५ जगण	।ऽ।	महेश	सूर्य	रोग	अशुभ
६ रगण	ऽ।ऽ	निर्मला	अग्नि	दाह	"
७ सगण	।।ऽ	विमला	वायु	विदेश	"
८ तगण	ऽऽ।	आकाश	आकाश	शून्य	"

शुभाशुभ अक्षर

१०—स्वर सभी शुभ माने जाते हैं।

व्यञ्जनों में ये १४ शुभ हैं—

क ख ग घ। च छ ज। ड। द ध न। य। श स।

और ये १९ अशुभ हैं—

ङ। झ ञ। ट ठ ढ ण। त थ। प फ ब भ म। र ल

व। ष ह।

अशुभ अक्षरों में भी झ भ र ष ह, इन पांच अक्षरों को अधिक हानिकर माना है। अशुभ गणों और अशुभ अक्षरों को छन्द के आरम्भ में नहीं रखते। पर देवता वा मंगल-वाची शब्दों के प्रयोग में यह दोष नहीं रहता और अशुभ अक्षर दीर्घ हो, तो भी दुष्ट नहीं माना जाता। जैसे पहला अक्षर झ दूषित है, पर झा दूषित नहीं होता। यदि किसी वर्ण-वृत्त में लक्षण के अनुसार आदि में अशुभ गण आता ही हो तो वह दुष्ट नहीं माना जाता।

मात्रिकगण

११—प्राचीन छन्द-लक्षणों में मात्रिकछन्दों के पांच गण 'ट ठ ड ढ ण' मान कर लक्षणों में उनको बर्ता है। ६ मात्राओं के लिए ट, पांच के लिए ठ, चार के लिए ड, तीन के लिए ढ, दो के लिए ण, पर आज कल ये नहीं बर्ते जाते। मात्राओं की गिनती ही कह दी जाती है।

(५,६) गति-यति

१२—(क) हर एक छन्द की एक चाल होती है; उसे गति कहते हैं। जैसे चौबोला के एक चरण में १५ मात्राएं होती हैं और अन्त में लघु गुरु होते हैं। सो यदि हम यह पाठ पढ़ें—

सदा उन्नति की गैल गहो।
समाज में नेता बन रहो॥

तो यह चौबोला छन्द नहीं कहलाएगा। इसी को जब

ऐसा पढ़ें—

गैल सदा उन्नति की गहो।
नेता बन समाज में रहो॥

तो इस में चौबोला की गति आ जाती है। गति को कान पहचानते हैं और यह पहचान अभ्यासवश होती है।

(ख) यति विराम अथवा ठहराव को कहते हैं। पाद के अन्त में तो सभी छन्दों के यति होती है, पर बड़े छन्दों में एक ही पाद में दो वा तीन यतियां होती हैं। यति के अनुसार विराम करके बोलने से छन्द अधिक सुहावने बन जाते हैं। देखो शिखरिणी और मन्दाक्रान्ता के उदाहरण (पृष्ठ ७)।

चरण

१३—(क) छन्द की एक पूरी चाल को चरण, पाद वा पद कहते हैं। चरण प्रायः चार होते हैं। जैसे—

(१) ७ मात्राओं का सुगति छन्द।

शिव शिव कहो, यदि सुख चहो।
जो सुमति है तो सुगति है॥
'भानु कवि'

(२) २६ मात्राओं का गीतिका छन्द।

धर्म के मग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बोधवर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं॥
'नाथूराम शंकर'।

'प्रायः' कहने का अभिप्राय यह है कि चार चरणों का नियम सार्वत्रिक नहीं। कुंडलिया छन्द छः चरण का होता है। लोकोक्तियां कई एक एक चरण की प्रसिद्ध हैं।

(ख) दोहा, सोरठा आदि जो छन्द दो दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं उन की हर एक पंक्ति को दल कहते हैं।

(८) अन्त्यानुप्रास वा तुक

१४—पादान्त के अक्षरों के मेल को तुक कहते हैं। तुक के बिना भी छन्द प्यारे लगते हैं। बाल्मीकि, कालिदास आदि संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों ने तुक का मिलान नहीं किया तो भो उन के छन्द बड़े सरस हैं। कारण यह कि एक तो वे छन्द की गति-यति को पूरे तोल में लाते हैं, दूसरे उनकी कविताएँ रसपूर्ण होतो हैं। पर यह भी भूलना नहीं चाहिये कि तुक के मेल में रस बढ़ ही जाता है। संस्कृत के कवियों ने जहां जहां अन्त्यानुप्रास (तुक) बर्ता है, वहां माधुर्य बढ़ ही गया है। गीत में तो तुक बहुत जरूरी मानी गई है। संस्कृत में चर्पटमञ्जरी और गीतगोविन्द ये दो प्रसिद्ध गीत-ग्रन्थ हैं। इन में तुक पर सर्वत्र पूरा ध्यान दिया है। हिन्दी कविता में आरम्भ ही से तुक के मिलान पर पूरा ध्यान रक्खा है, अतएव हिन्दी में बिन तुक के छन्द नाम मात्र हैं, पर हैं सही। सो एक भेद तो बिन तुक के छन्दों का हुआ, दूसरा तुक वालों का। तुक वालों के फिर पाँच भेद हैं। (१) चारों चरणों में तुक का मेल (२) पहले दूसरे, तीसरे चौथे और यदि छः चरण हों तो पांचवें छठे चरणों की तुकों का मेल (३) सम चर

(२, ४, ६) की तुकों का मेल (४) विषम चरणों की तुक का मेल (५) दो दलों की तुक का मेल। इन सब के उदाहरण क्रमशः नीचे दिए जाते हैं।

(क) निम्नलिखित दोनों तुक-हीन पद्य क्रमशः द्रुतविलंबित और मन्दाक्रान्ता वृत्तों में हैं।

(१) किस तपोबल से किस काल में।
सच बता मुरली कलनादिनी॥
अवनि में तुझ को इतनी मिली।
मधुरता, मृदुता, मनहारिता॥

(२) आके कागा, यदि सदन में, बैठ जाता कहीं भी।
तो तन्वंगी, उस सदन की, यों उसे थी सुनाती॥
जो आते हों, कुँवर उड़के, काक तो बैठ जा तू।
मैं खाने को, प्रतिदिन तुझे, दूध औ भात दूंगी॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(ख) चारों चरणों में समान तुक वाले।

दिक्पाल छंद

पीछे क़दम जरा भी हक़ से न टालते हैं।
रण भूमि में खुशी से, निजरक्त डालते हैं॥
दीपक स्वतन्त्रता का, तब वीर बालते हैं।
तब वे कहीं अँधेरा घर से निकालते हैं॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

इस में 'आलते हैं' तुक है।

रोला छंद

ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदे सूनो ।
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिनु तरुवर सूनो ।
गज सूनो इक दन्त, और बन पुहुपबिहूनो ।
विप्र सून बिन वेद, ललित बिन शायर सूनो ।
इस में तुक 'ऊनो' है । (वैताल)

(ग) क्रमशः दो दो पादों की तुक ।

चौपाई

(१) शठ सुधरहिँ सत्संगति पाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
विधि वश सुजन कुसंगति परहिँ ।
फणिमणिसम निजगुण अनुसरहिँ ॥
(तुलसीदास)

(२) रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामे मां सोय ।
छाँह न वाको बैठिये, जो तरु पतरो होय ॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दैहै ।
जा दिन बहे बयारि, टूटि तब जर से जैहै ॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये ।
पत्ता सब झरि जाय, तऊ छाँहैं मां रहिये ।
(गिरिधर कविराय)

(घ) सम चरणों (२, ४, ६,) की तुक—

विधाता छंद

अनोखी बात है तेरे निराले प्रेम-बन्धन में।
उलझ कर भक्त उलझन में जगत को पार करते हैं॥
न होती आह तो मेरी दया का क्या पता होता।
उसी से दीन जन दिन रात हाहाकार करते हैं॥
हमें तू सींचने दे आंसुओं से पंथ जीवन का।
जगत के ताप का हम तो यही उपचार करते हैं।

(रामनरेश त्रिपाठी)

सोरठा

(ङ) विषम चरणों की तुक—

रहिमन, मोहिं न सुहाय, अमीं पियावत मान बिन।
बरु बिष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥

(रहीम)

(च) दो दलों की तुक का मेल—

दोहा

बनना चाहो वीर जो, करना गौरव-त्राण।
या कर धारो लेखनी, या विकराल कृपाण॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

चरणान्तों की तुकों के अतिरिक्त चरण के बीच की यतियों में भी कहीं कहीं तुक पाई जाती है। जैसे—

चवपैया

माता, पुनि बोली, मो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।

कीजै शिशुलीला, अतिप्रियशीला, यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, हुइ बालक सुररूपा।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा ॥
(तुलसीदास)

छन्दों के भेद

छन्दों के चार मुख्य भेद हैं—मात्रिक, अक्षर, उभय और मुक्त वा स्वच्छन्द।

(क) मात्रिक छन्दों में मात्राओं का तोल होता है। इसके अवान्तर भेद तीन हैं—सम, अर्धसम और विषम। जिनके चारों चरणों में एक ही लक्षण घटे, वे सम, जिनके पहले चरण का लक्षण तीसरे के साथ और दूसरे का चौथे के साथ मिले, वे अर्धसम और इन दोनों से भिन्न विषम कहलाते हैं। मात्रिक का दूसरा नाम जाति है।

(ख) अक्षर-छन्दों में अक्षरों का तोल होता है। इनके भी मात्रिकवत् तीन अवान्तर भेद होते हैं—सम, अर्धसम और विषम। अत्तर-छन्दों का दूसरा नाम वर्णवृत्त है। मात्रिक छन्द और वर्णवृत्त इन विभिन्न शब्दों के प्रयोग से दोनों में भेद अधिक स्पष्ट रहता है इसलिए अत्तर-छन्द के स्थान पर प्रायः वर्णवृत्त प्रयुक्त होता है।

मात्रिक सम और वर्ण-सम छन्दों के दो दो अवान्तर भेद हैं—साधारण और दण्डक। मात्रिक छन्दों में ३२ मात्राओं तक साधारण, उसके आगे दण्डक, और वर्णवृत्तों में २६ वर्णों तक साधारण, और उसके आगे दण्डक कहे जाते हैं।

(ग) उभय छन्दों में मात्रा-नियम और वर्ण-संख्या दोनों का ध्यान रखा जाता है।

(घ) स्वच्छन्द छन्दों में दृष्टि केवल लय पर रहती है; और कोई बन्धन नहीं होता।

नीचे के छन्दो-वृत्त में इन भेदों का स्पष्टी करण है।
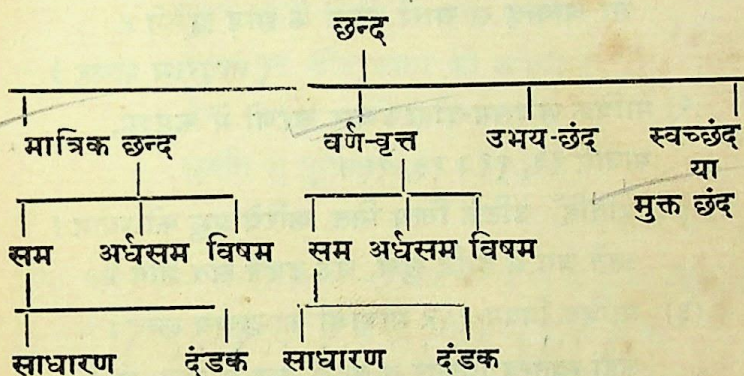
मात्रिक छन्द आरम्भ तो एक ही मात्रा से हो जाते हैं। जैसे— एकमात्रिक-क, ख। ग, घ। द्विमात्रिक-अब, तब। जब, कब। अथवा-आ, खा। जा, ला। इसी प्रकार वर्णवृत्त भी एक वर्ण से आरम्भ होते हैं। पर ऐसे छन्द लाड-प्यार के हैं। इन में कोई वक्तव्य पूरा नहीं होता। वक्तव्य कहने के लिए मात्रिक छन्द छः मात्राओं से और वर्णवृत्त प्रायः छः वर्णों से आरम्भ होते हैं। छः मात्राओं वाले बगहंस का उदाहरण—राग द्वेष। उभय क्लेश। बन विनीत। जगतजीत॥ और छः वर्णों का तिलका— इस जीवन में, पहले पन में॥ जब संचय है। तव क्या भय है॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

अब छन्दों के प्रत्येक प्रकार के उदाहरण दिए जाते हैं।

(१) मात्रिक समछन्द—२८ मात्राओं का विधाता छन्द

भलाई को न भूलेंगे, सुशिक्षा को न छोड़ेंगे।
हठीले प्राण खो देंगे, प्रतिज्ञा को न तोड़ेंगे॥
बढ़ेंगे प्रेम के पौधे, दया के फूल फूलेंगे।
भरे आनन्द से चारों, फलों के झाड़ झूलेंगे॥

(नाथूराम शंकर)

(२) मात्रिक अर्धसम-दोहा। चार चरणों में क्रमशः, मात्राएं १३, ११। १३, ११।

प्रातहिँ उठिके नित्य नित, करिये प्रभु को ध्यान।
जाते जग में होहि सुख, अरु उपजै सत ज्ञान॥

(३) मात्रिक विषम-१५२ मात्राओं का छप्पय छन्द।

जहां स्वतन्त्र विचार न बदलें, मन में मुख में।
जहां न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में॥
सब को जहां समान निजोन्नति का अवसर हो।
शान्तिदायिनी निशा हर्षसूचक वासर हो॥
सब भांति सुशासित हों जहां, समता के सुखकर नियम।
बस, उसी स्वतन्त्र स्वदेश में, जागें हे जगदीश हम॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

(४) वर्ण समवृत्त-भुजंगी (य य य ल ग, वर्ण ११)

समुत्थान का ज्ञान ही मूल है।
इसे भूल जाना बड़ी भूल है॥
सुशिक्षा जहां है वहीं सिद्धि है।

जहां सिद्धि होगी वहीं वृद्धि है ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(५) वर्णार्धसम—पुष्पिताग्रा—(विषम चरण न न र य, सम चरण न ज ज र ग)

फिरि फिरि भ्रमि कै कहै नवेली ।
विधि यह कौन प्रकार की चमेली ॥
रँग धरति कनैल-पाँखुरी के ।
छुवति जु पुष्पित अग्ग आँगुरी के ॥

(भिखारी दास)

(६) वर्ण-विषम—सौरभक—(प्रथम चरण स ज स ल; द्वितीय न स ज ग; तृतीय र न भ ग; चतुर्थ स ज स ज ग)
सब त्यागिये असत काम । शरण गहिये सदा हरी ।
सर्व सूल भव जायँ टरी । भजिये अहो निशि हरी हरी हरी

(भानुकवि)

उभय-छन्द

(मात्रिक हरिगीतिका में वर्ण-संख्या समान)

कवि, काल, कालानल, कृपाकर, केतु, करुणा-कन्द है ।
सुखधाम, सत्य, सुपर्व, सच्छिव, सर्वप्रिय, स्वच्छन्द है ॥
भगवान भावुक भक्त वत्सल, भू , विभू , भुवनेश है ।
करतार, तारक है तुही यह वेद का उपदेश है ॥

(नाथूराम शङ्कर)

मुक्त-छन्द

भर देते हो—

बार-बार प्रिय, करुणा की किरणों से,
क्षुब्ध हृदय को पुलकित कर देते हो।
मेरे अन्तर में आते हो देव निरन्तर,
कर जाते हो व्यथा भार लघु,
बार-बार कर-कंज बढ़ा कर;
अन्धकार में मेरा रोदन
सिक्त धरा के अंचल को,
करता है क्षण क्षण—
कुसुम-कपोलों पर वे लोल शिशिर कण;
तुम किरणों से अश्रु पोंछ लेते हो,
नव प्रभात जीवन में भर देते हो॥

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

द्वितीय अध्याय

मात्रिक-सम-छन्द (साधारण)

जिन मात्रिक छन्दों के चारों चरणों में मात्रा-नियम समान हो, वे मात्रिक सम-छन्द होते हैं।

(१) तोमर

(क) मुख में मधुर उच्चार। कर में सदा उपकार॥
रखते हृदय में प्रीति। है सुजन की यह रीति॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

तोमर छन्द के प्रत्येक चरण में १२ मात्राएं होती हैं। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु, लघु होते हैं। जैसे—

(ख) बहु भाँति पूजि सुराय[1]। कर जोरि कै परि पाय॥
हँसि कै कह्यौ ऋषि-मित्र[2]। अब बैठु राज पवित्र॥

(ग) सुनु दान-मानस-हंस। रघुवंश के अवतंस॥
मन माँह जो अति नेहु। यक वस्तु माँगहि देहु॥

---

१. राजा दशरथ २. ऋषि विश्वामित्र।

(घ) मुनि ज्ञान-मानस- हंस। जप जोग जाग प्रशंस॥
जग-मांझ है दुख-जाल। सुख है कहाँ इहि काल॥
(ङ) तहँ राज है दुखमूल। सब पाप को अनुकूल॥
अब ताहि लै ऋषिराय। कहि कौन नरकहि जाय॥
(च) चहुँ भाग बाग तड़ाग। अब देखिये बड़ भाग॥
फल फूल सों संयुक्त। अलियों रमैं जन मुक्त॥
(छ) सुनि रामचंद्र कुमार। धनु आनिये यहि बार॥
पुनि वेगि ताहि चढ़ाव। यश लोक लोक बढ़ाव॥
(ज) सह भरत लक्ष्मण राम। चहुँ किये आनि प्रणाम॥
भृगुनन्द आशिष दीन। रण होहु अजय प्रवीन॥
(झ) सुनु राम शील-समुद्र। तव बन्धु है अति क्षुद्र॥
मम बाडवानल कोप। अब कियो चाहत लोप॥
(ञ) तुम क्यों चलो बन आजु। जिन शीश राजत राजु॥
जिय जानिये पतिदेव। करि सर्व भाँतिन सेव॥

(केशवदास)

२. उल्लाला[1] (अन्य नाम-चंद्रमणि)

उल्लाला छन्द के प्रत्येक पाद में १३ मात्राएं होती हैं।

---

१. उल्लाल नामक एक मात्रिक अर्धसम छन्द और भी है। नाम-साम्य के कारण छात्र प्रायः गड़बड़ में पड़ जाते हैं। इस के तो सब चरणों में १३, १३ मात्राएं होती हैं, परन्तु उस के विषम चरणों में १५, १५ और सम में १३, १३। इस में उस में यही अन्तर है।

पाद के अन्तिम वर्णों में गुरु-लघु का कोई विशेष नियम नहीं होता। हाँ, ११ वीं मात्रा अवश्य लघु होती है। जैसे—

(क) डरना होगा ईश से, और दुखी की हाय से।
भिड़ना होगा ठोंक कर, ख़म अनीति अन्याय से॥

(ख) पहली मंज़िल मौत है, प्रेम-पंथ है दूर का।
सुनता हूँ मत था यही, सूली पर मन्सूर का॥

(ग) मन-मिलिन्द मुनि-वृन्द के, मचल मचल इस[2] पर गये॥
प्राण गये तो इसी पर, न्योछावर हो कर गये॥

(घ) जीवन में बस प्रेम ही, जिस का प्राणाधार हो॥
सत्य गले का हार हो, इतना उस पर प्यार हो॥

(ङ) होना मत व्याकुल कहीं, इस भवजनित विषाद से॥
अपने आग्रह पर अटल, रहना बस प्रह्लाद से॥

(च) दुख में भी सुख शान्ति का, नव अनुभव हो जायगा॥
प्रेम-सलिल से द्वेष का, सारा मल धो जायगा॥

(पं० गया प्रसाद शुक्ल)

३. सखी

सखी छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएं होती हैं। हर एक चरण के अन्त में प्रायः मगण (ऽऽऽ) या यगण (।ऽऽ) का होना आवश्यक है। जैसे—

(क) आश्चर्य-भाव में भूले,
अनुराग-बाग के माली।

२—सत्य।

क्यों ध्यान-मग्न तुम बैठे,
भर कर फूलों से डाली ॥

(ख) सुन्दर फूलों की फुहियाँ,
झर-झर तुम पर झरती हैं।
नत-मस्तक वृक्ष खड़े हैं,
पत्तियाँ पवन करती हैं ॥

(गुलाबरत्न वाजपेयी)

(ग) क्यों छलक रहा दुख मेरा,
ऊषा की मृदु पलकों में ।
हाँ ! उलझ रहा सुख मेरा,
संध्या की घन अलकों में ॥

(घ) उच्छ्वास और आँसू में,
विश्राम थका सोता है ।
रोई आँखों में निद्रा,
बन कर सपना होता है ॥

(ङ) सन्ध्या की मिलन प्रतीक्षा,
कह चलती कुछ मनमानी ।
ऊषा की रक्त निराशा,
कर देती अन्त कहानी ॥

(च) फिर विश्व माँगता होवे,
ले नभ की खाली प्याली ।
तुम से कुछ मधु की बूँदें,

लौटा लेने को लाली ॥

(जयशङ्कर प्रसाद)

(छ) सब घर घर की व्रजनारी ।
दधि गोरस बेंचनहारी ॥
मिल जुत्थ सबै मत कीन्हा ।
जमुना-तट मारग लीन्हा ॥

(व्रजवासी दास)

४. हाकलि

हाकलि छंद के हर एक चरण में १४ मात्राएं होती हैं । न्तिम वर्ण गुरु होता है । इस के पादों में तीन चौकलों के अनन्तर एक गुरू आता है । जैसे—

(क) "पावन-कारक जीवन का,
मुझ को वास मिला वन का ।
जाता हूँ मैं अभी वहाँ,
राज्य करेंगे भरत यहाँ ।"

(ख) गोट जड़ाऊ घूँघट की
बिजली जलदोपम पट की,
परिधि बनी थी विधु-मुख की,
सीमा थी सुषमा सुख की ।

(ग) भाव-सुरभि का सदन अहा !
अमल कमल-सा वदन अहा !
अधर छबीले छदन अहा !

कुंद-कली-से रदन अहा !

(मैथिली शरण गुप्त)

जहां सब चरणों में तीन तीन चौकल नहीं होते, वहां इसी छंद को मानव कहते हैं। जैसे—

मानव

(क) सीता ने सोचा मन में—
"स्वर्ग बनेगा अब वन में !
धर्मचारिणी हूँगी मैं,
वनविहारणी हूँगी मैं ॥"

(ख) साँप खिलाती थीं अलकें,
मधुप पालती थीं पलकें,
और कपोलों की झलकें,
उठती थीं छवि की छलकें !

(ग) 'मँझली माँ ! तू मरी न क्यों ?
लोक-लाज से डरी न क्यों ?"
लक्ष्मण ने निःश्वास लिया,
माँ के जान सु-वास लिया !

(मैथिली शरण गुप्त)

९. मधुमालती

१. ऊपर १४, १४ मात्राओं के तीन छंद दिए गए हैं— सखी, हाकलि और मधुमालती। एक तो तीनों की गति पृथक् पृथक् है और दूसरे सखी के अन्त में मगण (ऽऽऽ)

मधुमालती छंद के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएं होती हैं। यति (विराम) सात, सात मात्राओं पर होती है। प्रत्येक पाद के अन्त में रगण (ऽ। ऽ)होता है। जैसे—

(क) है कार्य पू,र्ण न एक भी,
किस भाँति सो, जावें अभी।
क्या नींद अ,च्छी आयगी,
यह रात यों, हो जायगी॥

(ख) संध्या समय, ऐसे थकें,
हम नींद गह,री ले सकें,
जिस में कि हम, फिर जब जगें,
सोत्साह का,यों में लगें॥

(सियाराम शरण गुप्त)

साधारणतः पूर्ण शब्द के अन्त में ही यति आती है। परन्तु इन पद्यों में कहीं कहीं शब्दों के मध्य में ही यति पड़ रही है। सच तो यह है कि वर्तमान कवि यति-विषयक नियमों की विशेष परवा भी नहीं करते।

वा यगण (।ऽऽ), हाकलि के अन्त में एक गुरु वर्ण और मधुमालती के अन्त में एक रगण होता है। इन का एक दूसरे से यही भेद है।

२—यहां पर पादान्त में रगण का नियम कवि ने शिथिल कर दिया है।

६. चौबोला

चौबोला छंद के प्रत्येक चरण में १५ मात्राएं होती हैं। अन्तिम दो वर्ण क्रमशः लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

(क) मित्र सफल निज जीवन करो,
हृदय बीच शुभ गुण-गण धरो।
गैल सदा उन्नति की गहो,
नेता बन समाज में रहो॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

७. चौपई (अन्य नाम—जयकरी)

चौपई के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएं होती हैं। हर एक चरण के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। जैसे—

(क) करके शिक्षा-कार्य समाप्त,
विद्यालय की पदवी प्राप्त।
फिर तुम ग्रामों में कर वास,
ग्रामीणों का करो विकास॥

(ख) हिन्दू-युवक, उठो तुम आज,
रक्खो निज समाज की लाज।
हो तुम पर विभु की वर-वृष्टि,
लगी तुम्हीं पर आशा-दृष्टि॥

(ग) आँखें मूँद न पीटो लीक,
सोच समझ देखो तुम ठीक।
करो न असमय का आलाप,

जो तुम को ही रुचे न आप ॥

(घ) आत्म-संघटन करो सयुक्ति,
हिन्दू तुम्हें मिलेगी मुक्ति ।
आवेगी तुम में वह शक्ति,
जिस पर हो सब की अनुरक्ति ॥

(ङ) पावें सभी प्रबोध, प्रमोद,
खेलें भारत माँ की गोद ।
मिटें परस्पर के संदेह,
उपजें साम्य-भाव सस्नेह ॥

(च) क्या शासन क्या न्याय-विभाग,
क्या यूरप की सी वह आग ।
जिस में जले जगत के वीर,
सिद्ध हुए हम कहाँ अधीर ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

८. गुपाल (अन्य नाम-भुजंगिनी)

गुपाल के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएं होती हैं और अन्त में जगण। जैसे—

---

१. ऊपर १५, १५ मात्राओं के तीन छंद दिए गए हैं—चौबोला, चौपई और गुपाल। चौबोला के अन्त में लघु, गुरु, चौपई के अन्त में गुरु, लघु और गुपाल के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है। गति के अतिरिक्त इन का आपस में यही भेद है।

इस के आगे ? विदा विशेष,
हुए दम्पती फिर अनिमेष ।
किन्तु जहाँ है मनोनियोग,
वहाँ कहाँ का विरह वियोग ?

(मैथिली शरण गुप्त)

९. पादाकुलक

पादाकुलक के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं। हर एक चरण में चार चार चौकल होते हैं। जैसे—

(क) वायस पालिय अति अनुरागा ।
होइ निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
संत सहहिँ दुख परहित लागी ।
पर दुख हेत असंत अभागी ॥

(ख) सेवक सुख चह मान भिखारी ।
व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारी ॥
लोभी जस चह चारु गुमानी ।
नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥

(ग) सुमति कुमति सब के उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

(घ) निज सुख बिन मन होइ कि थीरा ।
परस कि होइ बिहीन समीरा ॥

कवनिउँ सिद्धि कि बिन बिस्वासा।
बिन हरि भजन कि भवभय नासा॥

(तुलसीदास)

(ङ) शुभ सर शोभै मुनि मन लोभै।
सरसिज फूले अलिरस भूले॥
जलचर डोलैं बहु खग बोलैं।
बरणि न जाहिं उर अरुझाहीं॥

(केशवदास)

उपर्युक्त पद्यों के प्रत्येक चरण में चार चार चौकल हैं। दृष्टान्त के लिए 'ख' पद्य के प्रथम चरण की ही परीक्षा करलें।

सेवक = ऽ।। = ४ मात्रा या कला (चौकल)
सुख चह = ।।।। = ,, ,, ,,
मानभि = ऽ।। = ,, ,, ,,
खारी = ऽऽ = ,, ,, ,,

१[illegible]. पद्धरि

पद्धरि छन्द, पादाकुलक का ही एक भेद है। इसके प्रत्येक पाद के अन्त में प्रायः जगण होता है। जैसे—

(क) आनंद कंद, करुणानिधान,
हे विश्वकोष सब शक्तिमान।
यह दीन दास अब है हताश,
प्रभु शीघ्र काटिये मोह-पाश॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) पर इन विहगों में एक कीर ।
था अग्रगण्य अति धीर वीर ॥
तरु पर नितान्त रह कर स्वतंत्र ।
नित जपता था वह यही मंत्र ॥

(ग) "जब तक हैं तन में प्राण शेष ।
तब तक न तजूँगा मैं स्वदेश ॥
तज अहंभाव का घृणित गर्व ।
इस पर वारूँ सब कुछ सगर्व ॥"

(घ) रथ को तज धर कर विप्र-वेष ।
शुक निकट पहुँच बोले सुरेश ॥
"तू क्यों देता है यहाँ प्राण ।
जा अन्य स्थल को शुक सुजान ॥"

(ङ) "मैं जन्मा था इस पर अबोध ।
पाया इस ही पर सृष्टि-बोध ॥
इसने ही दे कर बल विशेष ।
है सिखलाया उड़ना सुरेश ॥

(च) वे मृदुल मृदुल हैं याद डाल ।
जिन पर बीता था बाल-काल ॥
थे मौर युक्त वे छदन लाल ।
कैसे भूलूँगा वे रसाल ॥

(छ) खा कर जिन को मैं शुकी संग ।
यौवन में करता राग-रंग ॥
याद मुझे वे दिन अतीत ।

होती जब वर्षा घाम शीत ॥
(ज) वह स्वयं सहन कर सर्व क्लेश।
था मुझे बचाता हे सुरेश ॥
जब हुआ अकिंचन वहीं आज ।
जब मिटे नित्य के सौख्य साज ॥
(झ) तब छोड़ उसे जाना सुरेश ।
है मानी-हित अपयश विशेष ॥
इस को तजना अति निंद्य कर्म ।
इस पर मर मिटना है स्वधर्म ॥
मैं इसे न त्यागूँ शुनासीर ।
चाहे तन त्यागें असु अधीर ॥"

(गोविन्ददास)

५१. चौपाई

चौपाई के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं। इस में गुरु-लघु या चौकलों का कोई नियम नहीं होता। चौपाई की

---

१. पादाकुलक और चौपाई छन्दों की गति (चाल) बिल्कुल एक-सी होती है। इस लिए इन का पहचानना कुछ कठिन होता है। पहचानका सरल उपाय यह है कि पादाकुलक के चरणों में चार चार चौकल अवश्य होते हैं और चौपाई में नहीं। ये दोनों छन्द परस्पर मिल भी जाते हैं। परन्तु जब तक चारों चरणों में चौकलों का नियम पूरा न हो तब तक उसे चौपाई ही समझना चाहिए।

रचना में इस बात का ध्यान अवश्य रहता है कि सम-कल के पीछे सम-कल आएं। यदि कोई विषम-कल आ जाए तो उस के अनन्तर विषम-कल रख कर समता कर ली जाती है। इसके पदों के अन्त में गुरु, लघु (ऽ।) कभी न होने चाहिएं। जैसे-

(क) बिनु संतोष न काम नसाहीं।
काम अछत सुख सपनेहु नाहीं॥
राम भजन बिन मिटहिँ कि कामा।
थल विहीन तरु कबहुँ कि जामा॥

(ख) सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मात बचन अनुरागी।
तनय मातु पितु तोषन हारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

(ग) धन्य जन्म जगतीतल तासू।
पितहिँ प्रमोद चरित सुन जासू॥
चारि पदारथ कर तल ताके।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके॥

(घ) तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मन सदा रहत तोहि पांहीं।
जानु प्रीतिरस एतन्हिँ माहीं॥

(ङ) वरन धर्म नहिँ आस्रम-चारी।
स्रुति-विरोध-रत सब नर नारी॥

द्विज स्रुति बेचक भूप प्रजासन ।
कोउ नहिँ मान निगम अनुसासन॥
(च) मारग सोइ जाकहँ जोइ भावा ।
पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारंभ दम्भ-रत जोई ।
ताकहँ सन्त कहहिं सब कोई ॥
(छ) सोइ सयान जो पर-धन-हारी ।
जो कर दम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो कह झूँठ मसखरी जाना ।
कलि जुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
(ज) निराचार जो स्रुति-पथ-त्यागी ।
कलिजुग सोइ ग्यानी बैरागी ।
जाके नख अरु जटा बिसाला ।
सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

(तुलसीदास)

१२. शृङ्गार[2]

१—प्रजा को खा जाने वाला ।

२—ऊपर १६, १६ मात्राओं के इन चार छन्दों का विवरण दिया गया है—पादाकुलक, पद्धरि, चौपाई, शृंगार । संक्षेप में इनकी पहचान यों कर सकते हैं । यदि प्रत्येक पाद में चार चार चौकल हों तो वह पादाकुलक है। यदि चौकलों का नियम और पादान्त में जगण का नियम पूरा उतरता हो तो उसे

शृंगार छन्द के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं। प्रत्येक पाद के प्रारंभ में त्रिकल और द्विकल (३+२ मात्राएं) तथा अन्त में गुरु, लघु (ऽ।) अवश्य आने चाहिएं। जैसे—

(क) हरित वन कुसुमित है द्रुम-वृन्द;
बरसता है मलयज मकरन्द ।
स्नेहमय सुधा-दीप है चन्द;
खेलता शिशु हो कर आनन्द ॥
(जयशङ्कर 'प्रसाद')

(ख) गूँजते थे रानी के कान,
तीर-सी लगती थी वह तान—

पद्धरि समझना चाहिए; परन्तु वर्तमान कवि इसकी चाल (गति) को ही प्रधान मानते हैं और चौकल तथा जगण के नियमों की उपेक्षा भी कर देते हैं। यदि चौकल-नियम पूरा न हो और अन्त में गुरु, लघु न हों, तो वह चौपाई होगी। यदि चरणों के आदि में त्रिकल और द्विकल तथा अन्त में गुरु लघु हों तो उसे शृंगार समझना चाहिए ।

छंद पढ़ने वाले छात्रों को चाहिए कि वे छन्दों के उदाहरणों को ऊंचे स्वर से बार बार पढ़ा करें। इससे विविध छन्दों की चाल उनके मस्तिष्क में स्वयं ही अंकित हो जायगी और समय पाकर वे ध्वनि-मात्र से ही बता सकेंगे कि अमुक पद्य किस छन्द में है।

'भरत-से सुत पर भी संदेह,
बुलाया तक न उन्हें जो गेह ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(ग) न रहता भौरों का आह्वान,
नहीं रहता फूलों का राज ।
कोकिला होती अन्तरधान,
चला जाता प्यारा ऋतु-राज ॥

(घ) बिकसते, मुरझाने को फूल,
उदय होता छिपने को चन्द ।
शून्य होने को भरते मेघ,
दीप जलता होने को मन्द ॥

(महादेवी वर्मा)

१३. चन्द्र

चन्द्र छन्द के चारों चरणों में १७, १७ मात्राएं होती हैं। यति १० तथा ७ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) फेर में डालते, हमें जो थे ।
तो फिराये न क्यों, फिरे आँसू ॥
जो किसी आँख से, गये गिर तो ।
किस लिए आँख से, गिरे आँसू ॥

(ख) जान जिन में है[1] जान वाले वे ।

१—लघुवत् पढ़ा जायगा ।

हैं गिराते न जी, गये आँसू ॥
प्यास थी आबरू, बचाने की ।
फिर अजब क्या कि पी,गये आँसू ॥

(ग) चाल वाले न कब, चले चालें ।
चोचलों साथ चल, पड़े आँसू ॥
मनचलापन दिखा, दिखा अपना ।
मन चलों से मचल, पड़े आँसू ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

१४. शक्ति[1]

शक्ति के प्रत्येक पाद में १८ मात्राएं होती हैं। पाद का प्रथम वर्ण लघु होता है और अन्त में सगण (।।ऽ) रगण (ऽ।ऽ) या नगण (।।।) होता है। इसकी १ ली, ६ठी, ११वीं और १६वीं मात्राएं लघु होती हैं। जैसे—

(क) अरे, उठ कि अब तो सवेरा हुआ।
नहीं दूर तेरा अँधेरा हुआ ॥
बहुत दूर करना तुझे है सफ़र।
नहीं ज्ञात है राह घर की किधर ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

---

१. इस छन्द की चाल (गति) भुजंगी नामक वर्ण-वृत्त से मिलती है। उस के प्रत्येक पाद में वर्ण एक ही गण-क्रम से आते हैं, इस में नहीं। उस में इस में यही अन्तर है।

(ख) शिवा शंभु के पाँव पंकज गहौं।
विनायक सहायक सबै दिन चहौं॥
भजौं राम आनंद के कन्द को।
दिया जिन हुकुम पौन के नंद को॥

(श्री बख्शीराम)

१८. पीयूषवर्ष

पीयूषवर्ष के प्रत्येक पाद में १६ मात्राएं होती हैं। १० और ९ मात्राओं पर यति होती है। चरणान्त में लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

(क) ब्रह्म की हैं चार, जैसी पूर्त्तियाँ,
ठीक वैसी चार, माया-मूर्त्तियाँ।
धन्य दशरथ-जनक,-पुण्योत्कर्ष है;
धन्य भगवद् भूमि, भारत-वर्ष है॥

(ख) अयि दयामयि देवि, सुखदे सारदे,
इधर भी निज वरद, पाणि पसार दे।
दास की यह देह,-तंत्री सार दे,
रोम-तारों में नई झंकार दे॥

(मैथिली शरण गुप्त)

जहाँ इस छन्द में यति–नियम और अन्तिम लघु, गुरु की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, वहाँ इसे आनंद-वर्द्धक कहते हैं। वर्त्तमान में पीयूषवर्ष की अपेक्षा आनन्दवर्द्धक का ही अधिक प्रचार है। अत एव उस के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

आनंदवर्धक

(क) हाय हम ने भी कुलीनों की तरह ।
जन्म पाया प्यार से पाले गये ॥
जी-बचे फूले-फले तब क्या हुआ ।
कीट से भी नीचतर माने गये ॥

(ख) छोड़ कर प्यारे पुराने धर्म को ।
आज ईसाई मुसल्माँ हम बने ॥
नाथ, कैसा यह निराला न्याय है !
तो हमें सानंद सब छूने लगे ॥

(रामचन्द्र शुक्ल)

(ग) मञ्जरी-सी अँगुलियों में यह कला,
देख कर मैं क्यों न सुध भूलूँ भला ?
क्यों न अब मैं मत्त-गज-सा झूम लूँ ?
कर-कमल लाओ तुम्हारा चूम लूँ ।

(मैथिली शरण गुप्त)

१६. सुमेरु

---

१. ऊपर १९, १९ मात्राओं के इन दो छन्दों का वर्णन किया गया है—पीयूष-वर्ष तथा सुमेरु। सुमेरु के पादों का प्रथमाक्षर लघु ही होता है परन्तु पीयूष वर्ष में लघु या गुरु कोई भी हो सकता है। सुमेरु के अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं और पीयूषवर्ष के अन्त में लघु, गुरु। दोनों की चाल में अन्तर भी स्पष्ट है।

सुमेरु के प्रत्येक पाद में १६ मात्राएं होती हैं। यति १२, ७ अथवा १०, ६ पर होती है। पाद का प्रथम वर्ण लघु होता है और पादान्त में यगण बहुत प्यारा लगता है। जैसे—

(क) नहीं फैला सका, सौरभ कभी तू,
अभी से खो चला. गौरव सभी तू।
सभी साथी मुदित, हैं देख तेरे,
तुझी को हाय ! है, दुर्दैव घेरे॥
(सियाराम शरण गुप्त)

(ख) जहाँ अभिषेक-अम्बुद, छा रहे थे,
मयूरों-से सभी मुद, पा रहे थे।
वहीं परिणाम में, पत्थर पड़े यों,
खड़े ही रह गये, सब थे खड़े ज्यों॥

(ग) अभागिन, देख कोई, क्या कहेगा ?
यही चौदह बरस, बन, में रहेगा !
विभव पर हाय ! तू, भव छोड़ती है,
भरत का राम का, जुग फोड़ती है॥
(मैथिली शरण गुप्त)

१७. हंसगति

हंसगति के हर चरण में २० मात्राएं होती हैं। ११ तथा ९ मात्राओं पर यति होती है। अन्तिम दो वर्ण लघु होते हैं। जैसे—

(क) होते हैं छवि देख, विलोचन विकसित।

होता है गुण देख हृदय आनंदित ॥
पर प्रिय लगता नहीं, रूप से दुर्गुण।
कुरूपता को ढँक, देता है सद्गुण ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

१८. चांद्रायण

चान्द्रायण के हर चरण में २१ मात्राएं होती हैं। ११ और १० मात्राओं पर यति होती है। इस की ११ वीं मात्रा जगण के अन्त में और १० वीं रगण के अन्त में आती है। जैसे—

(क) शिवं दस जरा सु चन्द्र, अयन कवि कीजिये।
प्रभु जू दया-निकेत, शरण रख लीजिये॥
नरवर विष्णु कृपाल, सबहिँ सुख दीजिये।
अपनी दया विचारि, पाप सब मींजिये ॥

(भानु कवि)

(ख) वनदेवी-गण, आज, कौन सा पर्व है,
जिस पर इतना[२] हर्ष, और यह गर्व है ?
जाना, जाना, आज, राम वन आ रहे,
इसी लिए सुख-साज, सजाये जा रहे।

(ग) ऍ, ये वल्कल ! दृष्टि, कहाँ मेरी रही ?
कौतुक, अब तक देख, न पाई[३] वह यही !

१—जगणान्त ११ और रगणान्त १० कलाओं से चान्द्रायण छन्द रचिए।

२, ३—कहीं कहीं यति-स्थलों पर जगण-रगण का विशेष ध्यान नहीं रखा गया है।

कहिए, ये किस लिए, आज पहने गये ?
कहाँ राज-परिधान, और गहने गये ?

(मैथिलीशरण गुप्त)

१९. राधिका

राधिका छन्द के प्रत्येक पाद में २२ मात्राएं होती हैं। यति १३ और ९ मात्राओं पर होती है। जैसे --

(क) फल फूलों से हैं लदी, डालियाँ मेरी,
वे हरी पत्तलें भरी, थालियाँ मेरी।
मुनि-बालाएं हैं यहाँ, आलियाँ मेरी,
तटिनी की लहरें और, तालियाँ मेरी॥

(ख) नाचो मयूर नाचो क,पोत के जोड़े,
नाचो कुरंग तुम लो उ,ड़ान के तोड़े।
गाओ दिवि चातक चटक, भृङ्ग भय छोड़े,
वैदेही के वनवास,-वर्ष हैं थोड़े॥

(ग) आनंद हमारे ही अ,धीन रहता है,
तब भी विषाद नर-लोक, व्यर्थ सहता है।
करके अपना कर्तव्य, रहो सन्तोषी,
फिर सफल हो कि तुम विफल, न होगे दोषी॥

(घ) "सौ बार धन्य वह एक, लाल की माई,
जिस जननी ने है जना, भरत सा भाई।"
पागल-सी प्रभु के साथ, सभा चिल्लाई—
"सौ बार धन्य वह एक, लाल की माई॥"!

उपर्युक्त ख और ग पद्यों के किसी किसी पाद में यति उचित स्थान पर नहीं पड़ती, परन्तु गति नितान्त निर्दोष है। हम कह ही चुके हैं कि आधुनिक कवि यति के नियम की बहुत अधिक परवा नहीं करते।

२०. बिहारी

बिहारी छन्द के प्रत्येक चरण में २२ मात्राएं होती हैं। यति १४ और ८ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) भूला न किसी भाँति कड़ी, टेक टिकाना।
माना मनोज का न कहीं, ठीक ठिकाना॥
जीते असंख्य शत्रु रहा, दर्प दिखाता।
शय्या शरों की पाय मरा, धर्म सिखाता॥

(ख) विज्ञान-पाठ वेद-पढ़ों, को पढ़ा गया।
विद्या-विलास विज्ञ वरों, का बढ़ा गया॥
सारे असार पंथ मतों, को हिला गया।
आनंद-सुधा सार दया, का पिला गया॥

(ग) लंका जलाय काल खलों, को सुझा दिया।
मारे प्रचंड दुष्ट दिया, भी बुझा दिया॥
हनुमान बली वीर-वरों, में प्रधान है।
महिमा अखंड ब्रह्मचर्य, की महान है॥

(नाथूराम शंकर)

१—क तथा ख पद्यों का संकेत यथाक्रम भीष्म पितामह और स्वामी दयानंद सरस्वती की ओर है।

२१. कुंडल

कुंडल छन्द के चारों चरणों में २२, २२ मात्राएं होती हैं। यति १२ तथा १० मात्राओं पर होती है। अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं। जैसे—

(क) तू दयाल दीन हौं तु, दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी तु, पाप पुंज हारी॥
नाथ तू अनाथ को अ,नाथ कौन मो सों।
मो समान आरत नहिँ, आरति-हर तो सों॥

(ख) मेरे मन राम नाम, दूसरा न कोई।
सन्तन ढिग बैठि बैठि, लोक-लाज खोई॥
अब तु बात फैल गई, जानत सब कोई।
अँसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम-बेलि बोई॥

(ग) सीतापति रामचंद्र, रघुपति रघुराई।
विहँसत मुख मंद मंद, सुन्दर सुखदाई॥
कीरति ब्रह्मंडऽखंड, तीन लोक छाई।

१—ऊपर २२, २२ मात्राओं के तीन छन्दों (राधिका, बिहारी तथा कुंडल) का उल्लेख किया गया है। इन की पहचान की विधि सरल है। राधिका में १३, ६ पर, बिहारी में १४, ८ पर और कुंडल में १२, १० पर यति होती है। कुंडल के अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं। शेष दोनों में गुरु, लघु का कोई नियम नहीं है।

हरखि निरखि तुलसिदास, चरणनि रज पाई ॥
(तुलसीदास)

प्रथम पद्य के तृतीय पाद में यति उचित स्थान पर नहीं है।

२२. उपमान (अन्य नाम—दृढ़पद वा दृढ़पद)

उपमान के हर एक पाद में २३ मात्राएं होती हैं। १३ और १० मात्राओं पर यति होती है। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण गुरु हों तो अच्छा है, नहीं तो अन्तिम वर्ण अवश्य गुरु चाहिए। जैसे—

कभी सुयश पाता नहीं, है अत्याचारी ।
निरुद्यमी होता नहीं, सुख का अधिकारी ॥
उसकी मंज़िल का नहीं, अन्त कभी होता ।
जो अन्धा है एक तो, तिस पर है सोता ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

२३. रोला

रोला के प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएं होती हैं। यति ११ तथा १३ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) गूँज उठे अलि कूक, उठे कोकिल कुंजों में,
फूल फूल कर फूल, उठे पादप-पुंजों में ।
सब का यह आनंद, मधुर सौरभ कर संगी,
गन्धवाह बह चला, तुम्हारी ओर उमंगी ॥

(ख) करो नाथ स्वीकार, आज इस हृदय-कुसुम को,

करें और क्या भेंट, राजराजेश्वर तुम को ?
सौरभ की है कमी, कहाँ पर उस को पावें ?
सुन्दरता है नहीं, कहां से वह भी लावें ?
(सियाराम शरण गुप्त)

(ग) जौ आरज-गन एक, होइ निज रूप सम्हारैं ।
तज गृह-कलहहिं अपनी कुल मरजाद बिचारैं ॥
तौ यह कितने नीच, कहा इन को बल भारी ।
सिंह जगे कहुँ स्वान, ठहरिहैं समर मझारी ॥

(घ) जन्मपत्र विधि मिले, ब्याह नहिँ होन देत अब ।
बालकपन में ब्याहि, प्रीति बल नास कियो सब ॥
करि कुलीन के बहुत, ब्याह बल बीरज मार्यो ।
बिधवा-ब्याह निषेध, कियो बिभिचार प्रचार्यो ॥
(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

(ङ) प्रकृति यहाँ एकान्त, बैठ निज रूप सँवारति ।
पल पल पलटत भेस, छनिक छवि छिन छिन धारति ॥
विमल-अम्बु-सर मुकर,न महँ मुख बिम्ब निहारति ।
अपनी छवि पै मोहि, आप ही तन मन वारति ॥
(श्रीधर पाठक)

(च) मल गोबर के ग्रास, पाय गप गप खाते हैं ।
गढ़ गढ़ गोले गोल, लुड़कते लुड़काते हैं ॥
गुबरीले इस भाँति, क्रिया-विधि जो न जनाते ।
तो वटिका कविराज, कहो किस भाँति बनाते ?

(छ) बाल-विवाह विशाल, जाल रच पाप कमाया ।

ब्रह्मचर्य-व्रत-काल, वृथा विपरीत गमाया ॥
अबला ने चुप-चाप, उठाय पछाड़ा मुझ को ।
बेटा जन कर बाप, बनाय बिगाड़ा मुझ को ॥
(नाथूराम 'शंकर')

(ज) "लक्ष्मण ! लक्ष्मण ! हाय !, न चंचल हो पल पल में,
क्षण भर तुम विश्राम, करो इस अंक स्थल में ।"
"हाय नाथ ! विश्राम ?, शत्रु अब भी है जीता,
कारागृह में पड़ी, हमारी देवी सीता !"
(मैथिली शरण गुप्त)

२४. दिक्पाल

दिक्पाल के प्रत्येक पाद में २४ मात्राएं होती हैं । १२, १२ मात्राओं पर विराम होता है । जैसे—

(क) ऊपर सुदूर फैला, नीला असीम नभ है ।
नीचे अनन्त पृथ्वी, छाया तले पड़ी है ।
आधार किन्तु किसका, है मध्य में उभय के ?
ब्रह्मांड और नभ किस, संकेत में थमे हैं ?

(ख) आते समीर के ये, झोंके मधुर कहां से ?
बहते निकुंज में हैं, जो मंद मंद गति से ?
किसका सँदेश जाकर, कहते प्रसून से हैं ?
क्यों फूल फूल उठता, उड़ती सुगन्ध क्यों है ?

(ग) नक्षत्र-पुंज में है, झिलमिल प्रकाश किस का ?
चिन्ता ललाट पर यह, कैसी सुधांशु के है ?

जब ग्रीष्म-ताप से अति, तपती वसुंधरा है ।
आते पयोद लेकर, शीतल सलिल कहां से ?

(घ) संसार को सभो यह, लीला विचित्र क्यों है ?
किसकी अपार माया, सर्वत्र व्याप्त-सी है ?
शृंगार प्रकृति रच कर, प्रतिक्षण नवीन अपना—
किस को रिझा रहो है, वह कौन सा रसिक है ?

(मदनमोहन मिहिर)

२८. रूपमाला

रूपमाला छन्द के प्रत्येक पाद में २४ मात्राएं होती हैं । यति १४ और १० मात्राओं पर होती है । इसके पादों के अन्त में दो वर्ण गुरु, लघु होते हैं । जैसे—

(क) चूमता था भूमि-तल को, अर्द्ध विधु सा भाल,
बिछ रहे थे प्रेम के दृग,-जाल बन कर बाल ।
छत्र-सा, सिर पर उठा था, प्राणपति का हाथ,
हो रहो थी प्रकृति अपने, आप पूर्ण सनाथ ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) यज्ञ-मण्डप में हुते रघुनाथ जु तेहि काल ।
चर्म अंग कुरंग को शुभ, स्वर्ण की सँग बाल ॥
आस-पास ऋषीश शोभित, शूर सोदर साथ ।

---

१. ऊपर २४, २४ मात्राओं के तीन छन्दों का वर्णन किया गया है । इन के पहचानने में कोई कठिनता नहीं पड़ती क्योंकि सब की यति भिन्न भिन्न मात्राओं पर पड़ती है । २. थे

आइ भग्गुले लोग वरणैं, युद्ध की सब गाथ ॥

(सरस पिंगल)

(ग) रावरे मुख के विलोकत, ही भये दुख दूरि,
सुप्रलाप नहीं रहे उर,-मध्य आनँद पूरि ।
देह पावन ह्वै गई पद,-पद्म को पय पाइ ।
पूजतै भयौ वंश पूजित, आशु ही मुनिराइ ॥

(घ) संनिधान भरे तपोधन, धाम धी धन धर्म,
अद्य सद्य सबै भये निरवद्य वासर-कर्म ।
ईस यद्यपि दृष्टि ही भई, भूरि मंगल सृष्टि,
पूँछिये कहँ होति है सो, तथापि वार्कविसृष्टि ॥

(ङ) सींचि मंत्र सजीव यौवन. जी उठी तेहि काल ।
पूंछियो मुनि कौन की दुहि,ता वहू अरु बाल ॥
हौं सुता मिथिलेश की, दशरत्थ-पुत्रकलत्र ।
कौन दोषत जी न जानति, कौन आपुनु अत्र ॥

(च) मुनिपुत्रिके, सुनि मोहिं जानहि, बोलमीकि द्विजाति ।
सर्वथा मिथिलेश को गुरु, सर्वदा शुभ भाँति ॥
होहिंगे सुत द्वै सुधी पगु, धारिये मम ओर्क ।

---

१. युद्ध से भागे हुए ।

२—आप के । ३—शीघ्र । ४—तुरन्त । —५विघ्न-रहित ।
६—बोलना ।

७—लघु पढ़ा जायगा । ८—घर ।

रामचन्द्र क्षितीश के सुत जानि है तिहुँ लोक ॥

(छ) जाहु सत्वर[1] दूत लक्ष्मण, हैं जहां यहि बार[2] ।
जाइकै यह बात वर्णहु, रक्षियो मुनि-बार ॥
हैं समर्थ सनाथ वे अस,मर्थ और अनाथ ।
देखिबें कहँ ल्याइयो मुनि-बाल उच्चमगाथ ॥
(केशवदास)

२६. झूलना (प्रथम)

झूलना छन्द के प्रत्येक पाद में २६ मात्राएं होती हैं। हर चरण के अन्त में गुरु लघु (ऽ।) होते हैं । यति ७, ७, ७, ५ मात्राओं पर होती है । जैसे—

(क) यहि भाँति पू,जा पूजि जी,व जो[3] भक्त पर,म कहाइ ।
भव भक्ति रस, भागीरथी, महँ देहि डुब,नि बहाइ ॥
पुनि महाक,र्ता महात्या,गी महाभो,गी होइ ।
अति शुद्ध भा,व रमै रमा,पति पूजि है, सब कोइ ॥

(ख) तब लोक ना,थ विलोकि कै, रघुनाथ को, निज हाथ ।
सब शेष सों, अभिषेक की,पुनि उच्चरी, शुभ गाथ ॥
ऋषिराज इ,ष्ट वशिष्ट सों, मिलि गाधिनं,दन[4] आइ ।
पुनि बालमी,कि बियास आ,दि जिते हुते[5], मुनिराइ ॥

१—शीघ्र । २—बालक ।
३—लघु पढ़ा जायगा ।
४—बिश्वमित्र । ५—थे ।

(ग) तुम हौ अनं,त अनादि सर्वग सर्वदा, सर्वज्ञ ।
अब एक हौ, कि अनेक हौ, महिमा न जान,त अज्ञ॥
भ्रमिबो करैं, जग लोक चौ,दह लोभ मो,ह समुद्र ।
रचना रची, तुम ताहि जा,नत हौं न ब्र,ह्म न रुद्र ॥
(केशवदास)

२७. गीतिका

गीतिका के प्रत्येक पाद में २६ मात्राएं होती हैं । यति और १२ मात्राओं पर होती है और कभी कभी १२, १४ भी । अन्तिम दो वर्ण लघु, गुरु होते हैं । इस की ३ री, १० १७ वीं तथा २४ वीं मात्राएं लघु होनी चाहिएं । जैसे—

(क) ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्या, का विशद विश्राम था ।
धर्मधारी धीर योगी, सर्व-सद्गुण-धाम था ॥
कर्म-वीरों में प्रतापी, पर निरा निष्काम था ।
श्री दयानंदर्षि स्वामी, सिद्ध जिस का नाम था ॥

(ख) सत्यवादी वीर था जो, वाचनिक संग्राम का ।
साहसी पाया किसी को, भी न जिस के काम का ॥
प्राण दे प्रेमी बना जो, प्रेम के परिणाम का ।
क्या दया आनंद धारी, धीर था वह नाम का ?

(ग) साधु-भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे ।
सभ्यता की सीढियों पै, सूरमा चढ़ने लगे ॥

४—सर्वव्यापक । ५— मैं ।

वेद-मंत्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे ।
वंचकों की छातियों में. शूल से गड़ने लगे ॥

(नाथूराम शङ्कर)

(घ) मातृ-भू-सी मातृ-भू है, अन्य से तुलना नहीं ।
यत्न से भी ढूँढने पर, मिल नहीं सकती कहीं ॥
जन्मदात्री माँ हमारी, प्रेम में विख्यात है ।
किन्तु वह भी मातृ-भू के, सामने बस मात है ॥

(राम बहोरी शुक्ल)

२८. सरसी

सरसी छन्द के चारों चरणों में २७, २७ मात्राएं होती हैं। यति १६ तथा ११ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) अहा ! यही वह धन्य धरित्री,
बलिहारी यह रूप !
सुन्दरि, अयि कल्याणि, शुभंकरि,
तेरी छटा अनूप ।
लघु लघु ये तेरे गिरि-वन-नद,
शोभन ज्यों नव चित्र ।
ये तेरे निर्झर, रज में भी,
जीवन भर सुपवित्र ॥

(ख) परम पिता, हम हों जावें जब, दुराचरण के दास ।
निर्दय बनकर हमें शास्ति दो, तज वात्सल्य विकास ॥
निर्दय बन कर करो और भी, जो करना हो और ।

निज विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किसी भी ठौर।

(सियाराम शरण गुप्त)

(ग) काम क्रोध मद लोभ मोह की, पँचरंगी कर दूर।
एक रंग तन मन बाना में, भर ले तू भर पूर॥
प्रेम पसार, न भूल भलाई, वैर-विरोध विसार।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥

(घ) देख! कुदृष्टि न पड़ने पावे, पर-वनिता की ओर।
विवश किसी को नहीं सुनाना, कोई वचन कठोर॥
अबला अबलों को न सताना, पाय बड़ा अधिकार।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥

(ङ) माता पिता सुकवि गुरु राजा, कर सब का सम्मान।
रुग्ण अनाथ पतित दीनों को, दे जल भोजन दान॥
सुभट गदारि[1] शिल्पकारों को, पूज सुयश विस्तार।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥

(नाथूराम शंकर)

२९. शुद्धगीता[2]

शुद्धगीता छन्द के हर एक चरण में २७ मात्राए होती हैं

१—वैद्य।

२—सरसी और शुद्ध गीता दोनों छन्द २७, २७ मात्राओं के हैं; परन्तु दोनों की यति भिन्न भिन्न है, इस लिए पहचान आसान है।

१४ तथा १३ मात्राओं पर यति होती है। अन्तिम दो वर्ण गुरु लघु होते हैं। जैसे—

नित्य ही रक्खो हृदय में, गुरुजनों की सीख याद।
चाहिए साफल्य तो तुम, छोड़ दो प्यारे प्रमाद॥
झूठ या कपटाचरण का, अन्त है केवल विषाद।
सत्य ही की जीत होती, है समझ लो निर्विवाद॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

३०. सार

सार छन्द के प्रत्येक पाद में २८ मात्राएं होती हैं। १६ तथा १२ मात्राओं पर यति होती है। यदि चरणान्त में दो गुरु वर्ण हों तो माधुर्य बढ़ जाता है। यदि पदान्त में एक गुरु या दो लघु हों तो भी हानि कोई नहीं। जैसे--

(क) न्याय कहाँ तू मुझे मिलेगा, मैंने दुनिया छानी।
ज्यों ज्यों तुझे ढूँढता हूँ मैं, बढ़ती है हैरानी॥
प्रेम किया प्रेमी-जन पाये, सोचा यहीं मिलेगा।
किन्तु अन्त में देखा वह भी, थी मेरी नादानी॥

(ख) खोजे धर्म सभी दुनिया के, राजनीति भी देखी।
पाई किन्तु वहाँ भी दुनिया, मतलब पर दीवानी॥
आज प्रकृति में खोज रहा हूँ, क्या तू यहीं मिलेगा।
पड़ी दिखाई आभा की है, कुछ कुछ यहाँ निशानी॥

(देवीप्रसाद गुप्त)

(ग) मेरे श्याम सलोने की है, मधु से मीठी बोली।
कुटिल अलक वाले की आकृति, है क्या भोली भोली॥

मृग-से दृग हैं किन्तु अनीं-सी, तीक्ष्ण दृष्टि अनमोली।
बड़ी कौन सी बात न उस ने, सूक्ष्म बुद्धि पर तोली!

(घ) काली-दाह में तू क्यों कूदा, डाँटा तो हँस बोला—
"तू कहती थी—'और चुराना, तुम मक्खन का गोला।
छींके पर रख छोड़ेंगे सब, अब भिड़-भरा मठोला।'
निकल उड़ीं वे भिड़ें प्रथम ही, भाग बचा मैं भोला॥"

(मैथिली शरण गुप्त)

(ङ) है यदि पुत्र स्वर्गप्रद तो फिर, धर्म निरर्थक ही है।
जिनके बहुत पुत्र हैं उनके, जीवन सार्थक ही हैं॥
बहु सुत जननी खरी कूकरी, अधम शूकरी नारी।
नखी नागिनी आदि जीव क्या, कभी स्वर्ग अधिकारी॥

(च) क्षुद्र जीव-समुदाय सभी यदि, पुत्रवान होने से।
सहज ऊर्ध्वगति पा सकते हैं, विषय बीज बोने से॥
तो फिर वृथा कर्म-साधन सब, आश्रम धर्म बृथा है।
स्वर्ग-लाभ करने की क्या ही, सच्ची सहज प्रथा है?

(वियोगी हरि)

३१. हरिगीतिका

हरिगीतिका के प्रत्येक पाद में २८ मात्राएं होती हैं। यति

---

१. सार और हरिगीतिका दोनों २८, २८ मात्राओं के छन्द हैं, और इन की यति भी समान मात्राओं पर पड़ती है। परन्तु दोनों की चाल में दिन-रात का अन्तर है, इस लिए पहचानने में कुछ कठिनता न पड़ती।

१६, १२ मात्राओं पर होती है। मात्रा क्रम यों होता है—

२, ३, ४, ३, ४, ३, ४, ५=२८। अन्तिम दो वर्ण लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

(क) "मेरे हृदय के हर्ष हा ! अभि,मन्यु अब तू है कहाँ !
दृग खोल कर बेटा, तनिक तो, देख हम सब को यहाँ।
मामा खड़े हैं पास तेरे, तू मही पर है पड़ा।
निज गुरु-जनों के मान का तो, ध्यान तुझ को था बड़ा॥

(ख) "व्याकुल तनिक भी देख कर तू, धैर्य देता था मुझे।
पर आज मेरे पुत्र प्यारे, हो गया है क्या तुझे !!
धात्री सुभद्रा को समझ कर, मां मुझे था मानता।
पर आज तू ऐसा हुआ मा,नो न था पहचानता॥

(ग) "हा ! पाँच ग्रामों की बुरी यह, सन्धि जब होने लगी।
सुन कर तथा उस बात को, जब मैं बहुत रोने लगी॥
क्या याद है ?, था पांडवों के, सामने तू ने कहा—
'स्वीकृत नहीं यह सन्धि मुझ को, माँ ! न तू आँसू बहा'॥

(घ) "रहते हुए भी शस्त्रधारी, पांडवों के साथ में,
हा ! तू अकेला हत हुआ, पड़ पापियों के हाथ में !
कोई न कुछ भी कर सका, ऐसा अनर्थ हुआ किया।
धिक् पांडवों की शूरता धिक्, शस्त्रधारण की क्रिया॥"

(ङ) पृथ्वी, पवन, नभ, जल, अनल सब, लग रहे हैं काम में।
फिर क्यों तुम्हीं खोते समय हो, व्यर्थ के विश्राम में॥
बीते हज़ारों वर्ष तुम को, नींद में सोते हुए।

बैठे रहोगे और कब तक, भाग्य को रोते हुए ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(च) निरुपाधि-नारायण-निरंजन, निर्भयामृत नित्य है ।
अत्ता अनादि अनन्त अनुपम, अन्न जल आदित्य है ॥
परिभू पुरोहित प्राण प्रेरक, प्राज्ञ पूज्य प्रजेश है ।
करतार, तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥

(छ) कवि काल कालानल कृपाकर, केतु करुणाकंद है ।
सुखधाम सत्य सुपर्ण सच्छिव, सर्वप्रिय स्वछंद है ॥
भगवान भावुक-भक्त-वत्सल, भू विभू भुवनेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥

(नाथूराम शङ्कर)

३२. मरहटा

मरहटा छन्द के प्रत्येक पाद में २९ मात्राएं होती हैं। पादान्त में गुरु लघु होते हैं। यति १०, ८, ११ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) यह सुनि गुरु बानी, धनु-गुन तानी, जामी द्विज दुख दानि।
ताडका सँहारी, दारुण भारी, नारी अति बल जानि॥
मारीच बिडार्यो, जलधि उतार्यो, मार्यो सबल सुबाहु।
देवनि गुन पर्ष्यौ, पुष्पनि बर्ष्यौ, हर्ष्यौ अति सुरनाहु॥

(ख) यक दिन रघुनायक सीय सहायक, रतिनायक अनुहारि।
शुभ गोदावरि तट, विमल पंच वट, बैठे हुते मुरारि।
छवि देखत हीं तन, मदन मथ्यो मन, शूर्पनखा तेहि काल

अति सुंदर तन करि, कछु धीरज धर, बोली वचन रसाल॥

(ग) सब वै मुनि रूरे, तप बल पूरे, विदित सनाढ्य सुजाति ।
बहुधा बहु वारनि, प्रति अवतारनि, दै आयै बहु भाँति ॥
सुनि प्रभु आखंडल, मथुरा मंडल, में दीजै शुभ ग्राम ।
बाढ़ै बहु कीरति, लवणासुर हति, अति अजेय सग्राम ॥

(घ) तुम हौ सब लायक, श्री रघुनायक, उपमा दीजै काहि ।
मुनि-मानस रंता, जगत नियंता, आदि न अन्त न जाहि ॥
मारौ लवणासुर, जैसे मधु मुर, मारे श्री रघुनाथ ।
जग जय रस भीने, श्री शिव दीन्हे, शूल हि लीन्हे हाथ ॥

(केशवदास)

३३. चौपैया

चौपैया छन्द के चारों चरणों में ३०, ३० मात्राएं होती हैं। १०, ८, १२ मात्राओं पर यति होती है। यदि पादान्त में एक सगण और एक गुरु (॥ ऽ ऽ) हों, तो माधुर्य बहुत बढ़ जाता है, नहीं तो अन्तिम वर्ण अवश्य गुरु ही होना चाहिए। जैसे—

(क) भै प्रगट कृपाला, दीनदयाला, कौसल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी, मुनिमनहारी, अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा, तन घनश्यामा, निज आयुधभुज चारी।
भूषन बनमाला, नयन विशाला, शोभा सिंधु खरारी ॥

(ख) माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला, अतिप्रिय शीला, यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, हुइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिँ,हरिपद पावहिँ,ते न परहिँ भवकूपा॥
(तुलसीदास)

३४. ताटंक

ताटंक के प्रत्येक पाद में ३० मात्राएं होती हैं । यति १६ और १४ मात्राओं पर होती है। हर चरण के अन्त में मगण (ऽ ऽ ऽ) होता है। जैसे—

(क) वन्दनीय वह देश जहाँ के, देशी निज-अभिमानी हों।
बान्धवता में बँधे परस्पर, परता के अज्ञानी हों॥
निन्दनीय वह देश जहाँ के, देशी निज-अज्ञानी हों।
सब प्रकार परतंत्र पराई, प्रभुता के अभिमानी हों॥
(श्रीधर पाठक)

(ख) देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग के लाते हैं॥
धूम-धाम से साज-बाज से, वे मंदिर में आते हैं।
मुक्ता मणि बहुमूल्य वस्तुएं, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं॥

(ग) कानपूर के नाना के मुँह, बोली बहिन छबीली थी।
लक्ष्मीबाई नाम पिता की, वह सन्तान अकेली थी॥
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी।
बरछी ढाल कृपाण कटारी, उस की यही सहेली थी॥

(घ) इन की गाथा छोड़ चलें हम, झाँसी के मैदानों में।
जहां खड़ी है लक्ष्मीबाई, मर्द बनी मर्दानों में॥

लैफ्टिनेंट वौकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में।
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व अ-समानों में॥
(सुभद्राकुमारी चौहान)

३८. लावनी *

लावनी, तारंक का ही एक भेद है। इस की मात्रा-संख्या और यति-स्थल तारंक के तुल्य ही हैं। भेद केवल यह है कि इस के अन्त में गुरु-लघु का कोई बंधन नहीं। जैसे—

(क) किसी-किसी अहि के मणि होती, खल के भी विद्या वैसे।
मगर भयंकर दोनों ही हैं, इन से बचो बने जैसे॥
वह बाहर से कुटिल, मलिन यह, वैसा ही है भीतर से।
वह आश्रित मलयाचल का यह, आश्रय लहे धनी नर से॥

---

* कई विद्वानों का मत है कि लावनी के प्रत्येक पाद में २२ मात्राएं होती हैं। पादान्त का वर्ण गुरु होता है और २, १०, १० मात्राओं पर यति होती है। जैसे—

क्या, लहू रगों में रंग, नहीं है लाता?
क्या, है न कपिल गौतम, कणाद से नाता?
क्या, नहीं गीत गीता, का जी उमगाता?
क्या, है न मदनमोहन, का वचन रिझाता?
मुख, लाली रख लो ऐ, माई के लालो।
घर, देखो भालो सँ,भलो और सँभालो॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(ख) गुणी जनों के मंत्रौषधि से, चटपट उसका विष उतरे।
अपने मंत्रों से गुणियों का, सर्वनाश यह किन्तु करे॥
दोनों के प्रतिकार तीन हैं, विद्वानों ने बतलाए।
मुख-मर्दन या दान्त तोड़ना, या हट जाना जब आए॥
(रूपनारायण पांडेय)

(ग) नहीं दान है नहीं दक्षिणा, ख़ाली हाथ चली आई।
पूजा की भी विधि न जानती, फिर भी नाथ चली आई॥
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो।
दान-दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारिन को समझो॥

(घ) मैं उन्मत्त प्रेम की लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ भी है यही पास है, इसे चढ़ाने आई हूँ॥
चरणों पर अर्पण है इस को, चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो॥
(सुभद्रा कुमारी चौहान)

(ङ) होगा नहीं कहीं भी ऐसा, अति दुरात्मा वह प्राणी।
अपनी प्यारी मातृभूमि है, जिससे नहीं गई जानी॥
"मेरी जननी यह भूमि है", इस विचार से जिसका मन।
नहीं उमंगित हुआ वृथा है, उसका पृथ्वी पर जीवन॥

(च) क्या कोई ऐसा है जिसका, मन न हर्ष से भर जाता।
देश-विदेश घूम कर जिस दिन, वह अपने घर को आता॥
यदि कोई है ऐसा तो तुम, जाँचो उस को भले प्रकार।
नाम न लेता होगा कोई, करता नहिँ होगा सत्कार॥

(छ) पावै वह उपाधि यदि उत्तम, अथवा लक्ष्मी का भंडार।

लंबा-चौड़ा नाम कमा कर, चाहे हो जावे मतवार॥
उस की सब पदवियाँ व्यर्थ हैं, उसके धन को है धिक्कार।
केवल अपने तन की सेवा, करता है जो विविध प्रकार॥
(गौरीदत्त वाजपेयी)

३६. कुकुभ

कुकुभ छन्द के प्रत्येक पाद में ३० मात्राएं होती हैं। यति १६, १४ मात्राओं पर होती है। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं। जैसे—

(क) तू शशि मैं चकोर तू स्वाती, मैं चातक तेरा प्यारे।
तू घन मैं मयूर तू दीपक, मैं पतंग ऐ मतवारे॥
तू धन मैं लोभी तू सरबस, मैं अति तुच्छ सखा तेरा।
सब प्रकार से परम सनेही, मैं तेरा हूँ तू मेरा॥
(वियोगी हरि)

(ख) ब्रज-ललना जसुदा सों कहती, अरज सुनो इक नँदरानी।
लाल तुम्हारे पनघट रोकें, नहीं भरन पावत पानी॥
दान अनोखो हम सों मांगें, करें फजीहत मन मानी।
भयो कठिन अब ब्रज को बसिबो, जतन करो कुछ महरानी॥

(ग) हँडुलि सीस गिरि ठनननन मोरी, तुचक पुचक कहुँ ढरकानी।
चुरियाँ खनकीं खनननन मोरी, करक करक भुँइ बिखरानी॥

१—इस कविता में ऐसे कई स्थल हैं जहाँ यदि गुरु वर्णों का लघुवत् उच्चारण करें तभी मात्रा-संख्या और गति-नियम पूरे रहते हैं। इस लिए उन्हें लघु ही गिना और पढ़ा जायगा।

पायजेब बज छनननन मोरी, टूक टूक सब छहरानी।
बिछियाँ झनकैं झनननन मोरी, हेरत हूँ नहिँ दिखरानी॥
(घ) लालन बरजो न कछू तरजो, करो कछू ना निगरानी।
जाय कहेंगी नंद-बबा सों, न्याय कछुक दै हैं छानी॥
कहि सकुचानी दृग ललचानी, जसुदा मन की पहचानी।
बड़ी सयानी अवसर जानी, बोली बानी नय-सानी॥
(ङ) उत तें आए कुँवर कन्हाई, लखी मातु कछु घबरानी।
कह्यो मातु ये झूठी सब मुहिँ, पकर लेत बालक जानी॥
माखन मुख बरजोरी मेलत, चूमि कपोलन गहि पानी।
नाच अनेकन मोहिं नचावैं, रंग तरंगन सरसानी॥
(च) भागत हू न पाछो छोड़ें, बड़ी हठीली गुन मानी।
मुहिँ पहरावत लहँगा लगुरा, पहिरि चीर कोई मरदानी॥
थेइ थेइ थेइ मुहिँ नाच नचावत, नित्य नेम मन मह ठानी।
मन मोहन की मीठी मीठी, सुनत बात सब मुसकानी॥
(भानु कवि)

३७. रुचिरा

१.—ऊपर ३०, ३० मात्राओं वाले इन पांच छन्दों का वर्णन किया है—चौपैया, ताटङ्क, लावनी, कुकुभ, रुचिरा। चौपैया और रुचिरा तो यति-भेद के कारण ही शीघ्र पहचाने जा सकते हैं। ताटङ्क, लावनी और कुकुभ की यति भी समान मात्राओं पर पड़ती है इस लिए इन की पहचान में अधिक सावधान होना पड़ता है। जब चारों पदों के अन्तिम तीनों

रुचिरा के चारों चरणों में ३०, ३० मात्राएं होती हैं । यति १४, १६ मात्राओं पर होती है । प्रत्येक पाद का अन्तिम वर्ण गुरु होता है । जैसे—

मत्तं धरौ मनु और कला, जल गंतं सुधार रचौ रुचिरा ।
सन्त करै उपकार सदा, जासों सत्कीर्त्ति रहै सुचिरा ॥
या जग में इक सार यही, नर जन्म लिए कर याहि फला ।
राम लला भजु राम लला, भजु राम लला भजु राम लला ॥
(भानु कवि)

३८. वीर (अन्यनाम—मात्रिक सवैया

वीर के प्रत्येक पाद में ३१ मात्राएं होती हैं । १६, १५ मात्राओं पर यति होती है । अन्तिम दो वर्ण गुरु, लघु होते हैं । जैसे—

(क) हे वैदिक-दल के नर नामी, हिंदू-मंडल के करतार ।
स्वामि सनातन सत्य धर्म के, भक्ति-भावना के भरतार ॥
सुत बसुदेव देवकी जी के, नंद यशोदा के प्रिय लाल ।
चाहक चतुर रुक्मिणी जी के, रसिक राधिका के गोपाल ॥

(ख) भड़क भुला दो भूत काल की, सजिए वर्त्तमान के साज ।
फैशन फेर इंडिया भर के, गोरे गाड बनो ब्रजराज ॥

वर्ण गुरु हों तो उसे ताटङ्क समझें; जब अन्तिम दो दो वर्ण गुरु हों तो उसे कुकुभ जानें; और जब पादान्त में गुरु-लघु का विशेष नियम न हो तो उसे लावनी मानें । २. मनु और कला (१४+१६) मात्राएं रखो । ३. अन्त में गुरु ।

गौर-वर्ण वृषभानु-सुता का, काढ़ो काले तन पर तोप।
नाथ उतारो मोर-मुकुट को, सिर पै सजो साहिबी टोप॥
(ग) पौडर, चंदन पोंछ, लपेटो, आनन की श्री ज्योति जगाय।
अंजन अँखियों में मत आँजो, आला ऐनक लेहु लगाय॥
रवधर कानों में लटका लो, कुंडल काढ़, मेकराफ़ून।
तज पीताम्बर कम्बल काला, डांटो कोट और पतलून॥
(घ) पटक पादुका पहिनो प्यारे, बूट इटाली का लुकदार।
डालो डबल वाच पाकट में, चमके चेन कंचनी चार॥
रख दो गांठ गठीली लकुटी, छाता बेंत बगल में मार।
मुरली तोड़ मरोड़ बजाओ, बांकी बिगुल सुने संसार॥
(ङ) वैनतेय तज व्योम-यान पै, करिए चारों ओर विहार।
फक फक फूँ फूँ फूँको चुरटें, उगलें गाल धुआं की धार॥
यों उत्तम पदवी फटकारो, माधो, मिस्टर नाम धराय।
बाँटो पदक नई प्रभुता के, भारत जाति भक्त हो जाय॥
(नाथू राम शङ्कर)

(च) बादशाह गरजा-"ओ काफ़िर, सोच-समझ कर तू मुँहखोल।
मुसलमान हो जा, या अब क्या तुझ को भी मरना है बोल"?
"करो मुसलमानी उन को जो, बेचारे बच्चे अनजान।
चाहे मेरा गला काट लो मैं सदैव हिंदू-सन्तान॥"
(छ) "गला नहीं, सिर पर आरा रख, डालो इसे इसी दम चीर।"
दांत पीसने लगा क्रोध से, आज्ञा देकर आलमगीर।
चिरता रहा ठूँठ सा द्विजवर, प्रणव नाद का निश्चल ठाठ।

उसे सुनाते रहे अन्त तक, गद् गद् गुरु 'जपुजी' का पाठ ॥

(ज) बोला फिर कर बादशाह फिर,
"तेग बहादुर, अब भी आव।
नहीं आप तुम बुतप्रस्त हो,
पूरे मुसलमान हो जाव ॥"
"नहीं मूर्ति-पूजक मैं फिर भी,
वे मेरे ही भाई-बंद ।
प्रतिमा के मिस जो प्रभु की ही,
पूजा करते हैं स्वच्छंद ॥

(झ) काँप उठा आकाश अचानक,
प्रान्त प्रान्त कर उठा पुकार।
सुना सभी ने कहा सभी ने—
"सिर दे डाला दिया न सार ॥"
उबल उठे उत्तप्त पंचनद,
रहा क्षोभ का वार न पार।
हर हर करके हहराये वे,
"सिर दे डाला दिया न सार ॥"

(मैथिलीशरण गुप्त)

३९. त्रिभंगी

त्रिभंगी के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राएं होती हैं। यति १०, ८, ८, ६ मात्राओं पर होती है। अन्तिम वर्ण प्रायः गुरु होता है। इसके किसी भी चौकल में जगण न आना चाहिए। जैसे—

(क) मुनि साप जो दीन्हा, अति भल कीन्हा,
परम अनुग्रह, मैं माना ।
देखिउँ भरि लोचन, हरि भवमोचन,
इहै लाभ शं,कर जाना ॥
विनती प्रभु मोरी, मैं मति भोरी,
नाथ न माँगौ, वर आना ।
पदकमल परागा, रस अनुरागा,
मम मन-मधुप क,रै पाना ॥
(तुलसीदास)

(ख) करि वदन विमंडित, ओज अखंडित,
पूरण पंडित ज्ञानपरं ।
गिरिनन्दिनि नंदन, असुर निकंदन,
सुर उर चंदन, कीर्तिकरं ॥
भूषण मृग लक्षण, वीर विचक्षण,
जन प्रण रक्षण पाशधरं ।
जय जय गणनायक, खलगणघायक,
दास सहायक, विघ्नहरं ॥
(दास)

(ग) परसत पद पावन, शोक नशावन,
प्रकट भई, तप पुंज सही ।
देखत रघुनायक, जन सुखदायक,
सम्मुख ह्वै कर, जोरि रही ॥

१—लघुवत् पढ़ा जायगा ।

अति प्रेम अधीरा, पुलक शरीरा,
मुख नहिं आवै, बचन कही।
अतिशय बड़भागी, चरणन लागी,
जुगल नयन जल, धार बही॥
(सरस पिंगल)

(घ) दशरथसंघाती, सकल बराती,
बनि बनि मंडप, माँह गये।
आकाश विलासी, प्रभा प्रकाशी,
जलज गुच्छ जनु, नखत नये॥
अति सुंदर नारी, सब सुख कारी,
मंगल गारी, देन लगीं।
बाजे बहु बाजत, जनु घन गाजत,
जहाँ तहाँ शुभ, शोभ जगीं॥

(ङ) बाजे बहु बाजैं, तारनि साजैं,
सुनि सुर लाजैं, दुख भाजैं।
नाचैं नव नारी, सुमन शृँगारी,
गति मनुहारी, सुख साजैं॥
वीनानि बजावैं, गीतनि गावैं,
मुनिन रिझावैं, मन भावैं।
भूषण पट दीजै, सब रस भीजै,
देखत जीजै, छवि छावैं॥

(च) दुर्जन दल घायक, श्री रघुनायक,
सुख दायक त्रिभु-,वन शासन।

सोहैं सिंहासन, प्रभा प्रकाशन,
कर्मविनाशन, दुखनाशन ॥
सुग्रीव विभीषन, सुजन बंधुजन,
सहित तपोधन, भूपति गन ।
आये सँग मुनि जन, सकल देवगण,
मृग तप कानन, चतुरानन ॥
(केशवदास)

४०. समान सवैया

समान सवैया के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राएं होती है। यति १६, १६ मात्राओं पर होती है और पादान्त में भगण (ऽ॥) होता है। जैसे—

सोरह सोरह मत्त धरौ जू, छंद समान सवैया सोभत।
श्री रघुनाथ चरण नहिं सेवत, फिरत कहा तू इत उत जोहत॥
जब लगि शरणागत न प्रभु की, तब लगि भव-बाधा तुहिबाधत।
पापपुंज हों छार छनक में, शुभ श्री राम नाम आराधत॥
(भानु कवि)

४१. दंडकला[1]

दंडकला के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राएं होती हैं। यति

१—ऊपर ३२, ३२ मात्राओं के तीन छन्दों (त्रिभंगी, समान सवैया और दंडकला) का वर्णन किया गया है। तीनों की यति और पादान्त के वर्ण भिन्न भिन्न हैं, इसलिए इन की पहचान में कोई कठिनता नहीं पड़ती।

१०, ८, १४ मात्राओं पर होती है । पादान्त में सगण (॥ ऽ) होता है । जैसे—

(क) शिव विष्णु ईश बहु, रूप तुई नभ,
तारा चंद्र दिवाकर है ।
अम्बा धारानल, शक्ति स्वधा स्वा,हा
जल पौन दिवाकर है ॥
हम अंशा अंश स,मझते हैं सब,
खाक जाल से पाक रहैं ।
सुन लालबिहारी, ललित ललन हम,
तो तेरे ही चाकर हैं ॥

(ख) हम खूब तरह से, जान गये जै,सा
आनँद का कंद किया ॥
सब रूप सील गुण, तेज पुंज ते,रे
ही तन में बंद किया ॥
तुझ हुस्न प्रभा की, बाकी ले फिर,
विधि ने यह फरफंद किया ।
चम्पकदल सोनजु,ही नरगिस
चा,मीकर चपला चंद किया ॥

——— (सीतल)

अभ्यासार्थ प्रश्न

(क) १. तोमर, उल्लाला, चन्द्र, शक्ति—इन छन्दों का स्वरूप सोदाहरण स्पष्ट लिखो ।

२. हंसगति, चान्द्रायण, उपमान, गीतिका, वीर—इन छन्दों

के उदाहरणों में इन के लक्षणों को समन्वित करके दिखाओ ।

३. तोमर, उल्लाला और सखी छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर स्पष्ट और संक्षिप्त होना चाहिए।

४. आप ने १४, १४ मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं, उन का परस्पर भेद स्पष्टतया उदाहरण-सहित दिखाओ ।

५. सखी, हाकलि और मधुमालती छन्द, छन्दों के कौन से प्रकार के अन्तर्गत हैं और क्यों ? इन का अन्तर स्पष्टतया प्रकट करो ।

६. चौबोला, चौपई और गुपाल-इन छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिखो ।

७. १५, १५ मात्राओं के छन्द कौन कौन से हैं ? उन का पारस्परिक भेद एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

८. चौपई, चौपाई, चौबोला और चौपैया छन्दों का स्वरूप, परस्पर भेद और उदाहरण विशद रीति से लिखो

९. पादाकुलक और चौपाई की चाल तथा मात्रा-संख्या समान है। फिर इन दोनों में भेद क्या है ? उदाहरण द्वारा उत्तर की पुष्टि करो ।

१०. पद्धरि और शृंगार छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर सोदाहरण हो ।

११. १६, १६ मात्राओं के छन्दों के नाम तथा लक्षण-मात्र लिखो

१२. पीयूषवर्ष, आनंदवर्धक और सुमेरु छन्दों के लक्षण और उदाहरण देकर इनके पारस्परिक भेद को स्पष्ट दिखाओ

१३. उन चार मात्रिक छन्दों के जो आप को सब से प्यारे लगते हैं, दो दो उदाहरण लिखो।

१४. हरिगीतिका, लावनी और चौपाई छन्दों के उदाहरण लिख कर सिद्ध करो कि ये तीनों मात्रिक सम छन्द हैं।

(ख) निम्न-लिखित पद्य, पद्यार्ध अथवा पाद किन छन्दों में हैं? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

१. तब चले बाण कराल। फुंकरत जनु बहु व्याल॥
कोप्यो समर श्री राम। चल विशिख निशित निकाम॥

२. हिन्दू, न हो आप अनुदार। छोड़ो वे सङ्कीर्ण विचार॥
किया तुम्हीं ने जगदुपकार। करो आज अपना उद्धार॥

३. हम ने तो अस्तित्व तक।
नष्ट तुम्हारा कर दिया॥
तुम ने अहा! प्रकाश से।
अखिल भुवन को भर दिया॥

४. संत समागम संतत सजौ। शरणागत है प्रभु को भजौ॥

५. प्रभु तउ अति प्रीत प्रकासी। रचि रास कियो सुख रासी॥

६. दुःस्वप्न दुख, पहुँचायँगे। क्या शान्ति झँप, कर पायँगे॥

७. मुझे राज्य का खेद नहीं। राम भरत में भेद नहीं॥

८. "मैं न सहूँगा, लक्ष्मण, तू। नीरव क्यों है इस क्षण तू॥"
"मां, क्या करूँ? कहो मुझ से। क्या है कि जो न हो मुझ से॥

९. भागे मगोड़ भीरु भिड़ा. धीर न कोई।
मारे महीप वृन्द बचा, वीर न कोई॥

१०. महलों ने दी आग झोपड़ी, ने ज्वाला सुलगाई थी।

यह स्वतंत्रता की चिनगारी, अन्तरतम से आई थी॥

११. तू गरीब को निवाज, हौं गरीब तेरो।
वारक कहिए कृपाल, तुलसिदास मेरो॥

१२. लोचन अभिरामा,तन घनश्यामा,निज आयुध भुजचारी।
भूषन वनमाला, नयन विशाला, शोभा-सिंधु खरारी॥

१३. अबहुँ सुमिर हरि नाम शुभ, काल जात बीता।
हाथ जोर बिनती करौं, नाहिँ जात रीता॥

१४. कृष्णा सुभद्रा आदि को अव,लोक कर रोते हुए।
हरि के हृदय में भी वहाँ कुछ,कुछ करुणरस-कण चुए॥

१५. विद्या का भरपूर, इष्ट अभ्यास किया था।
पर औरों की भाँति, न कोई पास किया था॥

१६. उसे व्यापती है तो केवल, यही एक भय-बाधा।
"कह दूँगी, खेलेगी तेरे, संग न मेरी राधा"॥

१७. गंभीर मौन ऊँची, वे शैल-श्रेणियाँ क्यों।
चिर-काल से खड़ी हैं ?,किसकी उन्हें प्रतीक्षा॥

१८. पाय के नर-देह प्यारे, व्यर्थ माया में न भूल।
हो रहो शरणै हरी के, तौ मिटे भव जन्म शूल॥

१९. देह पावन ह्वै गई पद-पद्म को पय पाइ।
पूजतै भयौ वंश पूजित, आशु ही मुनिराय॥

२०. निर्दय बन कर करो और भी, जो करना हो और।
निज विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किसी भी ठौर॥

२१. अन्ध-अज्ञानी, अँधेरे, में पड़े मर जायँगे।
आप डूबेंगे अविद्या, देश में भर जायँगे॥

तृतीय अध्याय

मात्रिक अर्धसम छन्द (साधारण)

जिन मात्रिक छन्दों के पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पादों में मात्रा-नियम समान हो, वे मात्रिक अर्धसम होते हैं।

१. बरवै

बरवै के विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों में १२, १२ मात्राएं होती हैं और सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों में ७, ७; अर्थात् कुल ३८। दोनों दलों के अन्त में जगण बहुत मधुर होता है, पर कभी कभी तगण भी प्रयुक्त होता है। जैसे—

(क) कुंकुम तिलक भाल श्रुति, कुंडल लोल।
काकपंच्छ[1] मिलि सखि कस, लसत कपोल॥

(ख) सम सुबरन सुखमाकर[2], सुखद न थोर।
सीय अंग सखि कोमल, कनक कठोर॥

(ग) सिअ मुख सरद कमल जिमि, किमि कहि जाय।

१—लूटरियाँ, ज़ुल्फ़। २—शोभा की खान।

निसि मलीन वह निसि दिन, यह बिगसाय ॥

(घ) चंपक हरवा[1] अँग मिलि, अधिक सुहाइ ।
जानि परै सिय हियरे, जब कुम्हिलाइ ॥

(ङ) सिअ तुअ अंग रंग मिलि, अधिक उदोत ।
हार बेलि[2] पहिरावौं, चंपक होत ॥

(च) गरब करहु रघुनंदन, जनि मन माँह ।
देखहु आपनि मूरति, सिय कै छाँह ॥

(छ) स्याम गौर दोउ मूरति, लछिमन राम ।
इन ते भइ सित कीरति, अति अभिराम ॥

(ज) बिरह आगि उर ऊपर, जब अधिकाय ।
ए अँखियाँ दोउ बैरिनि, देहिँ बताय ॥

(झ) अब जीवन कै है कपि, आस न कोइ ।
कनगुरिया[3] कै मुँदरी, कंकन होइ ॥

(ञ) केहि गनती महँ गनती, जस बन घास ।
राम जपत भये तुलसी, तुलसीदास ॥

(बरवै रामायण)

(ठ) पीतम मिले सपनवाँ, भो सुख खानि ।
आनि जगायेसि[4] चेरिया, भइ दुखदानि ॥

(ड) बिरहिन और बिदेसिया, भौ इक ठौर ।

१—हार । २—एक सफेद फूल । ३—सब से छोटी अँगुली ।
४—इन छन्दों में कहीं कहीं गुरु वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़ेगा, तब ही छन्दों की गति ठीक होगी ।

पिय मुख तकत तिरियवा, चन्द चकोर ॥

(ढ) खेलत जानिसि टोलवा[1], नंदकिसोर ।

छुइ वृषभानु कुँअरिया, होइ गइ चोर ॥

(रहीम)

२. अतिबरवै

अतिबरवै के चारों चरणों में ४२ मात्राएं होती हैं । विषम चरणों में १२, १२ और सम चरणो में ९, ९ । जैसे—

प्रेम प्रीति कौ बिरवा, भल चल्यौ लगाय ।

सींचन की सुधि लीज्यौ,कहुँ मुरझि न जाय ॥

३. दोहा

दोहे के चारों चरणों में कुल ४८ मात्राएं होती हैं । विषम चरणों में १३, १३ और सम में ११, ११ । विषम चरणों के आरंभ में जगण नहीं होता और सम चरणों का अन्तिम वर्ण लघु ही होता है । जैसे—

(क) जहाँ राम तहँ काम नहिँ, जहाँ काम नहिँ राम ।

तुलसी कबहूँ होत नहिँ, रवि रजनी इक ठाम ॥

(ख) गंगा यमुना सरसुती, सात सिन्धु भरपूर ।

तुलसी चातक के मते, बिन स्वाती सब धूर ॥

(तुलसीदास)

(ग) गर्भवास अति त्रास में, जहाँ न एको अंग ।

सुनि सठ तेरो प्राणपति, तहाँ न छाँड़्यो संग ॥

१—टोली ।

(घ) देखो करनी कमल की, कीनों जलसों हेत ।
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहिँ समेत ॥
(सूरदास)

(ङ) जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लिपटात ।
ज्यों नर डारत वमन कर, श्वान स्वाद सों खात ॥

(च) कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।
पुरुष पुरातन की वधू, क्यों न चंचला होय ॥

(छ) 'रहिमन' अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेय ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय ॥
(रहीम)

(ज) सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यह बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल ॥

(झ) भूषन-भार सँभारि है, किमि यह तन सुकुमार ।
सूधे पाँय न परत धर, सोभा ही के भार ॥

(ञ) कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय ।
तुमहू लागी जगत-गुरु, जग-नायक जग-बाय ॥
(बिहारी)

(ट) मुँह माँगे, रण सूरमाँ, देत दान पर हेतु ।
सीस दान हू देत पै, पीठ दान नहीं देतु ॥

(ठ) पर-भाषा पर-भाव, पर,-भूषण पर-परिधान ।
पराधीन जन की अहै, यह पूरी पहचान ॥
(वियोगी हरि)

(ड) सहज शत्रु हैं मनुज के, चिर-निद्रा तन-रोग ।

ऋण लालच सँताप छल, क्रोध मदादिक भोग ॥

(ढ) सुगुण नहीं सौजन्य सम, शील सदृश शृङ्गार ।
विद्या-सम वैभव नहीं, देखो मित्र विचार ॥

(ण) धन की शोभा धर्म है, प्रिय की शोभा प्रीति ।
कुल की शोभा पुत्र है, नृप की शोभा नीति ॥

(शिव दुलारे त्रिपाठी)

(त) बिना बीज क्यों बेलि हो, बिना तिलों क्यों तेल ।
किसी खिलाड़ी के बिना, है न जगत का खेल ॥

(थ) कौन पास उस का करे, जिसे नहीं निज पास ।
पूज पराये पाँव को, किस की पूजी आस ॥

(द) मिले बुरों में कब भले, यह कहना है भूल ।
काँटों में रहते नहीं, क्या गुलाब के फूल ॥

(अयोध्या सिंह उपाध्याय)

VIII ४. सोरठा

सोरठे के चारों चरणों में कुल ४८ मात्राएं होती हैं। विषम चरणों में ११, ११ और सम में १३, १३। सोरठे के विषम चरणों की तुक अवश्य मिलनी चाहिए। सोरठा, दोहे का ठीक उलटा होता है। जैसे—

(क) जिस के आनन चार, उत्तम अन्तःकरण हैं ।
दुहिता परम उदार, उस विरञ्चि की भारती ॥

(ख) प्रकटे महदुद्योत, ब्रह्म विवेक दिनेश का ।
चमकें मत-खद्योत, अब न अविद्या रात में ॥

(ग) मङ्गल-मूल महेश, दूर असमङ्गल को करे ।
ब्रह्म विवेक दिनेश, मोह महातम को हरे ॥
(नाथूराम शङ्कर)

(घ) फूले फलइ न बेत, यदपि सुधा बरसहिँ जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिँ बिरंचि सम ॥

(ङ) जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति कि रीति भल ।
बिलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत हो ॥

(च) सो नर क्यों दसकंध, बालि वधे[1]उ जे[2]हि एक सर ।
बीसहु लोचन अंध, धिग तव जनम कुजाति जड़ ॥

(छ) तव सोनित की प्यास, तृषित राम-सायक-निकर ।
तजौं तोहिँ तेहि त्रास, कटु जल्पक निसिचर अधम ॥
(तुलसीदास)

८. उल्लाल

उल्लाल छंद के चारों चरणों में कुल ५६ मात्राएं होती हैं। विषम चरणों में १५, १५ और सम चरणों में १३, १३। जैसे—

(क) कुछ मिथ्या से होता नहीं, आँख उघार निहार लो ।
सुख चाहो तो सद्‌भाव से, शंकर को उर धार लो ॥

(ख) गरिमा न गही गोपाल की, ज्ञान न गुणियों से लिया ।
शठ शंकर लोभी लालची, पाय प्रचुर पूँजी जिया ॥

१, २—इन वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़ेगा, तभी छन्द की चाल ठीक रहेगी।

(ग) नव द्रव्यों के अति-योग से, उपजा सब संसार है ।
इस अस्थिर के अस्तित्व का, शंकर तू करतार है ॥
(नाथूराम शंकर)

(घ) लंगूर लपेटत पटकि भट, 'जयति राम जय' उच्चरत ।
तुलसीस पवननंदन अटल, जुद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ॥
(ङ) बलि जाउँ राम करुनायतन, प्रनतपाल पातक हरन ।
बलि जाउँ राम कलि-भय-विकल, 'तुलसिदास' राखिय सरन ॥
(च) जय दंडकवन-पावन-करन, ' तुलसिदास ' संसय-समन ।
जगविदित जगतमनि जयति जय, जय जय जय जानकि-रमन ॥
(तुलसीदास)

(छ) उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायँगे ।
होकर भव-बंधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायँगे ॥
(ज) वह शक्ति कहाँ, हा ! क्या करें !, हम को क्यों लज्जा न हो ।
हम मातृभूमि ! केवल तुझे, शीश झुका सकते अहो ॥
(झ) हे शरणदायिनी देवि ! तू करती सब का त्राण है ।
हे मातृभूमि ! सन्तान हम, तू जननी तू प्राण है ॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

(ञ) जजमान सूम मरि जाहि तौ, काहि सुमिरि दुख रोइये ।
कवि "गड्डु" कहै मरि जाय सो, जाहि सुने सुख सोइये ॥
(ट) रति कोटि काम अभिराम अति, दुष्ट निकंदन गिरिधरन ।
आनंद कंद ब्रजचंद प्रभु, जय जय जय असरन-सरन ॥
(कविता कौमुदी)

६. रुचिरा द्वितीय

इसके चारों चरणों में कुल ६० मात्राएं होती हैं। विषम चरणों में १६, १६ और सम में १४, १४। अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं। यह छन्द, मात्रिक सम छन्द कुकुभ का आधा है। जैसे --

(क) हे भूतेश महाबलधारी, तू सब संकट-हारी है।
तेरी मंगल-मूल-दया का, जीव-यूथ अधिकारी है॥

(ख) धर्म धार जो प्राणी तुझ से, पूरी लगन लगाता है।
विद्या, बल देता है उसको, भ्रम का भूत भगाता है॥

(ग) हे सुविश्वकर्मा शिव स्रष्टा, तू कब ठाली रहता है।
निर्विराम तेरी रचना का, स्रोत सदा से बहता है॥

(घ) जो आलस्य विसार विवेकी, तेरे घाट उतरता है।
उस उद्योग-शील के द्वारा, सारा देश सुधरता है॥

(नाथूराम शंकर)

(ङ) प्रतिध्वनि! प्रतिध्वनि! क्यों रोती है?, जले हृदय को रोने दे।
आँसू की धारा से उसको, सारा विश्व भिगोने दे॥

(च) सुख मिलता है व्यथित हृदय को, अपनी व्यथा सुनाने में।
स्वयं तड़पने में सुनने वा,लों को भी तड़पाने में॥

(भगवती चरण वर्मा)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. बरवै और अतिबरवै छन्दों के लक्षण और उदाहरण देकर इनके पारस्परिक अन्तर को स्फुट करो।

२. दोहा और सोरठा छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिख कर इनके भेद को स्पष्ट करो।

३. उल्लाल और उल्लाला छन्दों में क्या अन्तर है? एक एक उदाहरण देकर उत्तर को पुष्ट करो।

४. रुचिरा और रुचिरा द्वितीय के भेद को स्पष्टतया लिखो। दोनों का एक एक उदाहरण भी दो।

५. बरवै, दोहा और रुचिरा द्वितीय का एक एक उदाहरण देकर उन में उन के लक्षणों को समन्वित करके दिखाओ।

६. मात्रिकार्ध-सम छन्दों में किस का प्रचार सब से अधिक है? उसके ३–४ उदाहरण दो।

७. किन्हीं दो अर्धसम छन्दों के उदाहरण लिख कर सिद्ध करो कि वे अर्धसम छन्द हैं।

८. निम्नलिखित पद्यों के छन्द बता कर, अपनी ओर से भी उन उन छन्दों का एक एक उदाहरण दो।

(क) रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवाया खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

(ख) जिन का पुण्य प्रताप, कोई कह सकता नहीं।

महिमा अपनी आप, समझाते वे सब कहीं ॥

(ग) चौंके बिरंचि संकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यौ।
ब्रह्मांड खंड कियो चंड धुनि, जबहिँ राम सिवधनु दल्यौ

(घ) नाम भरोस नाम बल, नाम सनेहु ।
जनम जनम रघुनंदन, तुलसिहिँ देहु ॥

(ङ) जिस गुण-हीन ज्ञान-सागर ने । सब गुणधारी धारे हैं।
उस के परम भक्त बुध-योगी । श्री गुरुदेव हमारे हैं ॥

चतुर्थ अध्याय

मात्रिक विषम छन्द (साधारण)

जिन मात्रिक छन्दों के चार या तीन चरणों में मात्रा-नियम अलग अलग हो, वे मात्रिक विषम कहे जाते हैं। इसके अतिरिक्त जिन मात्रिक छन्दों की चरण-संख्या चार से न्यून या अधिक हो, वे भी मात्रिक विषम ही होते हैं।

१. कुँडलिया

कुँडलिया के छः पाद होते हैं। ऊपर एक दोहा होता है और नीचे एक रोला। दोहे के दोनों दल कुँडलिया के प्रथम दो पाद माने जाते हैं। इस तरह प्रत्येक पाद में २४ मात्राएं होने से समस्त छन्द में १४४ मात्राएं होती हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि दोहे का प्रथम शब्द रोला का अन्तिम शब्द होता है, अर्थात् कुँडलिया का आदिम और अन्तिम शब्द एक ही होता है। दोहे का चतुर्थ चरण, रोला के प्रथम चरण के आरंभ में अवश्य आना चाहिए। जैसे—

(क) साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार ॥
तब लग ताको यार, यार सँग ही सँग डोलैं ।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिँ बोलैं ॥
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई ।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साईं ॥

(ख) साईं अवसर के पड़े, कौन सहे दुख द्वन्द्व ।
जाय बिकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द ॥
वै राजा हरिचंद, करै मरघट रखवारी ।
धरे तपस्वी वेष, फिरे अर्जुन बलधारी ॥
कह गिरिधर कविराय, तपै वह भीम रसोई ।
को न करै घटि काम, परे अवसर के साईं ॥

(ग) बिना बिचारे जो करै, सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान, राग रँग मनहिँ न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ॥

(घ) रहिए लटपट काट दिन, वरु घामें माँ सोय ।
छाँह न वाकी बैठिए, जो तरु पतरो होय ॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दै है ।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जै है ॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये ।

पत्ता सब झरि जाय, तऊ छाया में रहिए ॥

(ङ) सोना लादन पिय गये, सूना करि गये देश ।
सोना मिला न पिय मिले, रूपा ह्वै गये केश ॥
रूपा ह्वै गये केश, रोय रँग रूप गँवाया ।
सेजन को बिसराम, पिया बिन कबहुँ न पाया ॥
कह गिरिधर कविराय, लोन बिन सबै अलोना ।
बहुरि पिया घर आव, कहा करिहौं लै सोना ॥
(गिरिधर कविराय)

(च) तोता तू पकड़ा गया, जब था निपट नदान ।
बड़ा हुआ कुछ पढ़ लिया, तौ भी रहा अजान ॥
तौ भी रहा अजान, ज्ञान का मर्म न पाया ।
जीवन पर[1] के हाथ सौंप निज घर बिसराया ॥
कहैं 'मीर' समुझाय, हाय ! तू अब लौं सोता ।
चेता जो नहिँ आप, किया क्या पढ़ के तोता ॥

(छ) जा ने कीन्हो शमन है, मत्त मतंगन-मान ।
हाय दैव-वश सिंह सो, पर्यो पींजरे आन ॥
पर्यो पींजरे आन, श्वान के गन ढिग भूँकैं ।
विहँसैं ससा सियार, कान पै आके कूकैं ॥
'मीर' बात है सत्य, लोक में कहिगे स्याने ।
का पै कैसो समय, कबै परि है को जाने ॥

(ज) बगला बैठा ध्यान में, प्रातः जल के तीर ।

१—दूसरे ।

मानो तपसी तप करे, मल कर भस्म शरीर ॥
मल कर भस्म शरीर, तीर जब देखी मछली ।
कहैं 'मीर' ग्रसि चोंच, समूची फ़ौरन निगली ॥
फिर भी आवें शरण, बैर जो तज के अगला ।
उन के भी तू प्राण हरे, रे छी ! छी ! बगला ॥
(अमीर अली मीर)

छप्पय (अन्य नाम-षट्पदी)

छप्पय में छः पाद होते हैं । ऊपर चार पाद रोला के और नीचे दो पाद उल्लाला या उल्लाल के । इस लिए कहीं पर छप्पय में कुल १४८ मात्राएं होती हैं और कहीं पर १५२ । जैसे—

(क) कोई पीड़ा हुई, ज़रा-सी भी जब मुझ को ।
मुझ से दूना दुःख, हाय ! व्यापा तब तुझ को ॥
रात रात भर तुझे, दृगों में नींद न आई ।
जिस प्रकार हो सका, शीघ्र वह व्यथा मिटाई ॥
मेरे सुख में सुख था तुझे, दुख में दुःख रहा सदा ।
मुझ से सर्वत्र अभिन्न था, तेरा तन मन सर्वदा ॥

(ख) काटा मैं ने नई उठी दँतुली से तुझ को ।
किया और भी अधिक प्यार तब तू ने मुझ को ॥
छींट दिया जल शीत-काल में तेरे ऊपर ।
तब भी तू ने प्रेम किया माँ मेरे ऊपर ॥
जब इन बातों की याद ही, मुझ को आ जाती कभी ।

गद्गद हो जाता हृदय, आँखें भर आतीं तभी ॥
(सियारामशरण गुप्त)

(ग) बालक दीन अनाथ, हाय ! अपनाय न पाले ।
दलित देश के साथ, प्रेम कर कष्ट न टाले ॥
सङ्कट किया न दूर, अभागे विधवा-दल से ।
मान-दान भरपूर, न पाया मुनि-मंडल से ॥
गरिमा न गही गोपाल की, ज्ञान न गुणियों से लिया ।
शठ शङ्कर ! लोभी लालची, पाय प्रचुर पूँजी जिया ॥

(घ) सुन्दर शब्द प्रयोग, मनोहर भाव रसीले ।
दूषण-हीन प्रशस्त, पद्य भूषण भड़कीले ॥
प्रिय प्रसादता पाय, मर्म महिमा दरसावे ।
रसिकों पर आनंद, सुधा-शीकर बरसावे ॥
जिन के द्वारा इस भान्ति की, परम शुद्ध कविता कढ़े ।
उन कविराजों का लोक में, सुयश सदा शङ्कर बढ़े ॥
(नाथूराम शङ्कर)

(ङ) जिस की रज में लोट लोट कर बड़े हुए हैं ।
घुटनों के बल सरक सरक कर खड़े हुए हैं ॥
परमहंस-सम बाल्यकाल में सब सुख पाए ।
जिस के कारण धूल-भरे हीरे कहलाए ॥
हम खेले कूदे हर्षयुत, जिस की प्यारी गोद में ।
हे मातृभूमि, तुझ को निरख, मग्न क्यों न हों मोद में ॥

(च) जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज सारे ।
उस से हे भगवान, कभी हम रहें न न्यारे ॥

लोट लोट कर वहीं, हृदय को शान्त करेंगे।
उस में मिलते समय, मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृ-भूमि की धूल में, जब पूरे सन जायँगे।
हो कर भव-बंधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायँगे॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

(छ) *काटा हम ने और खूब पोटा भर भर कर।
पेल पेल कर तेल निकाला तुझ से जी भर॥
फिर दीपक में भर कर थोड़ा तूल[1] मिलाया।
निर्दयता से खोद खोद कर तुम्हें जलाया॥
हम ने तो अस्तित्व तक नष्ट तुम्हारा कर दिया।
तुम[2] ने अहा! प्रकाश से, अखिल भुवन को भर दिया॥
(मोहनलाल महतो)

(ज) जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू जग सुजस न लीनो।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू परकाज न कीनो॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू पर-पीर न जानी।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न आनी॥
मुच्छ नाहिँ वे पुच्छ सम, कवि 'भरमी' उर आनिये।
बचन-लाज नहिँ दान गति, तिहि मुख मुच्छ न मानिये॥

---

* छ और ज पद्यों में उल्लाला ५२ ५२ मात्राओं का है शेषसब में ५६, ५६ का।

१—मलमल कर। २—सरसों की ओर संकेत है।

(झ) ससि कलंक रावन वि,रोध हनुमन्त सो बनचर ।
कामधेनु ते पसू, जाय चिन्तामनि पत्थर ॥
अति रूपा तिय बाँझ, गुनी को निर्धन कहिये ।
अति समुद्र सो खार, कमल बिच कंटक लहिये ॥
जाये जु व्यास खेवट्टिनी, दुर्वासो आसन डिग्यो ।
कवि 'गीध' कहै सुनु रे गुनी, कोउ न कृष्ण निर्मल गढ्यो ॥

(ञ) को न क्रोध निरदह्यो, कामबस केहि[2] नहिँ कीन्हो ।
को न लोभ दृढ़फंद, बाँधि त्रासन करि दीन्हों ॥
कौन हृदय नहिँ लाग, कठिन अति नारिनयनसर ।
लोचनजुत नहिँ अंध, भयो श्री पाइ कौन नर ॥
सुर-नाग लोक महि मंडलहु, को जो मोह कीन्हो जय न ।
कह तुलसिदास सो ऊबरै, राख राम राजिवनयन ॥

३. मिलिन्दपाद

मिलिन्द-पाद किसी विशेष छन्द का नाम नहीं है। मिलिन्द, भँवरे को कहते हैं और पाद पाँव को। सो, जिस छन्द के, भँवरे के समान, छः पाद हों, वह मिलिन्द पाद होना चाहिए। पर बात ऐसी नहीं है। उपर्युक्त कुँडलिया और छप्पय छन्द छः छः पादों के हैं; परन्तु उन्हें मिलिन्दपाद नहीं कहते, कुडलिया और छप्पय ही कहते हैं । जिन मात्रिक-सम छन्दों अथवा वर्ण-सम वृत्तों के छः छः पाद रच दिए जाते हैं,

---

१, २—गति को ठीक रखने के लिए इन का उच्चारण लघुवत् होगा।

उन्हें ही उन छन्दों का मिलिन्दपाद कह देते हैं। पूर्व काल में यह चाल न थी। सम छन्द चार चार चरणों के ही हुआ करते थे। परन्तु काल के साथ साथ कवियों के अन्तःकरण में भी परिवर्तन होता रहता है। इसी लिए शंकर आदि कवियों ने छः छः पादों के छन्दों की रचना की है। जैसे, गीतिका मात्रिक सम छन्द है। गीतिका के नीचे गीतिका के दो पाद और रख दिए तो वह गीतिकात्मक मिलिन्दपाद कहा जायगा। इसका उदाहरण देखिए।

गीतिकात्मक मिलिन्दपाद

(क) तर्क झंझा के झकोले, झाड़ते चलने लगे।
युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे॥
पुण्य के पौधे फबीले, फूलने फलने लगे।
हाथ हत्यारे हठीले, मादकी मलने लगे॥
खेल देखे चेतना के, जड़ खिलौना खो गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय होगया॥

(ख) तामसी थोथे मतों की, मोह-माया हट गई।
ऐंठ की पोली पहाड़ी, खंडनों से फट गई॥
छूत छैया की अछूती, नाक लंबी कट गई।
लालची पाखंडियों की, पेट-पूजा घट गई॥
ऊत भूतों का बखेड़ा, डूब मरने को गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥

(नाथूराम शंकर)

४. आर्या

आर्याछन्द के प्रथम तथा तृतीय पादों में १२, १२, दूसरे में १८ और चौथे में १५ मात्राएं होती हैं। इस प्रकार चारों चरणों की कुल मात्रा-संख्या ५७ है। पादों के अन्तिम वर्ण गुरु होते हैं। इस छन्द का संस्कृत में ही अधिक प्रयोग है, हिन्दी में नहीं। हिन्दी में जैसे—

रामा रामा रामा, आठौं यामा जपौ यही नामा।
त्यागौ सारे कामा, पैहो बैकुण्ठ विश्रामा॥
(भानुकवि)

पंचम अध्याय

मात्रिक दंडक

जिन मात्रिक सम छन्दों के प्रत्येक चरण में मात्रा-संख्या ३२ से अधिक हो, उन्हें मात्रिक दंडक कहते हैं । इन के पाद इतने लंबे होते हैं कि बीच में सांस लेने के लिए अवश्य रुकना पड़ता है। यही दंड है और इसी से ये दंडक कहे जाते हैं।

१. द्वितीय झूलना

द्वितीय झूलना प्रत्येक पाद में ३७ मात्राएं होती हैं। यति १०, १०, १०, ७ मात्राओं पर होती है । पादान्त में यगण (। ऽ ऽ) होता है। जैसे—

१. कनक-गिरि-सृंग चढ़ि, देखि मरकट-कटक,[1]
बदत मंदोदरी, परम भीता।
सहसभुज-मत्त-गजराज-रन-केसरी,
परसुधर[2]-गर्व जेहि, देखि बीता॥
'दास तुलसी' समर,-सूर कोसलधनी,
ख्यालै[3] ही बालि बल,-सालि जीता॥

१—वानरों की छावनी। २—परशुराम। ३—सहज ही।

रे कंत, तृन दंत, गहि सरन श्री राम,
अजहुँ यहि भान्ति लै, सौंपु सीता ॥

(ख) गहन[1] उज्जारि पुर, जारि सुत मारि तुव,
कुसल गो कीस बर, बेर[2] जाको ।
दूसरो दूत पन, रोपि कोप्यो सभा,
खर्व कियो सर्व को, गर्व थाँको[3] ॥
'दास तुलसी' सभय, बदत मयनंदिनी[4],
मंद मति कंत सुनु, मंत म्हा[5] को ।
तौ[6] लौं मिलु बेगि नहिँ जौ लौ रँन रोष भयौ,
दासरथि वीर बिरु,दैत बाँको ॥

विजया

विजया के प्रत्येक पाद में ४० मात्राएं होती हैं। हर १० मात्राओं के अनन्तर यति होती है। पादान्त में रगण हो तो श्रवण-सुखद होता है, न हो तो न सही। चारों चरणों में वर्ण-संख्या समान नहीं होनी चाहिए। जैसे—

सित कमल वंशसी, शीतकर अंश-सी,
विमल विधि-हंस-सी, हीरवर हार-सी ।
सत्य गुण सत्त्व-सी, सांत रस तत्त्व-सी,

१—वन, वाटिका। २—पर्याप्त समय के बाद। ३—सीमा। ४—मन्दोदरी। ५—मेरी राय। ६, ७, ८, ९ इन वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़ेगा, तभी छन्द की गति ठीक रहेगी। ९—यशस्वी।

ज्ञानगौरव-सी सिद्धिविस्तार-सी ॥
कुन्द-सी कास-सी, भारती-वास-सी,
सुरतरु-निहार-सी, सुधारस-सार-सी ।
गङ्गजल-धार-सी, रजत के तार-सी,
कीर्ति तव विजय की, शंभु आगार-सी ॥

(छन्दोऽर्णव)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. मात्रिक विषम छन्द किसे कहते हैं? उसका मात्रिक सम और मात्रिक अर्ध-सम छन्दों से क्या भेद होता है?

२. मात्रिक सम, अर्धसम और विषम छन्दों का एक एक उदाहरण दे कर उन के अन्तर को स्पष्टतया लिखो।

३. कुँडलिया और छप्पय को विषम छन्दों में क्यों गिनते हैं? दोनों का एक एक उदाहरण देकर सिद्ध करो कि वे विषम छन्द हैं।

४. मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

५. क्या आर्या छन्द को मात्रिक अर्धसम छन्दों में नहीं गिन सकते? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

६. दंडक छन्द किसे और क्यों कहते हैं? मात्रिक साधारण और मात्रिक दंडक में क्या भेद है?

७. किसी मात्रिक दंडक छन्द का नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो।

८. निम्नलिखित पद्य किन छन्दों में हैं और क्यों ?

(क) अरिहुँ दन्त तृन धरें, ताहि मारत न सबल कोइ।
हम संतत तृन चरहिँ, वचन उच्चरहिँ दीन होइ॥
अमृत पय नित स्त्रवहिँ, बच्छ महि थंभन जावहिँ।
हिन्दुहिँ मधुर न देहिँ, कटुक तुरुकहिँ न पियावहिँ॥
कह कवि 'नरहरि' अकबर सुनो, विनवत गउ जोरे करन।
अपराध कौन मोहिं मारियत, मुयहु चाम सेवइ चरन॥

(ख) बिल्ली निज पति-घातिनी, तुझ को प्यारा गेह।
खाती है जिसका नमक, उस से नेक न नेह॥
उस से नेक न नेह, देह पर करती हमला।
खा खा कर घी दूध, कमाई घर की कमला॥
कहैं मीर समुझाय, पढ़े तू चाहे दिल्ली।
नमक हरामी चाल, न छूटे तुझ से बिल्ली॥

साधारण अभ्यास

(क) १. राधिका, बिहारी और कुंडल छन्दों का एक-एक उदाहरण दो।

२. उक्त तीनों छन्दों के लक्षण लिखो और उनके पारस्परिक भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो।

३. २२, २२ मात्राओं के जिन छन्दों का आपने अध्ययन किया है, उनका संक्षिप्त परिचय दो।

४. रोला, दिक्पाल और रूपमाला छन्दों के उदाहरण लिखो और फिर सिद्ध करो कि ये वही छन्द हैं।

५. उक्त तीनों छन्द कितनी कितनी मात्राओं के हैं ? उदाहरण देकर इनके भेद का स्पष्टता-पूर्वक लिखो ।

६. उल्लाला और रूपमाला तथा गुपाल और दिक्पाल छन्दों के लक्षण,उदाहरण और पारस्परिक भेद स्पष्ट दर्शाओ।

७. गीतिका, हरिगीतिका और शुद्ध गीता छन्दों के पारस्परिक अन्तर को विशदतया दिखाओ ।

८. २७, २७ मात्राओं के जो छन्द आप ने पढ़े हैं, उन का स्वरूप और उदाहरण लिखो ।

९. सार और हरिगीतिका छन्दों में क्या भेद है ? एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो ।

१०. ताटंक, लावनी और कुकुभ छन्दों में क्या भेद है ? उदाहरण देकर आशय को स्पष्ट करो ।

११. चौपैया और रुचिरा छन्दों के भेद को सम्यक् स्पष्ट करो ।

१२. आप ने ३०, ३०, मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं उन के नाम और लक्षण लिखो ।

१३. मात्रिक सवैया और समान सवैया छन्दों के अन्तर को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट दिखाओ ।

१४. त्रिभंगी, समान सवैया और दंडकला छन्दों का स्वरूप, उदाहरण और पास्परिक भेद स्पष्ट प्रकट करो ।

१५. झूलना प्रथम तथा झूलना द्वितीय के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो ।

निम्न लिखित पद्य, पद्यार्ध वा पाद किन छन्दों के हैं ?

(ख) १. आरत हरन सरन जन हेतु ।
सुलभ सकल अक्षर कुल केतु ॥

२. स्वर्ग की तुलना उचित ही है यहाँ ।
किन्तु सुरसरिता कहाँ सरयू कहाँ ॥
वह मरों को मात्र पार उतारती ।
यह यहीं से जीवितों को तारती ॥

३. मुनिगन निकट विहँग मृग जाहीं ।
बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ॥
हित अनहित पसु पंच्छी जाना ।
मानुष तन गुन ज्ञान निधाना ॥

४. लहौ आदि माया घने प्रेम सों ।
जपत नाम सुन्दर सदा नेम सों ॥

५. उलटी सुराज पृथिराज बाग ।
थकि सूर गगन धर धसत नाग ॥
कम्मान बान छुट्टहिँ अपार ।
लागंत लोह इमि सारि धार ॥

६. बहन कौसल्ये कह दो सत्य ।
भरत था मेरा कभी अपत्य ।
पुत्र था कभी तुम्हारा राम ?
हाय रे ! फिर भी यह परिणाम ॥

७. गिरा मुखर तनु अरध भवानी ।
रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥

विष बारुनी बन्धु प्रिय जेहि ।
कहिय रमा-सम किमि वैदेही ॥

८. शरण जावो प्रभू, करहिँ दाया ।
तोर काटैं सबै, जाल माया ॥

९. इसी क्षण भूप ने कुछ शक्ति पाई ।
पिता ने पुत्र की दृढ़ भक्ति पाई ॥
बढ़ा कर बाहु तब वे छटपटाये ।
उठे, पर पैर उन के लटपटाये ॥

१०. तुझ हुस्न प्रभा की, बाकी ले फिर,
विधि ने यह फरफंद किया ।
चम्पकदल सोनजु,ही नरगिस
चा,मीकर चपला चंद किया ॥

११. जगत ईस नर भूप, सिया ढिग सोहत ।
गल बैजन्ती माल, सुजन मन मोहत ॥

१२. जब लगि शरणागत न प्रभु की,
तब लगि भव-बाधा तुहि बाधत ।
पाप पुञ्ज हों छार छनक में,
शुभ श्री राम नाम आराधत ॥

१३. कहिए, ये किस लिए, आज पहने गये ?
कहाँ राज-परिधान, और गहने गये ?

१४. विनती प्रभु मोरी, मैं मति भोरी,
नाथ न मांगौं, वर आना ।

पद कमल परागा, रस अनुरागा,

मम मन-मधुप करै पाना ॥

१५. हा ! लाल ? उसे भी आज, गमाया मैं ने ।

विकराल कुयश ही यहां, कमाया मैं ने ॥

१६. कट जावेंगे पुण्यभूमि की, पराधीनता के सब पाश ।

पांचाली की लाज रहेगी, होगा दुःशासन का नाश ॥

१७. सूखी सी अधखिली कली है, परिमल नहीं पराग नहीं।

किन्तु कुटिल भौंरों के चुम्बन, का है इन पर दाग नहीं॥

१८. राम लला भजु राम लला,भजु राम लला भजु राम लला॥

१९. किन्तु गर्व का झोंका आया, यदपि गर्व वह था तेरा ।

उजड़ गई फुलवारी सारी, बिगड़ गया सब कुछ मेरा ॥

———

षष्ठ अध्याय

वर्ण-सम-वृत्त (साधारण)

जिन छन्दों के चारों पादों में वर्ण-संख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्ण-सम-वृत्त कहते हैं। नीचे प्रमुख वर्ण-सम-वृत्तों का उल्लेख किया जाता है।

१. मल्लिका (र ज, ग ल)

(अन्यनाम—समानी)

मल्लिका वृत्त के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, गुरु और लघु के क्रम से आठ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) बानरेश यूथ नाथ। लंकनाथ-बंधु साथ ॥
सोभिज सबै समीप। देस देस के महीप ॥
(केशवदास)

(ख) खंभ तें प्रगट्ट होय। दैत्य को सु-अंक गोय ॥
मार कै नृसिंह ताहि। पालिकै सुभक्त चाहि ॥
(गदाधर भट्ट)

(ग) गूंजने लगे मिलिन्द। कूजने विहंग-वृन्द ॥
हो गया सुगन्ध वात। मल्लिका खिली प्रभात ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

२. श्लोक अनुष्टुप्

श्लोक अनुष्टुप् के चारों चरणों में ८, ८ वर्ण होते हैं। प्रत्येक पाद का पांचवां वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवां वर्ण भी लघु होता है। शेष वर्णों के विषय में गुरु, लघु की स्वतंत्रता है। सो स्पष्ट ही है कि यह अन्य वर्ण-सम-वृत्तों से इस अंश में कुछ विलक्षण है। जैसे—

(क) स्वस्तिवाद विरक्तों का, और ही कुछ वस्तु है।
वाक्यों में उनके होता, ईश का एवमस्तु है ॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

(ख) यदा यदा हि धर्मस्या, ग्लानिर्भवति भारत।
(ख) अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
(श्रीमद्भगवद्गीता)

३. चम्पकमाला (भ म स, ग) ५, ५

चम्पकमाला वृत्त के प्रत्येक पाद में भगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से से १० वर्ण होते हैं। यति ५, ५ वर्णों पर होती है। जैसे—

शान्ति नहीं तो, जीवन क्या है?
कान्ति नहीं तो, यौवन क्या है?

प्रेम नहीं तो, आदर क्या है?
प्यास नहीं तो, सागर क्या है?

(रामनरेश त्रिपाठी)

भूमि सगी ना, मान वृथाहीं।
कृष्ण सगो है, या जग माहीं॥
ताहि रिझैये, ज्यों ब्रजबाला।
डारि गले में, चम्पकमाला॥

(भानुकवि)

४. सारवती (भ भ भ, ग)

सारवती वृत्त के चारों चरणों में तीन तीन भगण और एक एक गुरु के क्रम से १०, १० वर्ण होते हैं। जैसे—

देखि तबै भृगुनंदन को।
छत्रिन के कुल कंदन को॥
बोलि उठे, द्विज, हौं न डरौं।
आयुध ले अब जुद्ध करौं॥

(गदाधर भट्ट)

५. शालिनी (म त त, ग ग) ४, ७

शालिनी वृत्त के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। यति चौथे और सातवें वर्ण के बाद होती है। जैसे—

लक्ष्मी दीजै, लोक में मान दीजै।
विद्या दीजै, सभ्य संतान दीजै॥

हे हे स्वामी, प्रार्थना कान कीजै ।
कीजै कीजै, देश-कल्याण कीजै ॥
वीथी वीथी, साधु को सङ्ग पैये ।
संगै संगै, कृष्ण की कीर्त्ति गैये ॥
गाये गाये, एकताई प्रकासै ।
एकै एकै, सच्चिदानंद भासै ॥

(देवी प्रसाद पूर्ण)

६. भुजंगी (य य य, ल ग)

भुजंगी वृत्त के प्रत्येक पाद में तीन यगण और लघु, गुरु क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हरे ! हाय ! क्या से यहाँ क्या हुआ ?
उड़ा ही दिया मंथरा ने सुआ !
हिया-पींजरा शून्य माँ को मिला,
गया सिद्ध मेरा रही मैं शिला ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) असंतोष उत्थान का मूल है ।
इसे भूलना ही बड़ी भूल है ।
असंतोष की है न सत्ता कहाँ ?
असंतोष को है महत्ता महाँ ॥

(सरस पिङ्गल)

(ग) महादेव को भूल जाना नहीं ।
किसी और से लौ लगाना नहीं ॥
बनो ब्रह्मचारी पढ़ो वेद को ।

द्विजाभास कोरे कहाना नहीं ॥

(घ) करो प्यार पूरा सदाचार पै ।
दुराचार से जी जलाना नहीं ॥
निरालस्य विद्या बढ़ाते रहो ।
अविद्या नटी को नचाना नहीं ॥

(ङ) चलाना सदुद्योग से जीविका ।
दिखा लोभ-लीला कमाना नहीं ॥
न चूको मिलो शङ्करानंद से ।
निरे तर्क के गीत गाना नहीं ॥

(नाथू राम शङ्कर)

७. रथोद्धता (र न र, ल ग)

रथोद्धता वृत्त के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, रगण और लघु, गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

बात तोल कर सर्वदा कहो ।
सावधान खल से सदा रहो ॥
अन्त सोच तब धार में बहो ।
हानि ग्लानि सब धैर्य से सहो ॥

(राम नरेश त्रिपाठी)

८. स्वागता (र न भ, ग ग)

स्वागता वृत्त के हर एक चरण में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) रानि ! भोगि गहि नाथ कन्हाई ।
साथ गोप जन आवत धाई ॥
स्वागतार्थ सुनि आतुर माता ।
धाइ देखि मुद सुन्दर गाता ॥

(भानु कवि)

(ख) राज-राज दशरथ तनै जू ।
रामचन्द्र भुवचन्द्र बनै जू ॥
त्यों बिदेह तुमहूँ अरु सीता ।
ज्यों चकोर तनया शुभ गीता ॥

(ग) राज पुत्रकनि सों छवि छाये ।
राज-राज सब डेरहि आये ॥
हीर चीर गज वाजि लुटाये ।
सुंदरीन बहु मङ्गल गाये ॥

(घ) वानरेन्द्र तब यों हँसि बोल्यो ।
मीत भेद जिय को सब खोल्यो ॥
आगि बारि परतक्ष करीजू ।
रामचंद्र हँसि बाँह धरीजू ॥

(ङ) देखि राम बरषा ऋतु आई ।
रोम रोम बहुधा दुखदाई ॥
आस पास तम की छवि छाई ।
राति द्यौस कछु जानि न जाई ॥

१—सांप पकड़ कर ।

(च) मंद मंद धुनि सों घन गाजैं ।
तूर तार जनु आवझ बाजैं ॥
ठौर ठौर चपला चमकै यों ।
इन्द्र लोक तिय नाचति हैं ज्यों ॥
(केशवदास)

९. इन्द्रवज्रा (त त ज, ग ग)

इन्द्रवज्रा वृत्त के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) सीता सु ले राघव औध आये ।
आनंद सों मङ्गल गीत गाये ॥
सोभा सबै देखन चारु नारी ।
ठाढ़ी करैं पुष्प-सुवृष्टि भारी ॥
(गदाधर भट्ट)

(ख) संसार है एक अरण्य भारी ।
हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी ॥
जो कर्म रूपी न कुठार होगा ।
तो कौन निष्कंटक पार होगा ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(ग) मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ ।
माता मुझे सो नव मित्र-सा है ॥
देखूँ उसे मैं नित बार बार ।
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥
(गिरिधर शर्मा)

(घ) भागीरथी रूप अनूप-कारी ।
चंद्राननी लोचन-कञ्ज धारी ॥
बाणी बखानी मुखतत्व सोध्यो ।
रामानुजै आनि प्रबोध बोध्यो ॥

(ङ) मेरी बड़ी भूल सों[1] का कहो रे ।
तेरो कह्यो दूत सबै सहौं रे ॥
वै जो सबै चाहत तोहिँ मार्यों ।
मारौं कहाँ तोहिँ जों[2] दैव मार्यों ॥

(च) श्री राम नारायणै[3] लोक-कर्त्ता ।
ब्रह्मादि रुद्रादि फैं[4] दुःख-हर्त्ता ॥
सीतेश, मो को कछु देहु शिक्षा ।
नान्हीं[8] बड़ी ईश जों[5] होइ ईंक्षा[7] ॥

(छ) कीबे[9] हुतो काज सबै सों[6] कीन्हों ।
आये इहाँ मो कहँ सुक्ख दीन्हों ॥
पाँलागि बैकुंठ प्रभा बिहारी ।
स्वर्लोक गो तत्क्षण विष्णुंधारी[10] ॥

(केशवदास)

१०. उपेन्द्रवज्रा (ज त ज, ग ग)

उपेन्द्रवज्रा वृत्त के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

१—६. इन सब वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।
७—इच्छा। ८. छोटी। ९. जो करने योग्य था। १०. गरुड़।

(क) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै ।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै ॥
बिना विचारे यदि काम होगा ।
कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) अनेक ब्रह्मादि न अन्त पायो ।
अनेकधा वेदन गीत गायो ॥
तिन्हैं न रामानुज बंधु जानौ ।
सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानौ ॥
(केशव दास)

(ग) अनन्तकल्याणि, सुधास्वरूपे ।
सजीवता दो भर लेखनी में ॥
विशुद्ध वीणा लय माधुरी से ।
बनूं कृपा-पात्र मनस्वियों का ॥
(श्यामाकान्त पाठक)

(घ) निजेक्षया भूतल देहधारी ।
अधर्म-संहारक धर्मचारी ॥
चले दशग्रीवहिँ मारिबे को ।
तपी व्रती केवल पारिबे को ॥

(ङ) चले बली पावन पादुका लै ।
प्रदक्षिणा राम-सियाहु को दै ॥
गये ते[1] नंदीपुर वास कीनों ।

१—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

स-बंधु श्री रामहिँ चित्त दीनों ॥

(च) नराँच[2] श्री राम जहीं धरैंगे ।
अशेष माथे, कटि भू परैंगे ॥
शिखा शिवा[3] श्वान गहे तिहारी ।
फिरैं चहूँ वोरैं[4] निरे बिहारी ॥

(छ) कहो शुकाचार्य सु हौं कहौं जू ।
सदा तुम्हारो हित संग्रहौं जू ॥
नृपास भू मैं विधि चारि जानों ।
सुनो महाराज सबै बखानों ॥

(ज) गिरीश नारायण पै सुनी यों ।
गिरीश मो सों जो कही कहौं त्यों ॥
सुनो सु सीता-पति साधु चर्चा ।
करी सु जा ते तुम ब्रह्म-अर्चा ॥

(केशवदास)

११. उपजाति

जिस वर्ण वृत्त के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, उसे उपजाति कहते हैं। जैसे—

(क) परोपकारी बन वीर आओ ।
नीचे पड़े भारत को उठाओ ॥
हे मित्र, त्यागो मद मोह माया ।
नहीं रहेगी यह नित्य काया ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

२—तीर । ३—गीदड़ी । ४—तरफ़ ।

उपर्युक्त पद्य के आदिम और अन्तिम चरण उपेन्द्रवज्रा के हैं और मध्यम दोनों इन्द्रवज्रा के।

(ख) "ब्रह्मन तजो पुस्तक-प्रेम आप।
देता अभी हूँ यह राज्य सारा॥"
कहे मुझे यों यदि चक्रवर्ती।
"ऐसा न राजन् कहिए", कहूँ मैं॥

(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का तृतीय चरण उपेन्द्रवज्रा का है, शेष सब इन्द्रवज्रा के। प्रथम पाद का अन्तिम वर्ण पादान्त में होने के कारण ही गुरु माना गया है।

(ग) अखंड भंडार भरा हुआ है।
सुवर्ण का जो मम गेह में ही॥
बताइए हे मम मित्र-वर्य्य।
क्यों लूँ किसी के फिर दान को मैं॥

(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रा का है, शेष सब उपेन्द्रवज्रा के।

(घ) गिने हुए सज्जन-वृन्द को तो।
कभी कभी मैं करता सुसंग॥
परन्तु है पुस्तक मित्र ऐसा।
होता कभी जो मुझ से न न्यारा॥

उक्त पद्य के पहले तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के हैं और चौथा इन्द्रवज्रा का।

(ङ) इच्छा न मेरी कुछ भी बनूँ मैं।
कुवेर का भी जग में कुवेर॥
इच्छा मुझे एक यही सदा है।
नये नये उत्तम ग्रंथ देखूँ॥
(गिरिधर शर्मा)

उक्त पद्य के विषम चरण इन्द्रवज्रा के हैं और सम उपेन्द्रवज्रा के।

१२. दोधक (भ भ भ, ग ग) अन्य नाम-बंधु

दोधक वृत्त के प्रत्येक पाद में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) राम गये जब ते बन माहीं।
राकस बैर करैं बहुधाहीं॥
राम कुमार हमैं नृप दीजै।
तौ परिपूरण यज्ञ करीजै॥

(ख) बाहर हूँ अति शुद्ध हिये हूँ।
जाहि न लागत कर्म किये हूँ॥
बाहर मूढ़ सु अंत सयानो।
ताकहँ जीवन-मुक्त बखानो॥

(ग) ए सुत कौन के[1] शोभ हि साजे।
सुंदर[2] श्यामल गौर विराजे॥
जानत हौं जिय सोदर सोऊ।

१, २—ये वर्ण लघु पढ़े जायँगे।

कै कमला विमला पति कोऊ ॥

(घ) सुंदर श्यामल राम सु जानौ।
गौर सु लक्ष्मन नाम बखानौ ॥
आशिष देहु इन्हें सब कोऊ।
सूरज के कुल-मंडन दोऊ ॥

(ङ) हौ भृगुनंद बली जग माहीं।
राम बिदा करिये घर जाहीं ॥
हौ तुम से फिरि युद्ध हिमाड़ौं।
क्षत्रिय-वंश को[3] बैर ले[4] छाड़ौं ॥

(च) राज-सभा न विलोकिय कोऊ।
शोक गहे तब सोदर दोऊ ॥
मंदिर मातु बिलोकि अकेली।
ज्यों बिन वृक्ष बिराजति बेलि ॥

(छ) मातु सबै मिलिबे कहँ आई।
ज्यों सुत की सुरभी सुलवाई ॥
लक्ष्मण स्यो उठि कै रघुराई।
पायन जाय परे दो[5]उ भाई ॥

(ज) मातनि कंठ उठाय लगाये।
प्राण मनो मृत देहनि पाये ॥
आइ मिलीं तब सीय सभागी।
देवर सासुन के पग लागी ॥

(केशवदास)

३—४, ५ इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

(झ) पा कर मानव देह धरा में ।
पाशव वृत्ति तजो जितनी हैं ॥
पुच्छ-बिषाण-विहीन पशू जो ।
होन न चाहत प्रेम करो तो ॥

(राम बहोरी शुक्ल)

१३. इंदिरा (न र र, ल ग) ६, ५

(अन्यनाम—कनक मंजरी

इन्दिरावृत्त के प्रत्येक पाद में नगण, दो रगण और लघु गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। यति छः और पांच वर्णों के बाद होती है। जैसे—

(क) महर नंद का, पुत्र तू नहीं,
निखिल सृष्टि का, साक्षि रूप है।
उदित है हुआ, वृष्णि वंश में,
व्यथित विश्व के, त्राण के लिए ॥

(ख) तव सुधामयी, प्रेम-जीवनी,
अघनिवारिणी, क्लेशहारिणी ।
श्रवण-सौख्यदा, विश्वतारिणी,
मुदित गा रहे, धीर-अग्रणी ॥

(श्रीधर पाठक)

(ग) घर फिरे तुम्हीं, मोह से कहीं,
तब हुए तपो,भ्रष्ट क्या नहीं ?
च्युत हुए अहो, नाथ, जो यथा,

धिक ! वृथा हुई, ऊर्मिला-व्यथा ॥

(घ) समय है अभी, हा ! फिरो फिरो,
तुम न यों यश;-स्वर्ग से गिरो।
प्रभु दयालु हैं, लौट के मिलो,
न उनके कुटी,-द्वार से हिलो।

(ङ) तुम मिलो मुझे, धर्म छोड़ के,
फिर मरूं न क्यों, मुण्ड फोड़ के ?
यह शरीर लो, प्राण ये बुझे,
धर न हा सखी, छोड़ दे मुझे ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

१४. भुजंगप्रयात (य य य य)

भुजंगप्रयात वृत्त के प्रत्येक पाद में चार यगण (।ऽऽ) के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) जहाँ कंज के कुंज की मंजुता थी,
लता पत्रिता पुष्पिता गुंजिता थी।
जहाँ थे हरे कुंज के पुंज प्यारे,
जहाँ कंज थे भृंग की गुंज वारे ॥

(सरस पिंगल)

(ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
किसी से नहीं जन्म मेरा हुआ है।
रहेगा सदा अन्त तेरा न होगा,
किसी काल में नाश मेरा न होगा ॥

(नाथूराम शंकर)

(ग) निराकार ! आकार तेरा नहीं है,
किसी भाँति का मान मेरा नहीं है।
सखा ! सर्व-संघात से तू बड़ा है,
मुझे तुच्छता में समाना पड़ा है ॥

(घ) मुझे बंध-बाधा सताती नहीं है,
मुझे सर्वदा-मुक्ति पाती नहीं है।
प्रभो, शंकरा नंद आनंद-दाता,
मुझे क्यों नहीं आपदा से छुड़ाता ?

(ङ) कहूँ शोभना दुंदुभी दीह बाजैं।
कहूँ भीम भंकार कर्नाटैं साजैं॥
कहूँ सुंदरी बेनु बीना बजावैं।
कहूँ किन्नरी किन्नरी लै सुगावैं॥

(च) कहूँ नृत्यकारो नचैं शोभ साजैं।
कहूँ भाँड बोलैं कहूँ मल्ल गाजैं॥
कहू भाट भाख्यो करैं मान पावैं।
कहूँ लोलिनी बेड़िनी गीत गावैं॥

(केशवदास)

१—सब कुछ देने वाली।

१—लघुवत् पढ़ा जायगा।

२—एक राग है।

३, ४ - चंचल स्वभाव वाली नट जाति की नाचने गाने वाली स्त्रियां।

१५. स्रग्विणी (र र र र)

अन्यनाम—शृंगारिणी

स्रग्विणी वृत्त के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) वे गृही धन्य हैं जो मनोहारिणी,
मिष्टभाषी सुशीला सदाचारिणी।
धर्मशीला सती धीरता-धारिणी,
सुंदरी युक्त है प्रेमशृंगारिणी॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) रा[1]र, री रा[2]धिका, श्याम सों क्यों करै ?
सीख मो मान ले, मान काहे धरै ?
चित्त में सुंदरी क्रोध न आनिये ।
स्रग्विणी[3] मूर्त्ति को कृष्ण की धारिये ॥
(भानुकवि)

(ग) राम आगे चले मध्य सीता चली ।
बंधु पाछे भये साम सोभै भली ॥
देखि देही सबै कोटिधा के भनो ।
जीव जीवेश के बीच माया मनो ॥

(घ) जो रहीं लक्ष्मणै लेन लाग्यो जहीं ।
मुष्टि छाती हनुमंत मार्यो तहीं ॥
आशु ही प्राण को नाश सो ह्वै गयो ।
दंड द्वै तीनि में चेतनो को भयो ॥
(केशवदास)

१—कलह । २—रार री रा=चार रगण । ३—मालायुक्त ।

१६. तोटक (स स स स)

तोटक वृत्त के हर एक चरण में चार सगण (॥ऽ) के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) धरणीश धनेश जनेश रहा।
अनुकूल सदा अखिलेश रहा॥
सब से बढ़िया, घटिया कब था?
इस भाँति बड़ा जब था तब था॥

(ख) अब लों न कहीं वह देश मिला।
इस का न जिसे उपदेश मिला॥
उस गौरव के गुण अस्त हुए।
गुरु के गुरु, शिष्य समस्त हुए॥

(ग) बिगड़ी गति वैदिक धर्म बिना।
सुख-हीन हुआ शुभ कर्म बिना॥
हठ ने जड़ धी अविकाश किया।
फिर आलस ने बल नाश किया॥

(घ) चिथड़े तक भी न रहे तन पै।
धिक धूलि पड़े इस जीवन पै॥
अवलोक अमङ्गल दङ्ग हुआ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ॥

(नाथूराम शङ्कर)

१—भारतवर्ष का।

(ङ) बहु दाम[1] सँवारहिँ धाम जती ।
विषया हरि लीन गई बिरती[2] ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही ।
कलि-कौतुक तात न जात कही ॥

(च) सुत मानहिँ मात-पिता तब लौं ।
अबला नहीं डीठ परी जब लौं ॥
ससुरारि प्यारि लगी जब तें ।
रिपु रूप कुटुंब भयो तब तें ॥

(तुलसीदास)

(छ) तब पायन जाइ भरत्थ परे ।
उन भेंट उठाइ कै[3] अङ्क भरे ॥
सिर सूँघि विलोकि बलाइ लई ।
सुत तो बिन या विपरीत भई ॥

(ज) यह बात सुनी नृपनाथ जबै ।
शर से लगे[4] आ खर चित्त सबै ॥
मुख ते कछु बात न जाइ कही ।
अपराध बिना ऋषि देह दही ॥

(केशवदास)

१—पैसा, धन । २—वैराग्य ।

३—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

४—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

१७. इन्द्रवंशा (त त ज र)

इन्द्रवंशा वृत्त के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) आये जबै सीय समेत राम हैं।
छाये महा मङ्गल औध धाम हैं॥
भ्राता भरत्थादि करैं प्रनाम हैं।
वाचा किये पूरित सर्व काम हैं॥

(गदाधर भट्ट)

(ख) तातां[1] ! जरा आ लख तू विचारि ही।
को मार को दे सुख दुःख जीव ही॥
संग्राम भारी कर आज बान सों।
रे इन्द्रवंशा[2] ! लर कौरवान सों॥

(भानुकवि)

१८. मोतियदाम (ज ज ज ज)

मोतियदाम वृत्त के हर एक चरण में चार जगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) गये तहँ राम जहाँ निज मात।
कही यह बात कि हैं बन जात॥
कछू जनि जी दुख पावहु माइ।
सु देहु अशीष मिलौं फिरि आइ॥

(केशवदास)

१—ताता जरा = त त ज र॥ २—अर्जुन।

(ख) जिते नर नागर लोग बिचारि ।
सबै घर नै रघुनाथ निहारि ॥
किधौं परमानँद को यह मूल ।
विलोकत हीं सो हरै सब शूल ॥

(ग) न हौं मकराक्ष[1] न हौं इँदजीत[3] ।
विलोकि तुम्ह रण होहुँ न भीत ॥
सदा तुम लक्ष्मण उत्तम-गाथ ।
करौ जँनि आपनि मातु अनाथ ॥

(घ) विलोचन लोचरा हैं लखि तोहिँ ।
तजौ हठ आनि भजौ किन मोहिँ ॥
क्षम्यौं अपराध अजौं घर जाहु ।
हिये उपजाउ न मातहि दाहु ॥

(केशवदास)

(ङ) अदेवन की उर आनि अनीति ।
निबाहन को सुरपालन रीति ॥
सुधारन को जन को अधिकार ।
धर्यो हरि वामन को अवतार ॥

(च) बड़े जन को नहिँ माँगन जोग ।
फबैं छल साधन में लघु लोग ॥

१—इस वर्ण का उच्चारण लघुवत् (सु के समान) होगा
२—कामदेव । ३—इन्द्रजीत । ४—मत । ५—जलन ।

रमापति विष्णु असंग अनूप ।
धर्यो ऐहि कारण वामन रूप ॥

(देवीप्रसाद पूर्ण)

१९. वंशस्थबिल (ज त ज र)

वंशस्थबिल वृत्त के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हरीतिमा का सुविशाल सिंधु सा ।
मनोज्ञता की रमणीय भूमि-सा ॥
विचित्रता का शुभ-सिद्ध-पीठ सा ।
प्रशान्त वृन्दावन दर्शनीय था ॥

(ख) अतीव उत्कण्ठित ग्वाल-बाल हो ।
सवेग जाते रथ के समीप थे ॥
परन्तु होते अति ही मलीन थे ।
न देखते थे जब वे मुकुन्द को ॥

(ग) अनेक गायें तृण त्याग दौड़ती ।
सवत्स जातीं वर-यान पास थीं ॥
परन्तु पाती जब थीं न श्याम को ।
विषादिता हो पड़ती नितान्त थी ॥

(घ) निकालती जो जल कूप से रहीं ।
स-रज्जु सो भी तज कूप में घड़ा ॥
अतीव हो आतुर दौड़ती गईं ।

१, २—ध और ए का उच्चारण लघुवत् होगा ।

व्रजांगना वल्लभ को विलोकने ॥

(ङ) वयस्क बूढ़े वह बाल बालिका ।
सभी समुत्कण्ठित औ अधीर हो ॥
सवेग आये ढिग मंजु यान के।
स्व-लोचनों की निधि-चारु लूटने ॥

(च) स्वरूप होता जिसका न भव्य है।
न वाक्य होते जिसके मनोज्ञ हैं ॥
अतीव प्यारा बनता सदैव है ।
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से ॥

(छ) सदा करूँगा अपमृत्यु सामना ।
सभीत हूँगा न सुरेन्द्र-वज्र से ॥
कभी करूँगा अवहेलना न मैं ।
प्रधान धर्मांग परोपकार की ॥

(ज) प्रवाह होते तक शेष श्वास के।
सरक्त होते तक एक भी शिरा ॥
सशक्त होते तक एक लोम के।
किया करूँगा हित सर्वभूत का ॥

(झ) मुकुन्द चाहे यदु-वंश के बनें।
सदा रहें या वह गोप वंश के ॥
न तो सकेंगे व्रजभूमि भूल वे ।
न भूल देगी व्रजमेदिनी उन्हें ॥

(अयोध्याप्रसाद उपाध्याय)

२०. मोदक (भ भ भ भ)

मोदक वृत्त के प्रत्येक चरण में चार भगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हो निज देश-सुधार सखा, तव।
उन्नति के कुछ काम करो जब॥
केवल हैं उपदेश वृथा सब।
भूख मिटे मन-मोदक से कब?
(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) राजन मैं तुम राज बड़े अति।
मैं मुख मांगों[1] सो[2] देहु महामति॥
देव सहायक हौं नृप नायक।
है यह कारज रामहिं लायक॥

(ग) शोभन दीरघ बाहु विराजत।
देव सिहातें[3] अदेवते[4] लाजत॥
बैरिन की अहिराज बखानहुँ।
है हितकारिन की ध्वज मानहुँ॥

(घ) रावण को यह साँचहु सोदरु।
आपु बली बलवंत लिए अरु॥
राकस-बंश हमैं हतने सब।
काज कहा तिन सों हम सों अब॥
(केशवदास)

१, २—ये वर्ण लघुवत् पढ़े जायंगे। ३—ललचाते हैं।
४—लघुवत् उच्चारण होगा। ५—बिभीषण।

२१. द्रुतविलंबित (न भ भ र) अन्यनाम-सुंदरी

द्रुतविलम्बित वृत्त के प्रत्येक पाद में नगण, दो भगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) विगत हे जलजात[1], निशा हुई।
द्युतिमयी वह पूर्व दिशा हुई॥
छिप उलूक गये भय-भीति से।
अब विकास करो तुम प्रीति से॥

(ख) जनम से पहले विधि ने दिये।
रजत, राज्य, रथादि तुम्हें स्वयं॥
तदपि क्यों उसको न सराहते।
मचलते चलते हो तुम वृथा॥

(ग) तनिक चिंतित हो मत तू कभी।
मिट नहीं सकती भवितव्यता॥
सुकृत रक्षक है सब का सदा।
भवन में वन में मन! मान जा॥

(घ) दुखित हैं धन-हीन, धनी सुखी।
यह विचार परिष्कृत है यदि[2]॥
मन, युधिष्ठिर को फिर क्यों हुई?
विभवता भव-ताप-विधायिनी॥

(ङ) मन! रमा, रमणी, रमणीयता।

१—कमल।

२—'दि' पादान्त में होने से गुरु माना गया है।

मिल गई यदि ये विधि योग से ॥
पर जिसे न मिलि कविता-सुधा ।
रसिकता सिकता-सम है उसे ॥

(च) चतुर है चतुरानन सा वही ।
सुभग भाग्य-विभूषित भाल है ॥
मन ! जिसे मन में पर-काव्य की ।
रुचिरता चिर-ताप-करी न हो ॥

(रामचरित उपाध्याय)

(छ) बहु-विनोदित थीं व्रज-बालिका ।
तरुणियाँ सब थीं तृण तोड़ती ॥
बलि गईं बहुवार बयोवती ।
लख अनूपमता व्रज-चंद की ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

२२. तरलनयन (न न न न) ६, ६

तरलनयन वृत्त के चारों चरणों में चार चार नगण से होते हैं। अर्थात् प्रत्येक पाद में १२ १२ लघु वर्ण होते हैं। ६, ६ वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

(क) विशिख सदृश, परम दुखद ।
पुरुष वचन, कह न सुहृद ॥
कर सुकथन, हृदय-हरन ।
सुखद अमृत, सदृश वचन ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) नचतु[1] सुघर, सखिन सहित ।
थिरकि थिरकि, फिरत मुदित ॥
तरल नैयन[2], नवल युवति ।
सुहरि दरस, अमिय[3] पिबति ॥

(भानुकवि)

२३. प्रहर्षिणी (म न ज र, ग) ३, १०

प्रहर्षिणी वृत्त के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। ३ और १० वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

मानो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे ।
प्राणों के, तुमहिँ अधार हौ हमारे ॥
वैसो ही, विरचहु रास हे कन्हाई ।
भावै जो, शरद प्रहर्षिणी[4] जुन्हाई[5] ॥

(भानु कवि)

२४. कंज अवलि (भ न ज ज, ल) अन्यनाम-पंकज वाटिका

कंज-अवलि वृत्त के प्रत्येक पाद में भगण, नगण, दो जगण और लघु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) धर्म करत अति अर्थ बढ़ावत ।
संतति हित रति को बिदगावत ॥

१—(क) नाचता है (ख) नगण चार । २—चंचल नेत्रों वाली । ३—अमृत ।

४—प्रसन्न करने वाली । ५—चाँदनी ।

संतति उपजत हीं निशि वासर।
साधत तन मन मुक्ति महीधर॥

(ख) श्री रघुवर तुम हौ जगनायक।
देखहु दशरथ को सुखदायक॥
सोदर सहित पिता-पद पावन।
वंदन किय तबहीं मनभावन॥

(ग) सूरज चरण बिभीषण के अति।
आपु हि भरत पखारि महामति॥
दुंदुभि-धुनि करि कै बहु भेवन।
पुष्प बरषि हरषे दिवि देवन॥

(घ) राम चलत नृप के युग लोचन।
वारि भरित भये[1] वारिद-[2]रोचन॥
पायन परि ऋषि के सजि-मौनहिँ।
'केशव' उठि गये[3] भीतर भौनहिँ॥

(केशवदास)

२९. वसन्ततिलका (त भ ज ज, ग ग)

वसन्त तिलका वृत्त के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) रोना महा-अशुभ जान पयान-बेला।
आँसू न ढाल सकती निज नेत्र से थी॥

२—बादल की सी शोभा वाले। १, ३—लघुवत् उच्चारण करना चाहिए।

रोये बिना न छन भी मन मानता था।
डूबी महान द्विविधा जनमंडली थी ॥

(ख) रोगी दुखी विपत-आपत में पड़े की।
सेवा अनेक करते निज-हस्त से थे ॥
ऐसा निकेत व्रज में न मुझे दिखाया।
कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होवें ॥

(ग) कुंजें वही थल वही यमुना वही है।
बेलें वही, बन वही, विटपी वही है ॥
हैं पुष्प-पल्लव वही, व्रज भी वही है।
ए किन्तु श्याम बिन हैं न वही जनाते ॥

(घ) आ मन्द मन्द मन-मोहन मण्डली में।
बातें बड़ी सरस थे सब को सुनाते ॥
भावों समेत स्वर में मृदुता मिला के।
या थे महा-मधु-मयी मुरली बजाते ॥

(ङ) फूले हुए कुमुद देख सरोवरों में।
माधो सु-उक्ति यह थे सब को सुनाते ॥
उत्कर्ष देख निज अंकपले शशी का।
है वारि-राशि मिस-कैरव हृष्ट होता ॥

(च) फूलों दलों पर विराजित ओस बूँदें।
जो श्याम को दमकती दुति से दिखातीं ॥
तो वे समोद कहते-वन-देवियों ने।
की है कला पर निछावर मुक्त-माला ॥

(छ) कोई दुखी-जन विलोक पसीजता है।

कोई विषाद-वश रो पड़ता दिखाया ॥
कोई प्रबोध कर है परितोष देता।
हैं किन्तु सत्य-हितकारक व्यक्ति कोई॥
आँखों अनूप छवि है जिसने विलोकी।
वंशी-निनाद मन दे जिसने सुना है॥
देखा बिहार इस यामिनि में जिन्हों ने।
कैसे मुकुन्द उनके उर से कढ़ेंगे !

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

२६. मुकुन्द (त भ ज ज, ग ल) ८, ६

मुकुन्द वृत्त के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और गुरु लघु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं। आठ और छः वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

सन्तुष्ट आक पर नित्य रहो सहर्ष,
हे ग्रीष्म, सन्तत करो, उसका प्रकर्ष॥
है कौन हेतु पर हो, कर जो कराल,
हो नष्ट भ्रष्ट करते, तुम ये तमाल ?

(सियारामशरण गुप्त)

७. चामर (र ज र ज र)

चामर के चारों चरणों में रगण, जगण, रगण, जगण, और रगण के क्रम से १५, १५ मात्राएं होती हैं। जैसे —

(क) आइयो कुरंग एक चारु हेम हीर को।
जानकी समेत चित्त मोहि राम वीर को॥

राजपुत्रिका समीप साधु बंधु राखि कै।
हाथ चाप बाण लै गये गिरीश नाँखि कै॥

(ख) वेद मंत्र तंत्र शोधि अस्त्र शस्त्र दै भले।
रामचन्द्र लक्खनै सु विप्र छिप्र लै चले॥
लोभ छोभ मोह गर्व काम कामना हुई[3]।
नींद भूख प्यास त्रास वासना सबै गई॥

(ग) आसमुद्र[1] के क्षितीश और जाति को गनै।
राज-भौन भौज को सबै जने गये बनै॥
भाँति भाँति अन्न पान व्यंजनादि[2] जेंवहीं।
देत नारी गारि पूरि भूरि भूरि भेवहीं[4]॥

(घ) मत्त-दन्ति[5]-राज-राजि बाजि[6]-राज-राजि[7] कै।
हेम हीर मुक्त चीर चारु साज साजि कै॥
वेष वेषवाहिनी अशेष वस्तु सोधियो।
दाइ[8] जो विदेहराज भाँति भाँति को दियो॥

(ङ) देखि देखि कै अशोक राज-पुत्रिका कह्यो।
देहिं मोहिं आगि तैं जो अग[9] आगि ह्वै रह्यो॥
ठौर पाइ वात-पुत्र डारि मुद्रिका दई।
आस पास देखि कै उठाय हाथ कै लई॥

(केशवदास)

१—समुद्र तक। २—साग-भाजी। ३—लघुवत् पढ़ा जायगा। ४—भिगोती हैं।

५—हाथी। ६—घोड़े। ७—पंक्ति। ८—दहेज़।

९—लघु पढ़िए।

(च) कुञ्ज में गुपाल लाल राधिका विराज हीं।
वृन्द गोपिकान के सुराग-रङ्ग साज हीं॥
नृत्य में उमङ्ग सङ्ग बीन बेनु बाज हीं।
लच्छरी विलोकि दच्छ अच्छरी सु लाजहीं॥
(गदाधर भट्ट)

२८. शशिकला (न न न न स) ६, ९

शशिकला के प्रत्येक पाद में चार नगण और एक सगण के क्रम से १५ बर्ण होते हैं। अर्थात् १४ लघु वर्णों के अनन्तर एक गुरु वर्ण होता है। छः और नौ वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

(क) कहुँ द्विजगण, मिलि सुख श्रुति पढ़हीं।
कहुँ हरि हरि, हर हर रह रंढहीं॥
कहुँ मृग-शिशु, मृग-पति पंय पिय हीं।
कहुँ मुनि-गण, चितवत हरि हिय हीं॥

(ख) बन महँ विकट विविध दुख सुनिये।
गिरि गहवर, मग अगम के गुनिये॥
कहुँ अहि हरि, कहुँ निशिचर चर हीं।
कहुँ दव-दहन दुसह दुख दह हीं॥
(केशवदास)

---

* इस के प्रत्येक पाद में सात बार गुरु लघु (ऽ।) के अनन्तर एक गुरु होता है। १—लाँघ कर। २—शीघ्र। ३—नष्ट हो गई।

१—जपते हैं। २—शेरनी का दूध।

२९. मालिनी (न न म य य) ८, ७

मालिनी के प्रत्येक पाद में दो नगण, मगण, और दो यगण के क्रम से १५ वर्ण होते हैं। आठ और सात वर्णों के बाद विराम होता है जैसे—

(क) यह कृषि कितनों की, अन्नदा प्राणदात्री,
अहह घन ! तुम्हारी, है रही प्रेमपात्री।
जलधर, तुम ने ही, तो इसे था बढ़ाया ॥
फिर उपल गिरा के, क्यों स्वयं ही मिटाया ?

(ख) इन विटप-वरों ने, हे मरुत् ! मोदकारी,
सुरभि सतत दे के, की सु-सेवा तुम्हारी।
व्यथित अब इन्हीं को, वह्नि से आज देख,
ज्वलित कर रहे हो, और भी क्यों विशेष ?

(सियारामशरण गुप्त)

(ग) यह कुसुम अभी तो, डालियों में धरा था।
अगणित अभिलाषा, और आशा-भरा था॥
दलित कर इसे तू, काल क्या पा गया रे !
कण-भर तुझ में क्या, हा ! नहीं है दया रे !

(घ) सहृदय जन के जो, कण्ठ का हार होता।
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता॥
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है।
नियति, नियम तेरा, भी बड़ा हो कड़ा है !

(रूपनारायण पांडेय)

(ङ) सह कर कितने ही, कष्ट औ संकटों को।

बहु यजन करा के, पूज-के निर्जरों[1] को ॥
यह सुअन मिला है, जो मुझे यत्न-द्वारा ।
प्रियतम, वह मेरा, कृष्ण प्यारा कहाँ है ?

(च) मुखरित करता जो, सद्म को था शुकों सा ।
कलरव करता था, जो खगों सा बनों में ॥
सुध्वनित पिक लौं जो, वाटिका था बनाता ।
वह बहुविधि कण्ठों. का विधाता कहाँ है ॥

(छ) बन बन फिरती हैं, खिन्न गायें अनेकों ।
शुक भर भर आँखें, भौन की देखता है ॥
सुधि कर जिसकी है, शारिका नित्य रोती ।
वह निधि मृदुता का मंजु मोती कहाँ है ?

(ज) यदि दिन कट जाता, बीतती थी न दोषा[2] ।
यदि निशि[3] टलती थी, बार था कल्प[4] होता ॥
पल पल अकुलाती, ऊबती थीं यशोदा ।
रट यह रहती थी, क्यों नहीं श्याम आये ?

(झ) प्रति दिन कितने ही, देवता थीं मनाती ।
बहु यजन कराती, विप्र के वृन्द से थीं ॥
नित घर पर नाना, ज्योतिषी थीं बुलाती ।
निज प्रिय सुत आना, पूछने को यशोदा ॥

(ञ) गृह दिशि यदि कोई, शीघ्रता साथ आता ।

१—देवताओं को ।
२३, —रात । ४—ब्राह्म दिन, चार अरब बत्तीस करोड़ वष ।

तब उभय करों से, थामतीं वे कलेजा ॥
जब वह दिखलाता, दूसरी ओर जाता ।
तज हृदय, करों से ढाँपती थीं दृगों को ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

३०. चञ्चला (र ज र ज र, ल)

अन्यनाम—चित्र

चञ्चला के चारों चरणों में, रगण, जगण, रगण, जगण रगण और लघु के क्रम से १६, १६ वर्ण होते हैं । अर्थात् इस के प्रत्येक पाद में गुरु, लघु (ऽ।) आठ आठ बार आते हैं। जैसे—

(क) रक्षिबे को[1] यज्ञ कूल बैठ वीर सावधान ।
होन लागे[2] होम के जहाँ तहाँ सबै विधान ॥
भीम-[3]भाँति ताड़का सो[4] भङ्ग लागि कर्न आय ।
बान तानि राम पै न नारि जानि छाँडि जाय ॥

(केशवदास)

(ख) पक्षिराज यक्षराज प्रेतराज यातुधान ।
देवता अदेवता नृ-देवता जिते जहान ॥
पर्वतारि अर्ब खर्ब सर्ब सर्बथा बखानि ।
कोटि कोटि सूर चन्द्र रामचंद्र दास मानि

(ग) रामचंद्र जू कहंत स्वर्ण-लंक देखि देखि ।

१, २, ४—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा ।
३—भयङ्करता से ।

ऋच्छ बानरालि घोर ओर चारिहूँ बिशेखि ॥
मंजु कंज गंध लुब्ध भौंर भीर सी विशाल ।
केशुदास आस-पास शोभिजै मनो मराल ॥

(घ) देव कुंभकर्ण के समान जानिये न आन ।
इन्द्र चन्द्र विष्णु रुद्र ब्रह्म को हरे गुमान ॥
राज काज को कहै जो मानिये सो प्रेम पालि ।
कै चली न को चलै न काल की कुचालि चाल ॥

(केशवदास)

३१. पंचचामर (ज र ज र ज, ग)

(अन्यनाम-नराच, नागराज

पंच चामर के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम से १६ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती ।
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती ॥
उसी उदार को सदा सजीव कीर्ति कूजती ।
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(ख) महेश के महत्त्व का विवेक बार बार हो ।
अखंड एक तत्त्व का अनेकधा विचार हो ॥
बिगाड़ से समाज के प्रबन्ध का सुधार हो ।
प्रवीण-पंचराज के प्रपंच का प्रचार हो ॥

(नाथूराम शंकर[1])

(ग) किये विशेष सों अशेष काज देवराय के।
सदा त्रिलोक लोकनाय धर्म विप्र[1] गाय के॥
अनादि सिद्धि राज-सिद्धि राज आज लीजई।
नृदेवतानि देवतानि दीह सुक्ख दीजई॥

(घ) न हौं[2] रहौं न जाहुँजू विदेह-धाम को अबै।
कही जो[3] बात मातु पै[4] सो आज मैं सुनी सबै॥
लगे क्षुधा हि मा भली विपत्ति माँझ नारिये।
पियास त्रास नीर वीर युद्ध में सम्हारिये॥

✓३२. मन्दाक्रान्ता (म भ न त त, ग ग) ४, ६, ७

मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। ४, ६, ७ वर्णों पर विराम होता है। जैसे—

(क) जैसे पाता, तृषित जन है, तृप्ति पानी पिये से।
वैसे उर्वी, मुदित घन के, वारि से हो रही है॥
शोभा पाती, विविध रँग के, शस्य से मेदिनी है।
मानो कान्ता, रुचिर तन पै, वेष भूषा किए हो॥
(गोविन्ददास)

(ख) जो रूठेगा, नृपति व्रज का, वास ही छोड़ दूँगी।
ऊँचे ऊँचे, भवन तज के, जंगलों में बसूँगी॥
खाऊँगी फू,ल फल दल को, व्यंजनों को तजूँगी।

१—ब्राह्मण।

२—मैं। ३, ४—इनका लघुवत् उच्चारण होगा।

मैं आँखों से, अलग न तुझे, लाल मेरे करूँगी ॥

(ग) जो लेवेगा, नृपति मुझ से, दंड दूँगी करोड़ों ।
लोटा थाली, सहित तन के, वस्त्र भी बेंच दूँगी ॥
जो माँगेगा, हृदय वह तो, काढ़ दूँगी उसे भी ।
बेटा, तेरा, गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूँगी ॥

(घ) बीसों बैठे, पकड़ रथ का, चक्र दोनों करों से ।
रासें ऊँचें, युग तुरग की, थाम ली सैंकड़ों ने ॥
सोये भू में, चपल रथ के, सामने आ अनेकों ।
जाना होता, अति अप्रिय था, बालकों का सबों को ॥

(ङ) खाते पीते, गमन करते, बैठते और सोते ।
आते जाते, विपिन भ्रमते, गोधनों को चराते ॥
देते लेते, सकल व्रज की, मेदिनीवासियों के ।
जी में होता, उदय यह था, क्यों नहीं श्याम आए ॥

(च) आना प्यारे, महर-सुत[1] का, देखने के लिए हो ।
कोसों जाती, प्रतिदिन चली, ग्वाल की मंडली थी ॥
ऊँचे ऊँचे, तरु पर चढ़े, गोप ढोटे[2] अनेकों ।
घंटों बैठे, तृषित दृग से, पंथ को देखते थे ॥

(छ) पत्ते पत्ते, सकल तरु से, औ लता बेलियों से ।
कोने कोने, व्रज सदन से, पंथ की रेणुओं से ॥
होती सी थी, यह ध्वनि सदा, कुंज से काननों से ।
लोने लोने, कुँवर अब लौं, क्यों नहीं सद्म आये ॥

(ज) जो दो प्यारे, हृदय मिल के, एक ही हो गये हैं ।

१—कृष्ण । २—बेटे ।

क्यों धाता ने, विलग उनके, गात को यों किया है ॥
कैसे आ के, गुरु-गिरि पड़े, बीच में हैं उन्हीं के।
जो दो प्रेमी, मिलित पय औ, नीर लौं नित्यशः थे ॥

(झ) जो मैं कोई, विहग उड़ता, देखती व्योम में हूँ।
तो उत्कंठा-,विवश चित में, आज भी सोचती हूँ ॥
होते मेरे, निबल तन में, पक्ष जो पक्षियों से।
तो यों ही मैं, समुद उड़ती, श्याम के पास जाती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

३३. शिखरिणी (य म न स भ, ल ग) ६, ११

शिखरिणी के प्रत्येक पाद में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। ६ और ११ वर्णों के अनन्तर यति होती है। जैसे—

(क) मिली मैं स्वामी से, पर कह सकी क्या सँभल के?
बहे आँसू हो के, सखि ! सब उपालम्भ गल के।
उन्हें हो आई जो, निरख मुझ को नीरव दया।
उसी की पीड़ा का, अनुभव मुझे हा ! रह गया ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) मनोहारी शय्या, परम सुथरी भूमितल की।
सुहाती क्या ही है, ललित बन के दूब-दल से ॥
नदी के कूलों की, विमल वर इन्दु-द्युति सम[1]।
नई रेती से जो, अति चमकती है निशि दिन[2] ॥

१, २—पादान्त होने के कारण ये वर्ण गुरु माने जायँगे।

(ग) सुरीली वीणा सी, सरस नदियाँ वादन करैं ।
कभी मीठी मीठी, मधुर धुनि से गायन करैं ॥
सदा ही नाचै हैं, झरित झरने नाच नवल[1] ।
निराली शोभा है, विपिन वर की कौतुकमयी ॥

(घ) कभी धीरे धीरे, व्यजन करती मन्द गति से ।
चली आती दौड़ी, पवन मदमाती मलय की ॥
कभी चित्ताकर्षी, शिशिर-कणवर्षी विपिन में ।
दिखाती है शोभा, सुखद, मन लोभा न किस का ?

(ङ) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति-तिय के चंद्र-मुख की ।
नया नीला ओढ़े, वसन चटकीला गगन का ॥
जरी-सलमा-रूपी, जिस पर सितारे सब जड़े ।
गले में स्वर्गंगा, अति ललित माला सम पड़ी ॥
(सत्यशरण रतूड़ी)

(च) बनी को रो बैठे, बिगड़ सुख के साधन गये ।
सुधी थी खो बैठे, धन बिन भिखारी बन गये ॥
न काँटे बोने को, कुमति कुटिलों में भ्रम भरे ।
हमारे रोने को, सुन कर कृपा शंकर करे ॥
(नाथूराम शंकर)

३४. चंचरी (र स ज ज भ र) ८, १०

चंचरी के चारों चरणों में रगण, सगण, दो जगण, भगण और रगण के क्रम से १८-१८ वर्ण होते हैं । आठ और दस वर्णों के बाद विराम होता है । जैसे—

१—पादान्त होने के कारण ये वर्ण गुरु माने जायँगे ।

(क) देखि री बलभद्र मो,हन ग्वाल बालक संग में।
ख्याल भाँतिन के करैं, किलकैं महारस रंग में॥
काछनी कटि में कसैं, पट नील पील विसाल है।
चन्द्रमा घन जुक्त मा,नहुँ अंक विद्युत-जाल है॥
(गदाधरभट्ट)

(ख) आइयो ते[1]हि काल ब्राह्मण यज्ञ को थल देखि कै।
ताहि पूँछत बोलि कै, ऋषि भाँति भाँति विशेष कै॥
संग सुंदर राम ल,क्ष्मण देखि देखि[2] सो हर्षई।
बैठि कै[3] सोइ राजमं,डल वर्णई सुख बर्षई॥

(ग) कौन हो कित ते चले, कित जात हौ[4] केहि काम जू।
कौन की दुहिता बहू, कहि कौन की यह वाम जू॥
एक गाँउर हो कि सा,जन मित्र बंधु बखानिये।
देश के परदेश के, किधौं पंथ की पहिँचानिये॥

(घ) हाइ हाइ जहाँ तहाँ, सब ह्वै रहो सिगरी पुरी।
धाम धामनि सुंदरी, प्रगटीं सबै जे हुतीं दुरी॥
लै गये नृपनाथ को, सब लोग श्री सरयू तटी।
राजपत्नि समेति पु,त्रनि विप्रलाप गढी रटी॥
(केशवदास)

३९. शार्दूल विक्रीड़ित (म स ज स त त, ग) १२, ७

शार्दूलविक्रीड़ित के हर एक चरण में मगण, सगण,जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं। यति

१—४– आदि वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

१२ और ७ वर्णों के बाद होती है। जैसे—

(क) फूले कंज-समान मंजु-दृगता, थी मत्तता कारिनी।
सोने-सी कमनीय कान्ति तन की, थी दृष्टि-उन्मेषिणी[1]॥
राधा की मुसुकान की मधुरता, थी मुग्धता-भूरि[2] सी।
काली कुंचित लम्बमान अलकें, थीं मानसोन्मादिनी॥

(ख) सद्वस्त्रा सदलंकृता गुणयुता, सर्वत्र सम्मानिता।
रोगी-वृद्ध[3]-जनोपकार निरता, सच्छास्त्र चिन्ता[4] परा॥
सद्भावातिरता[5] अनन्य-हृदया, सत्प्रेम संपोषिता।
राधा थीं सुमना प्रसन्नवदना, स्त्रीजातिरत्नोपमा॥

(ग) काले कुत्सित कीट का कुसुम में, कोई नहीं काम था।
काँटे से कमनीयता कमल में, क्या है न कोई कमी॥
दंडों में कब ईख के विपुलता, है ग्रंथियों की भली॥
हा! दुर्दैव प्रगलभ ते अपटुता तू ने कहाँ की नहीं॥

(घ) शोभा-अद्भुत-शालिनी व्रजधरा, प्यारों-पगी गोपिका।
माता प्रीतिमयी सनेह-प्रतिमा, वात्सल्य-धाता पिता॥
प्यारे गोप-कुमार प्रेममणि के, पाथोधि[6] से गोप वे।
भूले हैं न सदैव याद उनकी, देती व्यथा है महा॥

(ङ) प्राणी है यह सोचता समझता, मैं पूर्ण स्वाधीन हूँ।

१—खोलने वाली। २—जड़ी बूटी।
३—बीमार और बूढ़े लोगों की भलाई में तत्पर।
४—सत्य-शास्त्रों के मनन में मग्न। ५—श्रेष्ठ भावों से संयुक्त। ६—समुद्र।

इच्छा के अनुकूल कार्य सब मैं, हूँ साध लेता सदा ॥
ज्ञाता हैं कहते मनुष्य वश में, है काल कर्मादि के।
होती है घटना-प्रवाह-पतिता-स्वाधीनता यंत्रिता ॥

(च) ऊँचे दाड़िम से रसाल-तरु थे, औ आम्र से शिशपा।
यों निम्नोच्च असंख्य पादप कसे, वृन्दाटवी बीच थे ॥
मानो वे अवलोकते पथ रहे, वृन्दावनाधीश का।
ऊँचा शीश उठा मनुष्य-जनता के तुल्य उत्कंठ हो ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(छ) सायंकाल हवा समुद्र-तट की, नैरोग्य कारी यहाँ।
प्रायः शिक्षित सभ्य लोग नित ही, आते इसी से वहाँ ॥
बैठे हास्य-विनोद-मोद करते, सानंद वे दो घड़ी।
सो शोभा उस दृश्य की हृदय को, है तृप्ति देती बड़ी ॥

(ज) छोटे और बड़े जहाज़ जल में, देखो वहाँ वे खड़े।
सो भी दृश्य विचित्र, किन्तु हम को, वे हानिकारी बड़े ॥
ले जाते वर-वस्तु देश-भर की, जाने कहाँ की कहाँ ?
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीज़ें विदेशी यहाँ ॥

(कन्हैया लाल पोद्दार)

३६. स्रग्धरा (म र भ न य य य) ७, ७, ७

स्रग्धरा वृत्त के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से २१ वर्ण होते हैं। हर सातवें वर्ण के बाद विराम होता है। जैसे—

नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग की,
वाटिका है विचित्रा ।

भोक्ता हैं सैंकड़ों ही, मधुप शुक तथा,
कोकिला गानशीला ॥
कौवे भी हैं अनेकों, पर-धन हरने,
में सदा अग्रगामी ।
कोई है एक माली, सुधि इन सब की,
जो सदा ले रहा है ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

सवैया

सवैया किसी विशेष वृत्त का नाम नहीं है। २२ से २६ वर्णों तक के कई वर्ण-वृत्त ही सवैया कहे जाते हैं। हम उन में से कुछ प्रसिद्ध सवैयों का ही वर्णन करेंगे। यह स्मरणीय है कि सवैयों के चारों चरणों की तुक परस्पर मिलती है।

३७. मदिरा सवैया (७ भ+ग)

मदिरा सवैये के प्रत्येक पाद में सात भगण और गुरु के क्रम से २२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) दीन अधीन ह्वै[1] पायँ परी हौं[2]
अरी उपकार को[3] धावहि तू ।
मेरो[4] दशा लखि होइ प्रसन्न
दया उर अन्तर ल्यावहि तू ॥
नैनन को हिय की बिरहागिनि
एक हि बार बुझावहि तू ।

१—१२ आदि—ये वर्ण लघु पढ़े जायँगे ।

श्री मनमोहन रूप सुधा 'मदिरा'
मद मोहिँ छकावहि तू ॥
(भिखारी दास)

(ख) क्षत्रिन के प्रन युद्ध जुवा सजि
बाजि चढ़े गजराजन ही ।
वैस को[५] बानिज और कृषी प्रन
शूद्र के[६] सेवन-साजन ही ॥
विप्रन को प्रन है जु यही सुख
सम्पति सों कुछ काज नहीं ।
कै पढिबो कै[७] तपोधन है कन,
माँगत बाँभनैं[८] लाज नहीं ॥

(ग) चातक संवत मैं इक बूँद पिवै
तिहिँ आश्रित प्रान रहै ।
देखत चंद की[९] ओर चकोर रहै
मिलिबे हु[१०] की आस गहै ॥
प्रान-विथा न बनै चकवान[११] कों
द्यौस सँयोग सदा[१२] ही लहै ।
है न निमित्त हु मित्त ! इतो दुख
चित्त कहौ किहिँ भाँति सहै ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(घ) * भासत एक गुरु मदिरा; गुरु

---

* इस सवैये में अनेक सवैयों के लक्षण संक्षेप में दिए गए हैं । हमारे द्वारा दिए गए लक्षणों से इस का अर्थ स्पष्ट समझ में आजायगा !

दो मिलि मत्त गयन्द गह्यौ ।
गोल समेत चकोर भयो;
सुमुखी सत जालग चंद लयौ ॥
आठहु भागन होत किरीट;
सु दुर्मिल सागण आठ चह्यौ ।
भासत रा अरसात; सुपिंगल
जासत यागण वाम कह्यौ ॥

(विनायक राव)

(ङ) राम को[1] काम कहा ? रिपु जीतहिँ,
कौन कबै रिपु जीत्यो कहाँ ?
बालि बली, छल सों, भृगुनंदन,
गर्व हरों, द्विज दीन महाँ ॥
दीन सो[3] क्यों ? छिति छत्र हत्यो,
बिन प्रानन हैहय राज कियो ।
हैहय कौन ? वहै बिसँयों,
जिन खेलत ही तुम्हें[6] बाँधि लियो ॥

(च) तोरि शरासन शंकर को शुभ सीय स्वयंवर माँझ वरी ।
ताते[7] बढ्यो अभिमान महा मन मेरियो[8] नेक न शंक करी ॥'
"सो अपराध परो हम सों अब क्यों सुधरै तुमहूँ धौं कहो।"
"बाहु दै[10] दोऊ कुठारहि केशव आँपने धाम[12] को पंथ गहो॥"

(केशवदास)

१—१२ ये सब वर्ण लघु पढ़े जायँगे।

३८. मत्तगयन्द सवैया (७ भ + ग ग)

(अन्यनाम-मालती)

मत्तगयन्द सवैये के प्रत्येक पाद में सात भगण और दो गुरु के क्रम से २३ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) जाल प्रपंच पसार घने कुल-गौरव का उर फाड़ रहा है।
मानव-मंडल में मिल दाहक दानव दुष्ट दहाड़ रहा है॥
जाति-समुन्नति की जड़ को कर, घोर कुकर्म उखाड़ रहा है।
भूल गया प्रभु-शंकर को जड़ जीवन जन्म बिगाड़ रहा है॥

(नाथूराम शंकर)

(ख) हो रहते तुम नाथ जहाँ रहता मन साथ सदैव वहीं है।
मंजुल मूर्ति बसी उर में वह नेक कभी टलती न कहीं है॥
लोलुप लोचन को दिखती वह चारु घटा सब काल यहीं है।
है वह योग मिला हम को जिस में दुख-मूल वियोग नहीं है।

(गोपाल शरणसिंह)

(ग) प्रात-प्रयाण-कथा सुन के उसके मुख-पंकज का मुरझाना।
और ज़रा हँस के उसका अपने मन का वह भाव छिपाना॥
किन्तु अचानक ही उसके वर लोचन में जल का भर आना।
संभव है न कभी मुझ को इस जीवन में वह दृश्य भुलाना॥

(गोपाल शरणसिंह)

(घ) या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख नंद की गाय चराय बिसारौं।
खान कहै इन नैनन तें ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिन हू कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं॥

(ङ) धूर भरे अति सोभित स्यामजू[1] तैंसी[2] बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैंजनी[3] बाजत पीरी[7] कछोटी॥
वा छवि को रसखान विलोकत वारत काम कला निज कोटी।
काग के[8] भाग बड़े सजनी हरि-साथ सो लै[9] गयो[10] माखन रोटी।
(रसख़ान)

(च) दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि, वेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं॥
राम को[11] रूप निहारति जानकि कंकन के नग की परछाहीं।
यातें[12] सबैं सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारति नाहीं॥
(तुलसीदास)

(छ) सीस पगा न झँगा तन मैं प्रभु जानै[13] को[14] आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती[15] फटी सी[16] लटी दुपटी अरु पाँय उपानह की नहिँ सामा।
द्वार खरौ द्विज दुर्बल एक रहयो चकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को[17] धाम बतावत आपनो[18] नाम सुदामा॥
(नरोत्तमदास)

(ज) आतम ही रथवान प्रमान शरीरहिँ जो रथ रूप बनावै।
बुद्धि बने वर सारथी आय सु मानस केरि लगाम लगावै॥
इन्द्रिय बाजि जुते जब जाय कुचाल सयत्न सुचाल चलावै।
सत्य 'विनायक' विष्णु समीप अपारहि मारग पार सु पावै॥
(विनायक राव)

१—१८।—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।
१—१०।—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत्-होगा।

(झ) दाम की दाल छदाम के[3] चाउर घी अँगुरीन लै[4] दूरि दिखायो ।
दोनौं[5] सौं[6] नोन धर्यो कछु आनि सबै तरकारी[7] को[8] नाम गनायो ॥
विप्र बुलाय पुरोहित को अपनी बिपती सब भाँति सुनायो ।
साहसी आज सराध कियो सो भली विधि[10] सौं पुरखा फुसलायो

(कविता कौमुदी)

३९. चकोर सवैया (७ भ+ग ल)

चकोर सवैये के चारों चरणों में सात सात भगण और गुरु लघु के क्रम से २३, २३ वर्ण होते हैं। जैसे —

(क) सोहत है तुलसी बन में
रुचि रास मनोहर नंद किशोर ।
चारि हु पास हैं[1] गोप-वधू
मणि दास हिये में[2] हुलास न थोर ॥
नीर-ज गोपवधून को[3] आनन
मोहन नैन भ्रमै जिमि भौंर ।
मोहन-आनन चंद लखे वनितान
के[4] लोचन चारु 'चकोर' ॥

(भिखारीदास)

(ख) हे प्रिय बन्धु, विरोध मिटा कर
प्रीति प्रचार करो सब ओर ।

१—४:—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा ।

संयमशील बनो मतिमान
सुधार करो प्रण ठान कठोर ॥
चेत करो, धिक जीवन है
यदि नाम मिला जग में कुलबोर[1] ।
छोड़ घनो बकवाद बनो बस
भारत-उन्नति-चंद्र-चकोर ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

४०. दुर्मिल सवैया (८ सगण)

(अन्यनाम, चंद्रकला)

दुर्मिल सवैये के प्रत्येक पाद में आठ सगण (।।ऽ) के क्रम से २४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) उपदेश अनेक सुने मन को
रुचि के अनुसार सुधार चुके ।
धर ध्यान यथाविधि मंत्र जपे
पढ़ वेद पुराण बिसार चुके ॥
गुरु-गौरव धार महन्त बने
धनधाम कुटुम्ब विसार चुके ।
कवि शंकर ज्ञान बिना न तरे
सब ओर फिरे झख मार चुके ॥
(नाथूराम शंकर)

१—कुल को डुबोने वाला ।

(ख) द्विज वेद पढ़ैं सुविचार बढ़ैं बल पाय चढ़ैं सब ऊपर को।
अविरुद्ध रहैं ऋजु पंथ गहैं परिवार कहैं वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरैं पर दुःख हरैं तन त्याग तरैं भव सागर को।
दिन फेर पिता,वर दे सविता कर दे कविता कवि शंकर को॥
(नाथूराम शंकर)

(ग) इसके अनुरूप कहैं किसको वह कौन सुदेश समुन्नत है।
समझैं सुर-लोक समान इसे उनका अनुमान असंगत है॥
कवि-कोविद वृन्द बखान रहे सब का अनुभूत यही मत है।
उपमान-विहीन रचा विधि ने बस भारत के सम भारत है॥

(घ) पुर ते निकसी रघुवीर-वधू
धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकी भरि भाल कनी जल की
पट सूखि गए मधुराधर वै॥
पुनि बूझति हैं चलनोऽब कितो
पिय पर्नकुटी करिहो कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

(ङ) बर दंत की पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन बीच जगै छबि मोतिन-माल अमोलन की॥
घुँघुरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की।
निवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाँउ लला इन बोलन की॥

१, २—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

(च) दरसे बिन मोहनी[१] मूरति
लालची[२] लोचन भे कुढि कातर से।
तरसे हीं[३] रहैं न लहैं पतियाँ
पिय प्यारे[४], तिहारे[५] लिखी कर से॥
कर सेव बड़ों की[६] बितायौं[७]
चहौं दिन पै भए द्रोपदीअंबर से।
बरसे बिन नैन रहैं बरजे
न रहे बन सावन बादर से॥
(अर्जुनदास केडिया)

(छ) जकड़े हम को तुम खूब रहो,
परवा न हमें इस बंधन की॥
कुछ सोच नहीं हम को इसका
नित है बढ़ती तनुता तन की॥
रहता तुम में अनुराग जिसे
कुछ भीति उसे न किसी जन की।
तुम हो रहते जिसके मन में
खलती उस को न व्यथा मन की॥
(गोपालशरणसिंह)

१, ९—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।
१—इस वर्ण का उच्चारण लघुवत् होगा।

४१. वाम सवैया (७ जगण + १ यगण)

(अन्यनाम-मकरंद)

वाम सवैये के प्रत्येक पाद में सात जगण और एक यगण के क्रमसे २४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) लसै द्विजैं[13] औरहि मुत्तियँ[14]-माल

पयोनिधि मैं उपजै नहिँ जो है।

भए न सरोवर अंबुज और

सुलोचन कान्ह कुमारहिँ मोहै॥

सरोरुह में न रहै अरु लच्छिँ[15]

प्रतच्छ सुलच्छँनि[16] तो सम को है।

सदा परिपूरन तो मुख राधे

सुधाँधर[17] और धरा पर सोहै॥

(अलंकार आशय)

(ख) कंप उर वानि डगै बर डीठि[18]

त्वचाऽति कुँचै[19] सकुचै मति-बेली।

नवै[20] नवग्रीव थकै गति केशव

बालक ते सँगही सँग खेली॥

लिए सब आँधिन[21] व्याधिन संग

१—१२ ये सब वर्ण लघुवत् पढ़े जायँगे!

१३—दाँत। १४—मोतियों की माला १५—लक्ष्मी।

१६—सुलक्षणों वाली। १७—चन्द्र। १८—दृष्टि।

१९—सिकुड़े। २०—झुक जाती है। २१—मानसी व्यथा

जरा जब आवै[4] ज्वरा की सहेली।
भगै सब देह दसा जिय साथ
रहै दुरि दौर दुराशा अकेली ॥
(केशवदास)

(ग) अकेलो ही[5] है मुनि को यह
बाल तऊ भय-भीत न रंचै[22] लइवावै।
मनौ कुलहाँ[23] रघुबंस को[1] चारु
दुंयों[1] जिय नेह-लता उलहौंवै[24] ॥
दलै गज-गंड-थलीन[11] की ग्रंथि
जबै धनु घोर कठोर भचावै।
[12]घियों बहु बीरन सो चहुँ तीर
चलावत मो उर कौतुक छावै ॥
(सत्यनारायण कविरत्न)

४२. अरसात सवैया (७ भार)

अरसात सवैये के प्रत्येक पाद में सात भगण और एक रगण के क्रम से २४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) भाव भला उस के मन के
किस भाँति कहूँ वह है न बखानता।
ली न कभी उस ने सुध भी
अपना जन क्या न मुझे वह मानता ॥

२२—ज़रा भी। २३—कुल का नाशक।
२४—पल्लवित करे।

जान सका यह क्यों न मुझे
कहते सब हैं वह है सब जानता।
है नित ही रहता उर में फिर
क्यों न मुझे वह है पहचानता॥
(गोपालशरणसिंह)

(ख) आयु को[1] बाहन बैल बली बनिताहु को[2],
बाहन सिंहहिँ पेखि कै।
मूसे[3] को[4] बाहन है सुत एक सु दूजो[5]
मयूर कैं[6] पच्छ बिसेखि कै॥
भूषन है कवि "चैन" फनिंद कें[7] बैर परे
सब ते सब लेखि कै।
तीन हुँ लोक कें[8] ईश गिरीश[9] सु योगी
भये घर की गति देखि कै॥

(ग) साज सज्यौ नृप रामहिँ राज लौं[10] रीति
जथा कुल वेद-पुरान की।
बाजैं[11] बधाईं[12] भरी धुनि धामनि कोकिल-
कंठिन के कल गान की॥
सो सपनो सो[13] भयौ सपने हु न जानी[14]
वही भई[15] बात अठान की।
आजु अचानक सानुज जानकी[16] जानकी[17]-
जीवन के बन जान की॥

(घ) सोहत सर्वसहा सिव-सैल तें
सैल हुकाम लतान-उमंग तें ।
कामलता विलसैं जगदंब तें अब हु
संकर के अरधंग तें ॥
संकर-अंग हु उत्तम अंग तें उत्तम
अंग हु चंद प्रसंग तें ।
चंद जटान के जूटन राजत जूट जटान
के गंग-तरंग तें ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(ङ) साहस कै बस कै रिस कै जब माँगी
बिदेस-बिदा मृदु बानि सौं ।
सो सुनि बाल रही मुरझाइ दही बर
बेलि ज्यों धीर दवानि[1] सौं ॥
नैन गरो हियरो भरि आयौ पै बोल न
आयौ कछू वा सुजानि सौं ।
सालैं अजौं हिय माँझ गड़ी वे बड़ी
अँखियाँ उमड़ी अँसुवानि सौं ॥
(अलंकार आशय)

(च) जो अनवेद्य अनादि अनन्त
अखंड अनन्य अनूप अकाम है ।
जाहि निरूपहिँ वेद सदा
कहि नित्य निरीह निरंजन नाम है ॥

१—जंगल की आग, दावानल ।

जो जनरंजन दुष्ट-विभंजन
गंजन-गर्व 'हरी' सुखधाम है।
सोइ त्रिलोक को नाथ अली,
वृषभानुलली की गली को गुलाम है॥
(वियोगी हीर)

(छ) आनन है अरविंदन फूले
अली-गन ! भूले कहा मँडराते हो।
कीर तुम्हैं कहा बाई लगी
भ्रम बिंब के ओठन कों ललचात हो॥
'दासजू' ब्याली न वेनी-बनाव
है पापी कलापी कहा इतरात हो।
बोलती बालन बाजती बीन
कहा सिगरे मिलि घेरत जात हो॥
(भिखारीदास)

(ज) प्यार-पगे पिय प्यारे सों प्यारी !
कहा इमि कीजत मान मरोर है।
है 'रतनाकर' पै निसि-बासर तो
छवि-पानिय को तरसो रहै॥
है मन-मोहन मोह्यौ पै तो पर

१—२८ ये सभी वर्ण लघुवत् माने और पढ़े जायँगे। शेष पद्यों में भी कई एक स्थल ऐसे हैं जहाँ गुरु वर्णों का उच्चारण लघुवत् करना पड़ेगा। विद्यार्थी इसी प्रकार अब उन्हें स्वयं ढूंढ लेंगे, यह हमें विश्वास है।

है घन स्याम पै तेरो तो मोर है।

है जग-नायक चेरो पै तेरो है

है व्रजचन्द पै तेरी चकोर है॥

(बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर)

४३. किरीट (८ भ)

किरीट सवैये के प्रत्येक पाद में आठ भगण के क्रम से २४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) सभ्य समागम के प्रतिकूल न,

मूढ़! भयानक चाल चला कर।

वञ्चक ! बान बिसार बुरी,

रच दंभ किसी कुल को न छला कर॥

देख विभूति महाजन की पड़

शोक-हुताशन में न जला कर।

शङ्कर को भज रे भ्रम को

तज रे भवका भर पूर भला कर॥

(नाथूराम शङ्कर)

(ख) बंधु बिरोध करें सिगरो झगरो

नित होत सुधारस चाटत।

मित्र करै करनी रिपु की

धरनी-धर देखि न न्याउ निपाटत॥

"राम" कहै विष होत सुधा

१—अग्नि।

घर नारि सती पति सों चित्त फाटत ॥
भा विधिना[1] प्रतिकूल जबै
तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटत ॥
(कविता कौमुदी)

(ग) पुन्यहि पूरण पाप विनाशन
निर्मल कीरति भक्ति बढ़ावन।
दायक ज्ञान रु घायक[1] मोह
विशुद्ध सुप्रेममयी मुद पावन ॥
श्रीमद् रामचरित्र सुमानस नीर
सुभक्ति समेत नहावन ।
'नायक' ते जन सूरज रूप
जहान के ताप को ताप नशावन ॥
(विनायक राव)

(घ) पायँन पीरिये पाँवरिया[2] कटि
केशरिया दुपटा छवि छाजित ।
गुंज मिले गजमोतिय हार में
रीति सितासित[3] भाँति है भाजित ॥
अंग अपार प्रभा अवलोकत
होत हजार मनोभव[4] लाजित ।

---

१ दैव।

१—नाशक। २—खड़ाऊँ। ३—सफ़ेद और काला।
४—कामदेव।

बाल यशोमति लाल यई जिन के
शिर मोर 'किरीट' विराजित ॥
(भिखारीदास)

(ङ) एक दिएँ जहँ कोटिक होत हैं
सो गुरु खेत में जाइ अन्हाइय ।
तीरथराज प्रयाग बड़े मनवाँछित
के फल पाइ अघाईय ॥
श्रीमथुरा बसि केसवदास जू ह्वै
भुज ते भुज चार ह्वै जाइय ।
कासी पुरी की कुरीति बुरी जहँ
देह दिएँ पुनि देहँ न पाइय ॥
(केशवदास, द्वितीय)

(च) ज्यौं करुना परिपूरित नेह सौं
कोउ सुभासुभ कर्म निहार न ।
भागीरथी ! नहिँ छोड़ सको
तुम पापी हजारन को नित तारन ॥
त्यौं अघ-ओघन सौं मोहिँ
प्रेम है ताहि न हौं हुँ सकौं करिवारन ।

५—माता यशोदा । ६—तृप्त होइए ।

७—पुनर्जन्म नहीं होता, मोक्ष हो जाता है ।

१—पापों के पुञ्ज ।

काहू सौं ह्वै न सकै जननी !
जग में अपनी ये स्वभाव निवारन ॥
(सेठ कन्हैया लाल पोद्दार)

४४. सुन्दरी सवैया (८ स+ग)

सुन्दरी सवैये के हर एक चरण में आठ सगण और एक गुरु के क्रम के २५ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हम दीन दरिद्र हुतांशन[1] में
दिन रात पड़े दहते रहते हैं।
बिन मेल विरोध महानद में
मन बोहित से बहते रहते हैं ॥
कवि शङ्कर काल कुशासन की
फटकार कड़ी सहते रहते हैं।
पर भारत के गत गौरव की
अनुभूत कथा कहते रहते हैं ॥
(नाथू राम शङ्कर)

(ख) सुख शान्ति रहे सब ओर सदा
अविवेक तथा अघ पास न आवें।
गुण शील तथा बल बुद्धि बढ़े
हठ वैर विरोध घटैं मिट जावें ॥
सब उन्नति के पथ में विचरैं
रति-पूर्व परस्पर पुण्य कमावें।

१—अग्नि।

दृढ़ निश्चय और निराम[1]य हो
कर निर्भय जीवन में जय पावें ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(ग) मन चंचल और नपुंसक है
इस भाँति विचार बसीठ[2] बनाया
वह पास गया जिसके उसने
रस खेल खिलाय वहीं विरमाया ॥
निशि बीत चुकी पर भामिनि को
अब लों कवि शंकर साथ न लाया।
पढ़ पाठ महामुनि पाणिनि के ॥
हम ने फल हाय ! भयानक पाया ॥

(नाथूराम शंकर)

(घ) अयि ! देव नदीस-सुता-पति[3]
बोलि रहे कल कुंजन में चलु प्यारी।
व्रज देव-नदी[4] न सुनी सपने
कबहूँ कहुँ काहु न ईस-कुमारी।
तजि तेंह[5] चलौ तिल-फूल-नसी[6] !
तिल-फूलन-सी चलि है को गँवारी।

१—नीरोग। २—दूत।—विष्णु। ३—गंगा। ४—शिवजी की पुत्री ५—क्रोध। ६—तिल-फूलवत् नासिका वाली। अगले पद्यों में ऐसे कई वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़गा।

पटु हास-विलासन यों भवभीति
हमारी हरौ वृषभानु-दुलारी॥
(अर्जुनदास केडिया)

(ङ) मुनिनाथ के गात रुमांचन साथहि
वो सहसा सिव-चाप उठायौ ।
नर-नाथन के मुख-मंडल-साथहि
जो अवनी-तल-ओर नमायो ॥
मिथिलेस-सुता-मन-साथहि त्यौं
गुन खैंचिकै जो छिनमाहिँ चढ़ायौ।
भृगुनाथ के गर्व अखंडित साथ सो
खंडित कै रघुनाथ गिरायौ ॥
(कन्हैया लाल पोद्दार)

४९. सुख (८ स+ल ल)

सुख सवैये के प्रत्येक पाद में आठ सगण और दो लघु के क्रम से २६ वर्ण होते हैं। जैसे—

सरजू-सरिता-तट-वाटिका में रट
लागि रही बरटा बिन संक हि ।
तिहिँ हाँ समुझै नहिँ कोकिल कों
चढि बैठ्यो जु काक रसाल कें अंक हि ॥
सब ही की महानता होवत है जब
थान कों आन परै जु अतंक हि।

१—९ इन वर्णों को लघु माना और पढ़ा जायगा।

कसतूरिकाँ जानहिंगे जग मैं नयपाल
भुवाल कें भाल कें पंक हि ॥
(जसवंवत जसो भूषण)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. मल्लिका और श्लोक अनुष्टुप् छन्दों के भेद को उदाहरणों के बिना स्पष्ट जरो ।

२. श्लोक अनुष्टुप् में दूसरे वर्ण-वृत्तों से क्या विशेषता है ? उदाहरण देकर अभिप्राय को दर्शाओ ।

३. चम्पक माला अथवा सारवती छन्द का उदाहरण लिख कर उस में उसी छन्द का लक्षण समन्वित करो ।

४. शालिनी, भुजंगी तथा रथोद्धता छन्दों में से किन्ही दो के लक्षण और उदाहरण लिखो ।

५. उक्त तीनों छन्दों का केवल एक एक चरण लिख कर इन छन्दों के पारस्परिक भेद को स्पष्टतया दिखाओ ।

६. इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा तथा उपजाति छन्दों के भेद को सम्यक् प्रकट करो । उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं ।

७. उक्त तीनों छन्दों में से किन्हीं दो के लक्षण और उदाहरण लिखो ।

८. स्वागता, दोधक और इन्दिरा छन्द कितने कितने वर्णों के हैं ? केवल एक एक पाद लिख कर इनके अन्तर को प्रकट करो ।

९. ११, ११ वर्णों के किन्हीं चार वृत्तों के नाम और लक्षण-मात्र लिखो।

१० भुजंगी और भुजंग प्रयात छन्दों में क्या भेद है? उदाहरण देकर विशद करो।

११. भुजंगप्रयात, स्रग्विणी और तोटक वृत्तों के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो।

१२. मोतियदाम, तरलनयन और मोदक वृत्तों के उदाहरण लिख कर सिद्ध करो कि वे उदाहरण इन्हीं वृत्तों के हैं।

१३. द्रुतविलम्बित, वंशस्थ और इन्द्रवंशा छन्दों में से किन्हीं दो के लक्षण और उदाहरण दो।

१४. कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के प्रत्येक पाद में चार यगण या चार रगण आते हों।

१५. कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के हर चरण में चार सगण या चार जगण आते हों।

१६. कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के चारों पादों में १२, १२ वर्ण लघु हों।

१७. १२, १२ वर्णों के वृत्तों में से जो चार वृत्त आप को सब से सुन्दर प्रतीत हों उनका एक एक उदाहरण दो।

१८. प्रहर्षिणी और कञ्ज-अवलि वृत्तों में क्या भेद है? दोनों का एक एक पाद लिख कर भाव को स्पष्ट करो।

१९. वसन्त तिलका और मुकुन्द वृत्तों में से किसी एक का विस्तृत वर्णन करो।

२०. १५, १५ वर्णों के वृत्तों का नाम-निर्देश कर मालिनी और चामर के भेद को उदाहरणों द्वारा दर्शाओ।

२१. १६ वर्णों के किसी एक वृत्त का नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो।

२२. मन्दाक्रान्ता और शिखरिणी कितने कितने वर्णों के वृत्त हैं? दोनों के अन्तर को उदाहरण दे कर स्पष्ट करो।

२३. शार्दूल-विक्रीडित वृत्त का एक पद्य लिख कर सिद्ध करो कि यह वही छन्द है।

२४. चञ्चरी और स्रग्धरा वृत्तों के लत्तणमात्र लिखो।

२५. निम्न लिखित सवैयों में से किन्हीं तीन के लक्षण लिख कर उन का एक एक उदाहरण दो—मदिरा, मत्तगयंद, दुर्मिल, अरसात, किरीट, सुन्दरी।

२६. मदिरा और मत्तगयंद सवैयों के भेद को एक एक उदाहरण दे कर स्पष्ट करो।

२७. दुर्मिल और किरीट सवैयों का एक एक उदाहरण द्वारा भेद दिखला कर सिद्ध करो कि ये वही सवैये हैं।

२८. अरसात और सुन्दरी सवैयों के अन्तर को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो।

२९. मात्रिक सवैया,समान सवैया और दुर्मिल सवैया नामक छन्दों के अन्तर को विशदता-पूर्वक लिखो।

३०. मात्रिक सम और वर्ण-सम छन्दों के भेद को एक एक उदाहरण देकर सम्यक् स्पष्ट करो।

सप्तम अध्याय

वर्णार्धसम वृत्त

जिन छन्दों के पहले तथा तीसरे और दूसरे तथा चौथे चरणों में वर्ण-संख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्णार्धसम वृत्त कहते हैं। हिन्दी-भाषा में इन छन्दों का व्यवहार बहुत कम होता है, तो भी हम ने इनका अति संक्षिप्त वर्णन करना उचित समझा है ताकि विद्यार्थी छन्द के इस भेद से नितान्त अनभिज्ञ न रह जायँ।

१. सुन्दरी

सुन्दरी वृत्त के विषम पादों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से १०, १० वर्ण तथा सम पादों में सगण, भगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११, ११ वर्ण होते हैं। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा।

जय हो उस कालिदास की,
कविता-केलि-कला-विलास की ॥

(ख) जल से तट है सटा पड़ा,
तट के ऊपर अट्ट है खड़ा।
खिड़की पर उर्मिला खड़ी,
मुँह छोटा, अँखियाँ बड़ी बड़ी !

(ग) कृश देह, विभा भरी भरी,
धृति सूखी, स्मृति ही हरी हरी !
उड़ती अलकें जटा बनी,
बनने को प्रिय-पाद-मार्जनी !

(घ) तितली उड़ नित्य नाचती,
सुमनों के सब वर्ण जाँचती।
जड़ पुष्प उसे निहारते,
निज सर्वस्व सदैव वारते ॥

(ङ) कमला–तट वाटिका बड़ी,
जिस में हैं सर, कूप, बावड़ी।
मणि–मन्दिर में महा–सती,
गिरिजा हैमवती विराजती ॥

(च) कलिकावलि फूटने लगी,
अलि-आली उड़ टूटने लगी।
नभ की मसि छूटने लगी,
हरियाली हिम लूटने लगी ॥

(छ) विहगावलि बोलने लगी,
यह प्राची पट खोलने लगी।
अटवी हिल डोलने लगी,
सरसी सौरभ घोलने लगी॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

२. द्रुतमध्या

द्रुतमध्या वृत्त के विषम चरणों में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११, ११ वर्ण होते हैं तथा सम चरणों में नगण, दो जगण और यगण के क्रम से १२, १२। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४६ वर्ण होते हैं। जैसे –

रामहिँ सेवहु रामहिँ गावो।
तन मन दै नित सीस नवावो॥
जन्म अनेकन के अघ जारो।
हरि हरि गा निज जन्म सुधारो॥

(भानुकवि)

३. पुष्पिताग्रा

पुष्पिताग्रा वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२, १२ वर्ण होते हैं और सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३, १३। इस प्रकार समस्त छन्द में कुल ५० वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) फिरि फिरि भ्रमि कै कहै नवेली,
विधि यह कौन प्रकार की चमेली।

रँग धरति कनैल[1]-पाखुरी के ।
छुवति जि पुष्पित अग्ग आँगुरो के ॥

(भिखारीदास)

(ख) प्रभु सम नहिँ अन्य कोई दाता ।
सु धन जु ध्यावत तीन लोक त्राता ॥
सकल असत कामना विहाई ।
हरि नित सेवहु मित्त चित्त लाई ॥

(भानु कवि)

---

१. एक वृक्ष का नाम है ।

अष्टम अध्याय

वर्ण-विषम-वृत्त

जिन छन्दों के तीन या चार चरणों में वर्ण-संख्या और वर्ण-क्रम भिन्न भिन्न हों, अथवा जिनकी पाद-संख्या चार से न्यून या अधिक हो, उन्हें वर्ण-विषम वृत्त कहते हैं । वर्णार्ध-समों के समान हिन्दी में इनका प्रचार भी बहुत कम है, इसी लिए हम भी इनका परिचय-मात्र ही करायँगे।

१. ललित

ललित वृत्त के प्रथम पाद में सगण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० वर्ण, द्वितीय में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण, तृतीय में दो नगण और दो सगण के क्रम से १२ वर्ण तथा चतुर्थ में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४५ वर्ण होते हैं। जैसे—

सब त्यागिये असत काम।
शरण गहिये सदा हरी॥

भव जनित सकल दुःख टरी।
भजिये अहो निशि हरी हरी हरी॥

(भानु कवि)

२. मिलिन्दपाद

मिलिन्दपाद छन्दों का परिचय मात्रिक विषम छन्दों के प्रकरण में दिया जा चुका है। यहाँ पर इतना और समझ लेना चाहिए कि जैसे मात्रिक छन्दों में मिलिन्दपाद हो सकते हैं, वैसे ही वर्ण-वृत्तों में भी। मात्रिक मिलिन्दपाद का उदाहरण उसी स्थान पर दिया गया है। वर्णवृत्तात्मक मिलिन्दपादों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

(क) तोटक-आत्मक मिलिन्दपाद

जिस छन्द में तोटक (चार सगण) के छः पाद होते हैं, उसे तोटकात्मक मिलिन्दपाद कहते हैं। जैसे—

(क) प्रभु शंकर, तू यदि शंकर है।
फिर क्यों विपरीत भयंकर है॥
करतार उदार सुधार इसे।
कर प्यार निहार न मार इसे॥
मृगराज कहाय कुरंग हुआ।
बस भारत का रस भंग हुआ॥

(ख) बिन शक्ति समृद्धि-सुधा न रही।
अधिकार गया वसुधा न रही॥
बल साहस हीन हताश हुआ।

कुछ भी न रहा सब नाश हुआ ॥
रजनीश प्रताप-पतंग हुआ ।
बस भारत का रस-भंग हुआ ॥

(ग) मत-भेद भयानक-पाप रहा ।
बिन प्रेम न मेल-मिलाप रहा ॥
अभिमान अधोमुख ठेल रहा ।
अधमाधम ढोंग ढकेल रहा ॥
सुख-जीवन का मग तंग हुआ ।
बस भारत का रस भंग हुआ ॥

(घ) अवधेश धनुर्धर राम नहीं ।
व्रजनायक श्री घनश्याम नहीं ॥
अब कौन पुकार सुने इस की ।
परमाकुल गैल गहे किस की ॥
तड़पै मृग-तोय-तरङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥

(नाथू राम शङ्कर)

(ख) भुजंगी-आत्मक मिलिन्दपाद

जिस छन्द में भुजंगी (य य य, ल ग) के छः चरण हों, उसे भुजंग्यात्मक मिलिन्द पाद कहते हैं। जैसे—

(क) सुधी साधु को मान खाना न दो ।
किसी दीन को एक दाना न दो ॥
बड़े हो बड़ा दान देना वहाँ ।

बड़ाई करे वर्ण-माला जहाँ ॥
करें ख्याति की ठोस क्यों खोखली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(ख) कभी गाय बूढ़ी नहीं पालना ।
किसी मिश्र को दान दे डालना ॥
बड़ाई मिलेगी बड़ी आप को ।
इसी भाँति काटा करो पाप को ॥
कहौ गैल गो-लोक की जान ली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(ग) बड़ी चाह से ब्याह बूढ़े करें ।
नकीले कुलों की कुमारी वरें ॥
न बेटा सगी सास बाला कहै ।
न मा जी लला साठसाला कहै ॥
कहै क्यों न बाबा बधू बावली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(घ) धता इंडिया की धजों को कहो ।
सजे लंडनी फ़ैशनों से रहो ॥
बराँडी पियो मीट खाया करो ।
टके होटलों के चुकाया करो ॥
वरो नारी गोरी मरे साँवली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(ङ) अमीरो धुआँ धार छोड़ा करो ।
पड़े खाट के बान तोड़ा करो ॥

मज़ेदार मूँछें मरोड़ा करो ।
निठल्ले रहो काम थोड़ा करो ॥
चबाते रहो पान दौरे डली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(नाथूराम शङ्कर)

नवम अध्याय

वर्ण-दंडक वृत्त

जिन वर्ण-सम वृत्तों के प्रत्येक पाद में २६ से अधिक वर्ण हों, उन्हें वर्ण-दंडक कहते हैं। ये पाद इतने लंबे होते हैं कि इनका उच्चारण एक ही साँस में सहज में नहीं हो सकता। बोलते समय बीच में रुकना पड़ता है। यही दंड है और इसी कारण ये दंडक कहे जाते हैं।

वर्ण-दंडकों के मुख्यतया दो भेद होते हैं—साधारण और मुक्तक। साधारण दंडकों के प्रत्येक बाद में अन्य वर्ण-सम-वृत्तों के समान वर्ण-क्रम निश्चित होता है। मुक्तक दंडक इस बंधन से मुक्त हैं। उन में वर्ण-क्रम निश्चित नहीं होता, पर किसी किसी में कहीं कहीं गुरु, लघु का नियम रहता है। दोनों में यही अन्तर है। मुक्तक दंडकों में वर्णवृत्तों का पूर्वोक्त लक्षण पूर्णतया नहीं घटता, क्योंकि इन में वर्णक्रम अनिश्चित होता है। अतः इन्हें उनका अपवाद-सा समझना चाहिए। नीचे दोनों प्रकार के दंडकों का संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

(क) साधारण दंडक

१. सुधानिधि (१६ बार ऽ।)

सुधानिधि के प्रत्येक पाद में १६ बार गुरु लघु के क्रम से ३२ वर्ण होते हैं। जैसे—

का करै समाधि साधि का करै विराग जाग का करै
अनेक योग भोगहू करै सु काह।
का करै समस्त वेद औ पुराण शास्त्र देखि कोटि जन्म
लो पढ़ै मिलै तऊ कछू न थाह॥
राज्य लै कहा करै सुरेश ओ नरेश ह्वै न चाहिए कहूँ
सु दुःख होत लोक लाज माह।
सात द्वीप खंड नौ त्रिलोक संपदा अपार ले कहा सु
कीजिये मिलैं जु आप सीयनाह॥
(काव्यसुधाकर)

२. अनंगशेखर (ल ग यथेष्ट)

अनंगशेखर के प्रत्येक पाद में वर्ण-संख्या २६ से कम नहीं होती; अधिक चाहे जितनी हो। इस में लघु गुरु की अनेक आवृत्तियाँ होती हैं। यह भूलना न चाहिए कि चारों चरणों में वर्ण-संख्या समान ही रहेगी। जैसे—

तड़ाग नीर-हीन ते सनीर होत केशोदास
पुंडरीक झुंड भौंर मंडलीन मंडहीं।
तमाल वल्लरी समेति सूखि सूखि कै रहे तें[२]

१, २—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

बाग फूलि फूलि कै समूल शूल खंडहीं॥
चितै चकोरनी चकोर मोर मोरनी समेत
हंस हंसिनी समेत शारिका सबै पढ़ैं।
जहीं जहीं विराम लेत रामजू तहीं तहीं अनेक
भाँति के अनेक भोग भाग सो बढ़ैं॥
(केशवदास)

(ख) मुक्तक दंडक

१. मनहरण (३१ वर्ण, अन्त्य गुरु) १६, १५

(अन्यनाम—मनहर, घनाक्षरी, कवित्त)

मनहरण के प्रत्येक पाद में ३१ वर्ण होते है। १६, १५ वर्णों पर विश्राम होता है। पादान्त का वर्ण गुरु होता है, शेष वर्णों में गुरु लघु का कोई बंधन नहीं। मुक्तकों के चारों चरणों की तुक समान होती है। मुक्तकों में मनहरण का प्रचार सब से अधिक है। जैसे—

(क) पावक से रूप, स्वाद पानी से, मही से गन्ध,
मारुत से छूत, शब्द अंबर से पाते हैं।
खाते हैं अनेक अन्न, पीते हैं पवित्र पेय,
रोम, पाट, छाल, तूल, ओढ़ते, बिछाते हैं॥
अन्य प्राणियों को जाति-योग से मिले हैं भोग,
ज्ञान-सिद्ध साधनों से मानव कमाते हैं।
शंकर दयालु-दानी देता है दया से दान,
पाय पाय प्यारे जीव जीवन बिताते हैं॥
(नाथूराम शंकर)

(ख) चामर-सी चंदन-सी चंद्रिका-सी चन्द-ऐसी,
चाँदनी चमेली चारु चाँदी-सी सुघर है।
कुंद-सी कुमुद-सी कपूर-सी कपास-ऐसी,
कलपतरु-कुसुम-सी कीरति-सी बर है।
'पूरण' प्रकास-ऐसी काँस-ऐसी हास-ऐसी,
सुख के सुपास ऐसी सुषमा की घर है।
पाप को ज़हर ऐसी कलि को कहर-ऐसी,
सुधा की छहर ऐसी गंगा की लहर है॥
(देवीप्रसाद पूर्ण)

(ग) चर्चा जहाँ देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले,
और नहीं खुले कहीं खुदाकी खुदाई में।
मेरे कान गान सुनें साँचे देश-भक्तन के,
और गान आवे कभी मेरे न सुनाई में॥
मेरे अंग रंग चढ़े एक देश-प्रेम को ही,
और रंग भंग हो के बूड़ जा तराई में।
मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीव,
मेरो सब लगे प्रभो देश की भलाई में।
(गिरिधर शर्मा)

(घ) इन्द्र जिमि जम्भ पर वाडव सुअम्भ पर,
रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है॥
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर,

भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छबंस पर सेर सिवराज है॥

(ङ) देवल गिरावते फिरावते निशान अली,
ऐसे डूबे राव राने सबे गये लबकी ।
गौरी गनपति आप औरन को देत ताप,
आप के मकान सब मार गये दबकी ॥
पीरा पयगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देत,
सिद्ध की सिधाई गई रही बात रब की ।
कासि हु ते कला जाती मथुरा मसीत होती,
सिवा जी न होते तो सुनति होती सब की॥
(भूषण)

(च) शुद्ध शुद्ध बोलै भेद वेदन को खोलै भले,
ब्रह्म सो मिलावै अन्त मुक्ति देनहारी है।
जानै ना असत्य नेक सत्यही बखानै सदा,
आरज के धर्म की करत रखवारी है ।
प्रेम परिवार सों बढ़ावै शिवसम्पति जू,
सब ही सों मोद भरी बोलै बैन प्यारी है।
भारत-निवासी बंधु ताहि क्यों बिसारी हाय,
ऐसो गुनवारी भाषा नागरी हमारी है॥
(शिवसम्पत्ति)

२. रूपघनाक्षरी (३२ वर्ण, अन्त में ग ल)

रूपघनाक्षरी के प्रत्येक पाद में ३२ वर्ण होते हैं। १६, १६

वर्णों पर विराम होता है। अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। शेष वर्णों में गुरु लघु का कोई नियम नहीं। जैसे—

(क) उमड़ घुमड़ घन आवत अटान ओट,
छन घन जोति छटा छटकि छटकि जात।
सोर करैं चातक चकोर पिक चहूँ ओर,
मोर ग्रीव मोरि मोरि मटकि मटकि जात ॥
सावन लौं आवन सुनो है घनश्याम जू को,
आँगन लौं आय पाय पटकि पटकि जात।
हिये विरहानल की तपनि अपार उर,
हार गज मोतिन के चटकि चटकि जात ॥
(कविता कौमुदी)

(ख) कंटकित केतकी गुलाब करि डारे, कारे,
काकन से कोकिल, कलंकित कलानिधान।
दरसै दरिद्रन के दस-पांच पूत प्राय,
एकहि लौं तरसै धनेस मनुजेस जान ॥
ब्रज में करीर, नीर नीरधि के खारे किए,
दाता धन-हीन दीन, कृपन समृद्धिमान।
नाम अज ही तें परै जान, पै अठान चार-
आनन के कैसे एक आनन करै बखान ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(ग) मंगल करन हारे कोमल चरण चारु,
मंगल से मान मही गोद में धरत जात।

पंकज की पाँखुरी से आँगुरी अंगूठन की,
जाया पंचबाण जी की भाँवरी भरत जात ॥
'शंकर' निरख नख नग के नखत श्रेणी,
अम्बर सों छूट छूट पायन परत जात ॥
चाँदनी में चाँदनी के फूलन की चाँदनी पै,
हौले हौले हंसन की हाँसी सी करत जात ॥
(नाथूराम शंकर)

३. जलहरण (३२ वर्ण)

जलहरण के प्रत्येक पाद में ३२ वर्ण होते हैं। १६, १६ वर्णों पर विराम होता है। पादान्त में दो लघु होते हैं। कहीं कहीं पादान्त का वर्ण गुरु भी होता है पर वहाँ उसका उच्चारण लघु के समान ही होता है। शेष वर्णों में लघु गुरु का कोई बन्धन नहीं। जैसे—

(क) कब से तुम्हारी राह दिन रात देखता हूँ,
दयाघन ! दया कर दया दिखलाओ तुम।
यह तो बतलाओ तुम छिपे किस लोक में हो,
आओ शीघ्र मुझे मत और तरसाओ तुम ॥
राधा के सहित करो मेरे उर में निवास,
और सब मेरी भव-बाधा को मिटाओ तुम।
जाऊँ मैं कहाँ गोपाल शरण तुम्हारी छोड़,
नाम के ही नाते अब मुझे अपनाओ तुम ॥

(ख) जान गया जान गया कौन हो सुजान तुम,
तुम्हें पहचान गया मत बतलाओ तुम।
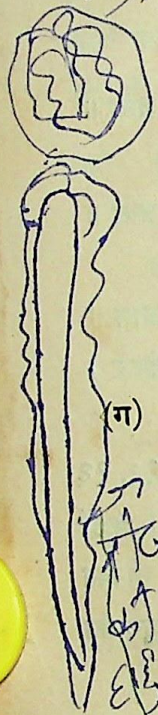
खोल दो नयन मत मुझे तरसाओ और,
सुख सरसाओ प्रेम-सुधा बरसाओ तुम ॥
खूब छिटकाओ निज छवि की निराली छटा,
भाँति भाँति के अनूप रूप दिखलाओ तुम।
छिप कर जाने अब पाओगे कदापि नहीं,
जाओ या न जाओ फिर आओ या न आओ तुम ॥
(गोपाल शरणसिंह)

(ग) पद्धति न छोड़ेंगे प्रतापी धर्म-धारियों की,
पापी वक्रगामियों की गैल न गहैंगे हम ।
सेवक बनेंगे ब्रह्मचारी, साधु, पंडितों के,
मानी मूढ़ मंडल के साथी न रहैंगे हम ॥
पावें शुद्ध सम्पदा तो भोगें सुख-भोग सदा,
आपदा पड़े तो सारे संकट सहैंगे हम ।
जीवन सुधारें एक तेरी भक्ति-भावना से,
दीनानाथ शंकर-सँगाती से कहैंगे हम ॥
(नाथूराम शंकर)

(घ) दीन दुखियों को देख आतुर अधीर अति,
करुणा के साथ उन के भी कभी रोते चलो[1] ।
थके श्रमी जीवों के पसीने-भरे सीने लग,
जीने को सफल करने के लिए सोते चलो ।
भूले भोले बालकों के इस विश्व खेल में भी,
लीला ही से हार और श्रम सब खोते चलो ।

---

१ पादान्त के गुरु वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

सुखी कर विश्व, भरे-स्मित सुषमा से मुख,
सेवा सब की हो, तो प्रसन्न तुम होते चलो ॥
(जय शङ्कर प्रसाद)

४. देवघनाक्षरी (३३ वर्ण)

देव घनाक्षरी के प्रत्येक पाद में ३३ वर्ण होते हैं। यति ८, ८, ८, ६ वर्णों पर होती है। जैसे—

झिल्ली झनकारैं पिक,-चातक पुकारैं, बन,
मोरनि गुहारैं उठैं, जुगनू चमकि चमकि।
घोर घनघोर भारें, धुखा धुरारे धाम,
धूमनि मचावैं नाचैं, दामिनी दमकि दमकि॥
झूकनि बयार बहै, लूकनि लगावे अङ्ग,
हूकनि भभूकनि की, उर में खमकि खमकि।
कैसे करि राखौं प्राण, प्यारे 'जसवंत' विन,
नान्ही नान्ही बूँद झरै, मेघवा झमकि झमकि॥
(जसवंतसिंह)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. वर्णार्धि-सम वृत्त किसे कहते हैं? एक उदाहरण देकर आशय को विशद करो।
२. वर्ण-सम और वर्णार्धिसम वृत्तों में क्या अन्तर है? दोनों का एक एक उदाहरण देकर भेद स्पष्ट करो।
३. कि.ी एक वर्णार्धिसम वृत्त का लक्षण और उदाहरण दो
४. वर्ण-विषम वृत्त किसे कहते हैं? उत्तर को उदाहरणों

द्वारा स्पष्ट करो।

५. वर्ण-सम, वर्णार्धसम और वर्ण-विषम वृत्तों के पारस्परिक भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो।

६. मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है? किसी वर्णात्मक मिलिन्द-पाद का उदाहरण दो।

७. ललित और भुजंग्यात्मक मिलिन्दपाद के लक्षण लिखकर दोनों का एक एक उदाहरण दो।

८. वर्ण-दंडक किन्हें और क्यों कहते है?

९. वर्ण-दंडक मुख्यतया कितने प्रकार के होते हैं और उन का परस्पर क्या अन्तर है?

१०. जब मुक्त दंडकों में वर्ण-क्रम निश्चित नहीं होता तो उन्हें वर्ण-वृत्त क्यों कहा जाता है?

११. साधारण दंडकों में से किसी एक का लक्षण और उदाहरण दो।

१२. मुक्तक दंडकों में से किस का प्रचार सब से अधिक है? उस का लक्षण लिख कर दो उदाहरण दो।

१३. रूप घनाक्षरी और जल-हरण दंडकों के भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो।

१४. घनाक्षरी और देवघनाक्षरी मुक्तकों के पारस्परिक अन्त को स्फुट करो। दोनों का एक एक उदाहरण भी दो।

१५. वर्ण-वृत्तों के मुख्यतया कौन २ से भेद होते हैं? सब का लक्षण और एक एक उदाहरण दो।

दशम अध्याय

उभय-छन्द

पूर्व काल में दो ही प्रकार के (मात्रा और वर्ण) छन्दों का चलन था। परन्तु समय सदा एक-सा नहीं रहता। उसके परिवर्तन के साथ ही साथ लोगों के खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, वेष-भूषा, आचार-व्यवहार और भाव-विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं। मानव-स्वभाव की परिवर्तन-प्रियता का ही यह परिणाम है कि कुछ कवि जन पुरानी पद्धति से पृथक् हो कर नये नये पंथों पर पग धरने लगे हैं। उभय और मुक्त छन्दों की सृष्टि का कारण यही है।

जिस पद्य में मात्रिक छन्द और वर्ण-वृत्त दोनों के लक्षण समन्वित होते हैं, उसे उभय छन्द कहते है। जैसे—

(क) हिंसक मद्यप आमिष-भोजी, कपटो वंचक चोर।
ज्वारी पिशुन चबोर कृतघ्नी, जार हठी कुल-बोर ॥
असुर आततायो नृप-द्रोही, इन सब को धिक्कार।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार ॥

(ख) जो सब छोड़ सदा फिरते हैं, निर्भय देश-विदेश ।
तर्क-सिद्ध श्रेयस्कर जिन से, मिलते हैं उपदेश ॥
ऐसे अतिथि महापुरुषों का, कर सादर सत्कार ।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥
(नाथूराम शंकर)

उपर्युक्त दोनों पद्य सरसीनामक मात्रिक छन्द में हैं, क्योंकि प्रत्येक पाद में मात्रा-संख्या २७ है, यति १६, ११ पर है, और पादान्त में गुरु लघु हैं। परन्तु इन दोनों में वर्ण-वृत्त के लक्षण भी घटते हैं। क्योंकि प्रत्येक पाद में ११, ८ के विराम से १९ वर्ण हैं। सो दोनों के लक्षणों से युक्त होने के कारण ये उभय छन्द हुए।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि वर्ण-सम वृत्तों में भी वर्ण-संख्या, वर्ण-क्रम और फल-स्वरूप मात्रा-संख्या समान होती है, परन्तु उन्हें उभय छन्द नहीं कहते। उभय छंद तभी होगा जब मात्राएं अपनी संख्या में समान हों और वर्ण अपनी संख्या में, परन्तु वर्ण-क्रम का नियम न हो। एक-दो उदाहरण और देखिए—

(ग) दीपक पै कर प्यार, पतंग प्रताप दिखाते ।
त्याग त्याग तन प्राण, प्रीति-रस-रीति सिखाते ॥
जाना, अविचल-प्रेम, निठुर से जो करते हैं ।
वे उस प्रिय की रुप,-अग्नि में जल मरते हैं ।

(घ) अपनी सन्तति काक, कृपण से पलवाती है ।
पेड़ पेड़ पर बैठ, मुदित मङ्गल गाती है ॥

कोयल की करतूति, चतुर अबला गहती है ।
तनुज धाय को सोंप, आप युवती रहती है ॥
(नाथू राम शङ्कर)

प्रत्येक पाद में ११, १३ मात्राओं पर विश्राम के कारण उक्त दोनों पद्य रोला छन्द में हैं। इस के अतिरिक्त हर एक चरण में ८, ९ के विश्राम से वर्ण-संख्या (१७) भी समान है। सो दोनों के लक्षणों से युक्त होने के कारण ये उभय छन्द हैं।
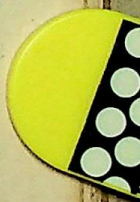
एकादश अध्याय

मुक्त या स्वच्छन्द छन्द

शताब्दियों से कविता मात्रा-संख्या, वर्ण-संख्या, वर्ण-क्रम, यति, तुक आदि की शृङ्खलाओं से बँधी चली आ रही थी। वर्त्तमान के कई विद्वानों का विचार है कि ये बंधन कवि-कल्पना की स्वच्छन्द उड़ान में बेतरह बाधक बनते हैं। इन बंधनों के कारण वह अपने भावों को उस स्वाभाविक और प्रभावशाली भाषा में प्रकट नहीं कर सकता जिसमें वे अनायास निकलना चाहते हैं। इस लिए कवियों के लिए उक्त बंधन नहीं होने चाहिएं। इसी मत के अनुसार अनेक देशी तथा विदेशी कवि कविता कर रहे हैं। उन की कविता में कोई पंक्ति १० अक्षरों की है तो कोई २० की, कोई पाद ६ मात्राओं का है तो कोई २६ का। ऐसे ही तुक और यति के बंधनों को भी तोड़-मरोड़ कर फैंक दिया गया है। सो मुक्त या स्वच्छन्द छन्द उसे कह सकते हैं जो मात्रा और वर्ण के पुराने बंधनों से मुक्त हो और जिस में केवल भावों और लय का प्राधान्य हो। जैसे—

भिक्षुक

वह आता—

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिल कर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को-भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता—
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता॥

(सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला')

वृद्ध

वृद्ध, अब आज तुम्हें आती याद बातें वे,
मंजु दिन रातें वे ?
कितने दिनों से तुम्हें छोड़कर
वे दिन गये हैं मुँह मोड़ कर ?
आज उस मधु की मधुरता
पुण्य की प्रचुरता
स्वप्न में भी दीखती तुम्हें क्या हाय !
अब तो घनान्धकार
दुर्निवार
छा रहा तुम्हारी इन आँखों में अभेद्यकाय॥

(सियाराम शरण गुप्त)

भारत की विधवा

वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा सी,
वह दीप-शिखा सी शान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर काल तांडव की स्मृति-रेखा सी,
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन—
दलित भारत की ही विधवा है।

षड् ऋतुओं का शृंगार,
कुसुमित कानन में नीरव पद-संचार,
अमर कल्पना में स्वच्छन्द विहार—
व्यथा की भूली हुई कथा है
उस का एक स्वप्न अथवा है।

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

उपर्युक्त तीनों कविताओं में पुराने मात्रिक अथवा वर्ण-छन्दों की खोज करना समय खोना है। परन्तु ऊँचे स्वर से पढ़ने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन में लय का अभाव नहीं है। ऐसे ही अथ विचारने पर सिद्ध होता है कि ये सभी कवितांश उत्कट भावां से छलछला रहे हैं। सो हम निःशंक कह सकते हैं कि ये रचनाएं स्वच्छन्द छन्दों में की गई हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. उभय-छन्द किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर आशय को स्पष्ट करो।

२. मात्रिक छन्दों और वर्ण-वृत्तों से उभय छन्द में क्या विशेषता होती है ? तीनों का एक एक उदाहरण देकर उत्तर की पुष्टि करो।

३. क्या उभय छन्द में वर्ण-वृत्तके लक्षण पूर्णतया घटते हैं ? यदि नहीं तो उसे उभय छन्द कैसे कह सकते हैं ?

४. वर्ण-सम-वृत्तों में मात्रा-संख्या और वर्ण-संख्या समान होती हैं। फिर उन्हें उभय-छन्दों में क्यों नहीं गिनते ?

५. मुक्त या स्वच्छंद छन्द का लक्षण लिखो और उसका एक उदाहरण दो।

६. जब मुक्त छन्द में मात्रा और वर्ण का कोई बंधन नहीं होता तो फिर उसे छन्द क्यों कहते हैं ?

७. छन्दों के मुख्य चार भेद कौन से हैं ? उन में से आप को कौन सा भेद सब से प्यारा लगता है और क्यों ? जो प्रकार आप को प्रिय-तम लगता हो, उसके तीन उदाहरण दो।

साधारण अभ्यास

(क) १. "हर एक व्यक्ति छन्दों से प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार करता है"—इस उक्ति पर अपने विचार विस्तार-पूर्वक प्रकट करो।

२. छन्दों के प्रारम्भ और विकास के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करो।

३. छन्द-शास्त्र किसे कहते हैं? संस्कृत और हिन्दी के प्रमुख छन्द-ग्रन्थों का परिचय दो।

४. छन्द कितने हैं? क्या उन की संख्या नियत की जा सकती है? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

५. छन्द-शास्त्र में अक्षर वा वर्ण, गुरु, लघु, मात्रा, गति, यति, चरण, दल और छन्द, किहें कहते हैं? अपने भाव को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक का उदाहरण भी दो।

६. छन्द-शास्त्र में गण किसे कहते हैं। वे कितने प्रकार के होते हैं? उन का महत्त्व क्या है?

७. वर्ण-वृत्तों में कौन से गणों से काम पड़ता है? उन के नाम लक्षण, उदाहरण, देवता तथा शुभाशुभ फल लिखो।

८. कौन कौन से गण और अक्षर दूषित माने गये हैं? यदि वे छन्दों के आरंभ में आ जायें तो उन का दोष कैसे निवारण किया जाता है?

९. तुक कितने प्रकार की होती है? प्रत्येक प्रकार की तुक का एक एक उदाहरण दो।

१०. क्या छन्दों के लिए तुक अनिवार्य है ? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

११. ऐसा छन्दो-वृक्ष बनाओ जिस से छन्दों के मुख्य मुख्य भेद और उपभेद स्पष्ट प्रकट हो जायँ।

१२. छन्दों के मुख्य मुख्य भेदों और उपभेदों के संक्षिप्त लक्षण लिख कर उन का एक एक उदाहरण दो।

(ख) निम्नलिखित पद्य, पद्यार्ध अथवा पाद किन छन्दों के हैं ? उत्तर युक्ति-युक्त होने चाहिएं।

१. मार कै नृसिंह ताहि। पालि कै सुभक्त चाहि।

२. राम संग शुक एक प्रवीनो। सीय दासि गुण वर्णन कीनो॥
केश पाश शुभ श्याम सनेही। दास होत प्रभु जीव किदेही॥

३. प्रेम नहीं तो आदर क्या है ?
प्यास नहीं तो सागर क्या है ?

४. रानि ! री लगत राम को पता।
हाय ना कहहिं नारि आरता॥

५. गाये गाये, एकताई प्रकासै।
एकै एकै सच्चिदानन्द भासै।

६. बड़ाई करो ज्ञान विज्ञान की। महा मोह की मार खाना नहीं॥

७. भाभि भगी रँग डारि कहाँ। पूंछत यों हरि जाइ तहाँ॥

८. धिक ! तथापि हा सामने खड़े ? तुम अलज्ज से क्यों यहाँ अड़े ?

९. धूम्राक्ष आयो जनु दंडधारी। ताको हनूमंत भये प्रहारी॥

१०. धार मनों रसराज विशाला। पंकज-जाल-मई जनु माला॥

११. सनाढ्य-पूजा अघ-ओघ हारी ।
अखंड आखंडल-लोक-धारी ॥

१२. बताइए हे मम मित्र-वर्य ।
क्यों लूं किसी के फिर दान को मैं ॥

१३. दुई का घटा टोप घेरा रहेगा ।
मिटेगा नहीं मेल मेरा रहेगा ॥

१४. कर सुकथन, हृदय हरन ।
सुखद अमृत, सदृश वचन ।

१५. देखि देही सबै कोटिधा के भनो ।
जीव जीवेश के बीच माया मनो ॥

१६. तुझे तर्क ने तोल पाया नहीं ।
किसी युक्ति के हाथ आया नहीं ॥

१७. सारे अकंपादि बलिष्ठ भारे ।
संग्राम में अंगद वीर मारे ॥

१८. कंचन के उपवीत हि साजै ।
ब्राह्मण सो यह खंड विराजै ॥

१९. समय था सुनसान निशीथ का ।
अटल भू-तल में तम राज्य था ॥

२०. यह बात सुनी भृगुनाथ जबै ।
कहि रामहिँ लै घर जाहु अबै ॥

२१. मारग की रज तापित है अति ।
केशव सीतहि शीतल लागति ॥

२२. भ्राता भरत्थादि करैं प्रनाम हैं ।

वाचा किए पूरित सर्व काम हैं ॥

३. सुधारन को जन की अधिकार ।
धर्यो हरि वामन को अवतार ॥

४. वसंतशोभा प्रतिकूल थी बड़ी ।
वियोग-मग्ना व्रजभूमि के लिए ॥

५. मानो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे ।
प्राणों के, तुमहिँ अधार हौ हमारे ॥

६. नित वह कितनों को पंथ में भेजती थीं ।
निज प्रिय सुत आना देखने के लिए ही ॥

२७. त्यों रघुवर पुर आय गये जब ।
नारिऽरु नर प्रमुदे लखि के सब ॥

२८. बन महँ विकट विविध दुख सुनिये ।
गिरि गहवर, मग अगम के गुनिये ॥

२९. तेरी पुनीत रज लेकर के करूँ मैं ।
सानंद अंजित सुरंजित लोचनों में ॥

३०. मध्य क्षुद्र घंटिका किरीट संग शोभनो ।
लच्छ पच्छ सो कलिन्द्र इन्द्र को चढ़्यो मनो ॥

३१. माया प्रपंच तजि के, उर शांति धार ।
काया मनुष्य अपनी, अब तू सुधार ॥

३२. दूत भूत भावना कही कही न जाय बैन ।
कोटिधा विचारियो परै कछू विचार मैं न ॥

३३. सु देशराज लोक आस पास कोटु देखिये ।
रची विचारि चारि पौरि पूरबादि लेखिये ॥

३४. बोले माता, विलोक्यो, फिरत सह चमू,
(बाग में स्रग्धरेज्यों।)
काढ़ी मालारु मारे, विपुल रिपु बली,
अश्व लो जीतिके त्यों॥

३५. मेरे हो तुम बंधु विज्ञ-वर हो, आनंद की मूर्ति हो।
क्यों मैं जा व्रज में सका न अब लों, हो जानते भी इसे॥

३६. दुराचारी दंडी, जटिल जड़ मुंडे मुनि घने।
प्रमादी पाखंडी, अबुध-गण गुंडे गुरु बने॥

३७. रामचंद्र बिदा करो तब वेगि लक्ष्मण वीर को।
त्यों बिभीषण जामवंत हि संग अंगद धीर को॥

३८. कोई आता, नगर मथुरा, ओर से जो दिखाता।
नाना बातें, सदुख उस से, पूछते तो सभी थे॥

३९. अशेष लोकावधि भूमि-चारी।
समूल नाशैं नृप दोषकारी॥

४०. परन्तु है पुस्तक मित्र ऐसा।
होता कभी जो मुझसे न न्यारा॥

४१. निराकार, आकार तेरा नहीं है।
किसी भाँति का मान मेरा नहीं है॥

४२. निपट नीरवता सब ओर थी।
गुण-विहीन हुआ जनु व्योम था।

४३. वन राम शिला दरशी जब हीं।
तिय सुन्दर रूप भई तब हीं॥

४४. रावण क्यों न तजो तब हीं इन।

सीय हरी जबहीं वह निर्घृन ॥

४५. सदा तुम लक्ष्मण उत्तम गाथ ।
करो जनि आपनि मातु अनाथ ॥

४६. वसंत को पा यह शान्त वाटिका ।
स्वभावतः कान्त-नितान्त थी हुई ॥

४७. उस पर कुछ ऐसी, दृष्टि तो डालती थीं ।
लख कर जिस को था, भग्न होता कलेजा ॥

४८ तू भी मिला न मुझ को अब लौं कहीं था ।
कैसे प्रमोद अ-प्रमोदित प्राण पावे ?

४९. यत्र तत्र दास ईश व्योम तें विलोकहीं ।
वानरालि रीछराजि दृष्टि सृष्टि रोकहीं ॥

५०. शूर के उदोत होत बंधु आइयो सुजान ।
रामचंद्र देखियो प्रभात-चंद्र के समान ॥

५१. यों ही बात अनेक श्याम-वपु ने, प्यारे सखा से कहीं ।
मर्यादा व्यवहार आदि ब्रज का, पूरा बताया उन्हें ॥

५२. मलों के धोने को, सुकृत-घन पुण्योदक धरे ।
हमारे रोने को, सुन कर कृपा शङ्कर करे ॥

५३. जो आते हों, कुँवर उड़ के, काक तो बैठ जा तू ।
मैं खाने को, प्रतिदिन तुझे, दूध औ भात दूँगी ॥

(ग) निम्नलिखित चरण किन किन सवैयों के हैं ? उत्तर हेतु-युक्त होने चाहिएं। अपनी ओर से भी उन उन सवैयों का एक एक उदाहरण दीजिए।

१. सब सों ललुआ, मिलि कै रहिये
मम जीवन मूरि सुनो मनमोहन।

२. बान कह्यो तब रावण सों
अब वेगि चढ़ाउ शरासन को।

३. पिक चातक कीर चकोर शिखी
सब का अब तो अपमान करेंगे।

४. सास मरे ससुरा पजरे
इस बाखर में पल को न रहूँगी।

५. भीषन भोरहि ते बनि पूषन
है जन के तन को बहु तावत।

६. चेत करो, धिक जीवन है यदि
नाम मिला जग में कुल बोर।

७. तीन हुँ लोक कि ईश गिरीश सु
योगि भये घर की गति देखि कै।

८. लहैं भलि वाम अरू धन धाम
तु काह भयो बिनु रामहिँ जाने।

९. परिवार घना धन पास नहीं
भुज भग्न दरिद्र-भरा घर है।

(घ) निम्न-लिखित पद्य वा पद्यांश किन छन्दों में है ? उत्तर युक्ति-युक्त होने चाहिएं।

१. सखि, देख, दिगन्त है खुला।
तम है, किन्तु प्रकाश से धुला॥

यह तारक जो खचे रचे ।
निशि में वासर बीज से बचे ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

२. सकल असत कामना विहाई ।
हरि नित सेवहु मित्त चित्त लाही ॥

३. जन्म अनेकन के अघ जारौ ।
हरि हरि गा निज जन्म सुधारौ ॥

४. जिसके जन-रक्षक शस्त्र रहे ।
उसके कर हाय निरस्त्र रहे ॥
रण-जीत शरासन टूट गया ।
इषु-वर्ग यशोधर छूट गया ॥
रिपु-रक्त-निमग्न निषंग हुआ ।
बस भारत का रँग भंग हुआ ॥

५. रचो ढोंग पाखंड छूटे नहीं ।
छुआ छूत का तार टूटे नहीं ॥
मिले फूट के बोल बोला करो ।
न अंधेर की पोल खोला करो ॥
भरी भेद से जाल की कुंडली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

६. राज्य लै कहा करै सुरेश औ नरेश है
न चाहिए कहूं सुदुःख होत लोक लाज माह ॥

७. भयो न होत होयगो न ज्यों अमान इन्द्रजीत
रामचन्द्र बन्धु सों कराल युद्ध मंडियं ॥

८. क्रोध से विषाद से दया या पूर्व प्रीति ही से,
किसी भी बहाने से तो याद किया कीजिए ।।

९. बेर बेर बेर लै सराहैं बेर बेर बहु
रसिक बिहारी देत बँधु कहँ फेर फेर ।

१०. खोल दो नयन मत मुझे तरसाओ और
सुख सरसाओ प्रेम-सुधा बरसाओ तुम ।

११. झिल्ली झनकारैं पिक, चातक पुकारैं बन,
मोरनि गुहारैं उठैं, जुगुनू चमकि चमकि ।।

१२. जन दीन दुखो कर्ता । हरता भय भीर को ।।
लोक तीनिहुँ में फैल्यो । श्लोक श्री रघुवीर को ।।

१३. जब दिनेश की ओर, झोर झरने झड़ते हैं ।
इंद्रचाप तब अन्य, घने घन पै पड़ते हैं ।।
नील अरुण के साथ, पीत छबि दिखलाते हैं ।
हम को मिश्रित रंग, बनाना सिखलाते हैं ।।

१४. पाल कुटुम्ब सदुद्यम-द्वारा भोग सदा सुख-भोग ।
करना सिद्ध ज्ञान-गौरव से, निश्रेयस-प्रद योग ।
जप तप यज्ञ दान देवेंगे, जीवन के फल चार ।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार ।।

(नाथूराम शंकर)

१५. जागो फिर एक बार !
उगे अरुणाचल में रवि,
आई भारती रति कवि कंठ में,

पल पल में परिवर्तित होते रहे प्रकृति पट,
गया दिन, आई रात,
मुँदी रात, खुला दिन,
ऐसे ही संसार के
बीते दिन पक्ष-मास,
वर्ष कितने ही हजार।

(सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला')